राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक – पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[सम्मान्य संचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर]

★

– ग्रन्थाङ्क ८ –

महाकवि उदयराज विरचितं

राजविनोदमहाकाव्यम्

— प्रकाशक —

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

(Rajasthan Oriental Research Institute)

जयपुर (राजस्थान)

वि० सं० २०१३]		[मू

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रकाशित ग्रन्थ

१ प्रमाणमञ्जरी – तार्किकचूडामणि सर्वदेव। २ यन्त्रराजरचना – महाराजाधिराज जयसिंहदेव कारिता। ३ कान्हडदे प्रबन्ध – महाकवि पद्मनाभ। ४ क्यामखांरासा – नवाब अलफखां (कविवर जान)। ५ लावारासा – चारण कविया गोपालदान। ६ महर्षिकुलवैभवम् – विद्यावाचस्पति स्व. श्री मधुसूदनजी ओझा। ७ वृत्तिदीपिका – मौनि कृष्णभट्ट। ८ राजविनोद काव्य – कवि उदयराज।

प्रेस में

त्रिपुराभारतीलघुस्तव – सिद्धसारस्वत लघुपण्डित। २ बालशिक्षा व्याकरण – ठक्कुर संग्रामसिंह। ३ कल्याणामृतप्रपा – महाकवि ठक्कुर सोमेश्वरदेव। ४ पदार्थरत्नमञ्जूषा – पं. कृष्णमिश्र। ५ शकुनप्रदीप – पं. लावण्यशर्मा। ६ उक्तिरत्नाकर – पं. साधुसुन्दर गणी। ७ प्राकृतानन्द – पं. रघुनाथ कवि। ८ ईश्वरविलासकाव्य – पं. कृष्णभट्ट। ९ चक्रपाणिविजयकाव्य – पं. लक्ष्मीधर भट्ट। १० काव्यप्रकाश – भट्ट सोमेश्वर। ११ तर्कसंग्रहफक्किका – क्षमाकल्याण गणी। १२ कारकसंबन्धोद्योत – पं. रभसनन्दी। १३ शृंगारहारावलि – हर्षकवि। १४ कृष्णगीतिकाव्यानि – कवि सोमनाथ। १५ नृत्यसंग्रह – अज्ञातकर्तृक। १६ नृत्यरत्न कोश – महाराजाधिराज कुंभकर्णदेव। १७ नन्दोपाख्यान – अज्ञातकर्तृक। १८ चान्द्रव्याकरण – चन्द्रगोमी। १९ शब्दरत्नप्रदीप – अज्ञातकर्तृक। २० रत्नकोश – अज्ञातकर्तृक। २१ कविकौस्तुभ – पं. रघुनाथ मनोहर। २२ एकाक्षरकोशसंग्रह – विविधकविकर्तृक। २३ शतकत्रयम् – भर्तृहरि, धनसारकृत व्याख्यायुक्त। २४ वसन्तविलास – अज्ञातकर्तृक। २५ दुर्गापुष्पाञ्जलि – म. म. पं. दुर्गाप्रसादजी द्विवेदी। २६ दशकण्ठवधम् – म. म. पं. दुर्गाप्रसादजी द्विवेदी। २७ गोरा बादल पदमिणी चऊपई – कवि हेमरतन। २८ बांकीदासरी ख्यात – महाकवि बांकीदास। २९ मुंहता नैणसीरी ख्यात – मुंहता नैणसी। इत्यादि।

प्राप्तिस्थान – सञ्चालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर।

महाकवि उदयराज विरचितं

राजविनोदमहाकाव्यम्

★

सम्पादक

श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम० ए०

—: प्रकाशनकर्त्ता :—

श्रीराजस्थान-राज्याज्ञानुसार

संचालक—राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

(Rajasthan Oriental Research Institute)

जयपुर (राजस्थान)

[विक्रमाब्द २०१३] प्रथमावृत्ति ★ मूल्य [क्रिस्ताब्द १९५६

२) रु. २५ न पै॰

प्रकाशकीय वक्तव्य

प्रस्तुत "राजविनोद" काव्य की रचना कवि उदयराज द्वारा अहमदाबाद के सुप्रसिद्ध सुलतान महमूद बेगड़ा के यशोवर्णन के रूप में हुई है। महमूद बेगड़ा गुजरात का एक महाप्रतापी, शूरवीर और कर्त्तव्यपरायण नरेश हो गया है, जिसका वर्णन सम्बन्धित इतिहासों में विस्तार से मिलता है। उदयराज महमूद बेगड़ा का आश्रित एक संस्कृत कवि था। तत्प्रणीत "राजविनोद" द्वारा मध्यकालीन भारतीय इतिहास के कई नवीन तथ्यों पर प्रकाश पड़ता है तथा राजस्थान की तात्कालिक स्थिति आदि के विषय में भी कितनी ही सूचनाएं प्राप्त होती हैं। सर्व प्रथम डाक्टर बूलर ने सन् १८७५ ई० में बम्बई सरकार के लिये "राजविनोद" की प्रति प्राप्त कर इसका महत्त्व प्रदर्शित किया था। तब से इसके प्रकाशन की आवश्यकता बनी हुई थी।

भाण्डारकर रिसर्च इंस्टीट्यूट, पूना में हमारा जाना हुआ तो वहां पर सुरक्षित बम्बई सरकार के ग्रन्थ-संग्रह से "राजविनोद" की प्रति प्रकाशन के लिये हम अपने साथ ले आए। राजस्थान सरकार द्वारा जयपुर में "राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर" की स्थापना होने पर श्री गोपालनारायण जी बहुरा हमारे सम्पर्क में आये और हमने इनकी साहित्यिक रुचि देख कर "राजविनोद" के सम्पादन का कार्य इनको सौंप दिया। इन्होंने प्रास्ताविक परिचय के साथ-साथ ऐतिहासिक ग्रन्थों के आधार पर महमूद बेगड़ा का वंश-परिचय तथा डा० एच० डी० सांकलिया के दोहाद के शिलालेख का अनुवाद और अनुक्रमणिका आदि से इसे समन्वित करके पुस्तक की उपयोगिता को संवर्धित कर दिया है।

"राजस्थान पुरातन ग्रन्थ माला" के ८ वें पुष्प के रूप में प्रस्तुत रचना को प्रकाशित करते हुए हमें परम प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। इति।

मुनि जिनविजय

सम्मान्य संचालक

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मंदिर,

जयपुर

जयपुर,

ज्येष्ठ कृष्णा ७

वि० सं० २०१२

प्रास्ताविक परिचय

डाक्टर बूलर ने सन १८७४ ई० में बम्बई सरकार के लिए 'राजविनोद' नामक काव्य की एक हस्तलिखित प्रति* प्राप्त की। इस काव्य में अहमदाबाद के सुल्तान महमूद बेगड़ा के जीवन चरित्र का वर्णन किया गया है।† यह हस्तलिखित काव्य अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है। डाक्टर बूलर ने [illegible] (१८७४-७५) में इस काव्य का एक [illegible] इस प्रकार किया है — उदयराज [illegible] राजविनोद अथवा [illegible] महमूद सुरत्राणचरित जिसमें अहमदाबाद के सुल्तान महमूद बेगड़ा का जीवन चरित्र वर्णित है एक विशुद्ध ऐतिहासिक [illegible] है। [illegible] के पुत्र और रामदास के शिष्य उदयराज ने महमूद की प्रशंसा करते हुए उसको [illegible] और हिन्दू धर्म

* ग्रंथ सं० १८। १८७४-७५ ई० (भा० प्रा० वि० इं०)

† बेगड़ा का जन्म १४४५ ई० में हुआ था। उसका नाम फतहखाँ था। वह १४५८ से १५११ ई० तक ५३ वर्ष गुजरात का सुलतान रहा। उसके समय की कुछ मुख्य मुख्य घटनाएं इस प्रकार हैं —

१४६७-७० ई० जूनागढ़ का युद्ध।

१४७० ई० कच्छ और सिन्ध पर आक्रमण।

१४७३ ई० द्वारका पर अधिकार, मन्दिर का तोड़ना।

१४६४ ई० [illegible] के किले और दमन के [illegible] पर अधिकार करने के लिए सेना भेजना। महमूद के सेनापति [illegible] द्वारा [illegible] का वध (१४६४ अथवा १४६५ ई०)।

१४७६ ई० [illegible] पर महमूदाबाद का बसाना।

[illegible] विजय।

१४८३-८४ ई० चांपानेर की गढ़ी [illegible] का [illegible] महीने तक घेरा।

१४८४ ई० (नवम्बर) चांपानेर पर आक्रमण और विजय।

१४९१-९४ ई० [illegible] द्वारा गुजरात के समुद्री किनारे पर हमला। [illegible]

१५०८ ई० [illegible] महमूद द्वारा [illegible]

१५०८-९ ई० चौल और दीव पर पुर्तगीजों से झगड़ा।

१५११ ई० (२३ नवम्बर) महमूद की ६७ वर्ष की अवस्था में मृत्यु। उसकी मृत्यु के समय [illegible] (पृ० २०३)।

(कमिसरियट—History of Gujarat Vol. I (1938) P. 183)

का रक्षक बतलाया है, मानो वह कोई कट्टर हिन्दू राजा हो। कवि ने क्षत्रिय राजा के समान वर्णन करते हुए लिखा है कि वह राजन्यचूडामणि है, श्री और सरस्वती दोनों उसकी सेवा करती हैं, दानवीरता में वह कर्ण से भी बढ़ कर है और उसके पूर्वज मुजफ्फरशाह ने श्रीकृष्ण की कलिकाल के विरुद्ध सहायता की थी। यह चरित्र सात सर्गों में वर्णित है। पहले सर्ग में २९ श्लोक हैं और इसमें सुरेन्द्र-सरस्वती-सम्वाद रूप से काव्य की भूमिका बाँधते हुए यह वर्णन किया है कि ब्रह्मा ने इन्द्र को सरस्वती की खोज करने के लिये भेजा। इन्द्र ने उसे महमूदशाह के सभामण्डप में पाया। सरस्वती ने अपने वहाँ रहने का कारण बताते हुए महमूद का कीर्तिगान किया। दूसरे सर्ग का नाम 'वंशानुकीर्तन' है। इसमें ३१ श्लोक हैं और महमूदशाह की वंशपरम्परा का वर्णन है। इसमें दिया हुआ वंशानुक्रम इतिहास के अनुसार सही ज्ञात होता है। "सभा समागम' नामक तीसरे सर्ग में ३२ श्लोकों में महमूद के सभा प्रवेश का वर्णन है। दरबार में कौन-कौन से राजा और सभ्य उपस्थित होते थे, इसका वर्णन सर्वावसर नामक चतुर्थ सर्ग में ३३ श्लोकों में किया गया है। पांचवें सर्ग में सङ्गीतरङ्गप्रसङ्ग का ३५ श्लोकों में वर्णन है और छठे सर्ग में विजययात्रोत्सव वर्णन के ३६ श्लोक हैं। सातवें सर्ग का नाम 'विजय लक्ष्मीलाभ' है और इसमें ३७ श्लोकों में महमूद के सामरिक पराक्रम का वर्णन है। पातशाह की उदारता के अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन से ज्ञात होता है कि कवि को उनके दरबार से पर्याप्त दक्षिणा मिली होगी अथवा मिलने की आशा रही होगी।"

अहमदाबाद के प्रसिद्ध सुलतान महमूद बेगड़ा (१४५८ ई० १५११ ई०) के दरबारी कवि उदयराज विरचित ऐतिहासिक काव्य की इस दुर्लभ प्रति* पर यह टिप्पणी पर्याप्त नहीं है। सामान्यतः गुजरात के इतिहास और विशेषतः गुजरात के सुलतानों के इतिहास में रुचि रखने वाले एवं अन्य साहित्यिक अभिरुचि वाले विद्वानों के परिचय के लिए यह दुष्प्राप्य ग्रन्थ प्रकाशित किया जा रहा है। इसकी प्रति† भाण्डारकर ओरियण्टल रिसर्च इंस्टीट्यूट पूना से प्राप्त की गई है और इसी संस्थान के सहायक श्री पी० के० गोडे के मन्तव्यानुसार इस काव्य को आवश्यक टिप्पणियों सहित प्रस्तुत किया गया है।

राजविनोद के प्रत्येक सर्ग के अन्त में निम्नलिखित पद्य दिया हुआ है जिसमें सुलतान महमूद के वंशक्रम का वर्णन है.—

श्रीमान् साहिमुदाफरः समजनि श्रीगूर्जरक्ष्मापति—
स्तस्मात्साहिमहम्मदस्समभवत्साहिस्ततोऽहम्मदः ।
जातः साहिमहम्मदोऽस्य तनुजो गायासदीनाख्यया
स्तस्य श्रीमहमूदसाहिनृपतिर्जीयात्सदीयात्मजः ॥

एपिग्राफिआ इंडिका जि० २४ भाग ५, जनवरी १९३८ पृ० २१२ पर डाक्टर एच. डी.

* आफ्रेक्ट ने 'राजविनोद' की भाण्डारकर अनुसन्धानशाला प्रति के अतिरिक्त और किसी प्रति का उल्लेख नहीं किया है। (C C I. 502) कृष्णमाचारियर ने भी History of Classical Sanskrit Literature. Madras 1937 P. 271, 433 में इसी एक प्रति का उल्लेख किया है।

† गवर्नमेण्ट ओरियण्टल लाइब्रेरी, भा ओ रि इ पूना, सं० १८। १८७४-७५।

गौरीशंकर हीराचंद ओझा द्वारा सम्पादित [illegible] प्रकाशित हुआ है। महमूद खल्जी का [illegible] विक्रम संवत् १५४५ [illegible] संवत् १५६० (१५०३ ई०) का है। [illegible] और ऊपर दिये हुए [illegible] क्रम को इस प्रकार मिलाया जा सकता है —

मालवा के सुल्तान (१४३६—१५११ ई०)	दानपत्र का विवरण (१४ - ई०)
१—शाहि महमूद (१४३६-१४६९ ई०)	१—शाहि महमूद
२—शाहि महम्मद (१) का पुत्र (गयास शाह) ।	२—महम्मद (१) का पुत्र (गयास) ।
३—शाहि [illegible] (१४६९-१५०० ई०) इसके बाद (नस) ।	३—महम्मद (इसका बेटा) [illegible] अनुज
४—शाहि महम्मद (३) का पुत्र (नासिरशाह) (१५०० १५११ ई० ।	४—शाह महम्मद (३) का पुत्र (नासिर शाह) ।
५—महमूदशाहि (४) का पुत्र नासिरुद्दीन (१५११ १५३१ ई०) ।	५—शाह महमूद [illegible]

इन वंशावलियों से [illegible] कि [illegible] मिलता है [illegible] महमूद (खल्जी) को [illegible] महम्मद का पुत्र लिखा है [illegible] और [illegible] के [illegible] में उसका नाम महमूद का [illegible] लिखा है। [illegible] के मुसलमान इतिहासकारों के आधार पर इन सुल्तानों का वंशानुक्रम* इस प्रकार दिया है—(१) महमूदशाह (महमूद १) २—गयासशाह (महमूद) (३) उसका पुत्र मुहम्मदशाह (मुहम्मद) (४) उसका पुत्र नासिरुद्दीन (नासिरुद्दीन शाह) (५) [illegible] और (६) [illegible] मुहम्मदशाह का [illegible] पुत्र।

संवत् १५८७ में पंडित [illegible] नामक जैन विद्वान ने [illegible] प्रबन्ध नामक एक ऐतिहासिक प्रबन्ध की रचना की है जिसमें [illegible] संवत् १५०१ में [illegible] द्वारा [illegible] गया है। संवत् १५८७ में [illegible] आदि के [illegible] में [illegible] के मुख्य मंदिर का जीर्णोद्धार कराया और उसकी प्रतिष्ठा में [illegible] किया। इस समय [illegible] गुजरात के [illegible] का राज्य था। इसी [illegible] की [illegible] जीर्णोद्धार [illegible] था। इसलिए इस ऐतिहासिक प्रबन्ध में [illegible] में [illegible] दिया गया है। [illegible] के [illegible] महमूद खल्जी का [illegible] था। इसलिए [illegible] ऐतिहासिक है। इस ऐतिहासिक प्रबन्ध में [illegible] के वंशानुक्रम के विषय में निम्नलिखित उल्लेख मिलता है —

* ऐतिहासिक [illegible] १९१८ पृ० १९६।

पीरोजशाहेः समयेऽथ जज्ञे श्रीगूर्जरत्रा भुवि पादशाहिः ।
मुज्जफुराह्वः(१) खगुणाब्धिचन्द्रमितेषु (१४३०) वर्षेषु च विक्रमार्कात् ॥१४॥

अहिमदशाहिर्जज्ञे(२) तत आशेष्वब्धिचन्द्रमितवर्षे (१४५४)
दिग्रसवेदेन्द्वब्दे (१४६८) योऽस्थापयदहिमदावादम् ॥१५॥

महिमुन्द(३)कुतुबदीनौ(४) शाहिर्महिमुंद(५)वेगडस्तदनु ।
यो जीर्णदुर्गचम्पकदुर्गौ जग्राह युद्धेन ॥१६॥

उल्लास २; पृ० १३ ।

इतिहास के विशेषज्ञ इन वंशावलियों की छानबीन करके इन पर विशेष प्रकाश डालेंगे।

राजविनोद महाकाव्य का रचयिता उदयराज अवश्य ही महमूद का दरबारी कवि था क्योंकि उसने इस काव्य में उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। यह विचारणीय है कि धार्मिक कट्टरता के लिये प्रसिद्ध महमूद ने* उदयराज जैसे हिन्दू पण्डित को अपने आश्रय में कैसे रखा। यों तो इस काव्य के रचनाकाल का निर्धारण करने के लिये यह कहा जा सकता है कि महमूद के शासन काल १४५८ ई० से १५११ ई० के बीच में ही यह लिखा गया था परन्तु अवश्य ही यह उस समय रचा गया होगा जब महमूद का भाग्य उदय के शिखर पर पहुँच चुका था। प्रस्तुत काव्य के चतुर्थ सर्ग में उन सभी राजाओं का वर्णन आया है जिनको महमूद ने अपने आधीन कर लिया था। उसके अतिरिक्त अलग अलग राजाओं के पद और सम्मान आदि का भी इस सर्ग के पद्यों से पता चलता है.—

"राज्ञोऽस्य वेत्रधरदत्तपथान्नानादेशाधिपान् सदसि कृतप्रवेशान्।"

१, स० ४

इस प्रसङ्ग में मालवराज और दक्षिणनृप का वर्णन इस प्रकार है:—

'वेषं विशेषरुचिरं दधतादरेण हस्तारविन्दसमुदञ्चितचामरेण ।
राजा विराजितवरो परिहृष्यतात्मा नोऽसौ दक्षिणनृपेन विचक्षणेन ॥१०॥ स० ४.

पृष्ठस्य चञ्चमृगदण्डकरावरेण निःशेषविष्टतरणाग्रनशोरुभावः ।
सर्वेहनेव निजशौर्यविरक्षणाय दण्डं समर्पयति मालवमण्डलेशः ॥११॥ स० ४

फिर ७ वें सर्ग में 'मालव' के लिए लिखा है:—

"[illegible] नृपतिवंशपोतशिखो दुर्गेमानग्रहं
[illegible] नायकनामधुना कांक्षत्यसौ मालवः ॥२८॥

तत्पश्चात् [illegible] के निजामशाह पर जब मालवा के महमूद खिलजी ने १४६०-६२ ई० में हमला किया तब गुजरात के महमूद (बेगड़ा) ने जो मालवा के विरुद्ध सैनिक सहायता दी थी,

* महमूद ने अपने आक्रमणों में गिरनार के माण्डलिक राजा को इस्लाम धर्म ग्रहण करने के लिये बाध्य किया। (देखो डा० एस. के. बनर्जी कृत 'हुमायूं बादशाह' संस्करण १९३८ पृ० ११९ और कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, भा० ३, पृ० ३०४)।

[illegible] अधिकार है [illegible] है [illegible] १६६३ ई० के बाद का रचा हुआ होना चाहिए।

इसी चतुर्थ [illegible] के [illegible] में [illegible] का [illegible] है —

[illegible] वासित [illegible] कर्पूर [illegible] गुप्ता।

[illegible] ॥१२॥

[illegible] से भी [illegible] का [illegible] है। इससे स्पष्ट है कि [illegible] और [illegible] गोपाल [illegible] म। [illegible] १६३० से १६४८ ई० तक राज्य किया था। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि [illegible] की रचना काल १६६ [illegible] १६५६ के बाद में है।

[illegible] (१६८ [illegible] ई०) में [illegible] है जिसका [illegible] [illegible] अनुसार ठीक [illegible] है। [illegible] १६४८ ई० से १६८८ ई० तक ४० [illegible] मिलता है।

[illegible] और [illegible] हुए [illegible] है कि [illegible] दोनों का [illegible] —

* [illegible] (वि० सं० १६६० (ई० सं० १६३३) [illegible] है। [illegible] के [illegible] था। [illegible] (ई० सं० १६५८) में हुई। ([illegible] का इतिहास पृ० १३३–१३८) [illegible] पृ० १ [illegible] १२० १३८।

[illegible] और [illegible] हुआ था क्योंकि [illegible] (वि० सं० १७१३ ई० सं० १६५६) [illegible] ० १ [illegible])।

[illegible] है। [illegible] है। (१०)।

उदयराजकृत राजविनोद	दोहाद का शिलालेख
१—काव्य पद्यात्मक है।	१—लेख पद्यात्मक है।
२—काव्य की भाषा संस्कृत है।	२—लेख संस्कृत भाषा में है।
३—काव्य की हस्तलिखित प्रति डा० बूलर ने गुजरात में प्राप्त की।	३—लेख बड़ौदा से उत्तर-पूर्व में ७७ मील पर दोहाद में प्राप्त हुआ।
४—राजविनोद की हस्तलिखित प्रति में सन् सम्वत् नहीं दिया हुआ है परन्तु लेख व पृष्ठ मात्रा के आधार पर १५०० और १६०० ई० के बीच की लिखी ज्ञात होती है।	४—शिलालेख विक्रम सम्वत् १५४५ शक सम्वत् १४१० (२८ आपरेल, १४८८ ई०) का लिखा हुआ है।
५—राजविनोद महमूद बेगड़ा के शासन-काल (१४५८ से १५११ ई०) में ही रचा गया था। अथवा, जैसे कि ऊपर अनुमान लगाया गया है १४६३ से १४६६ के बीच में लिखा गया था।	५—शिलालेख भी महमूद बेगड़ा के शासन काल में ही उसके राज्यारोहण के समय से लगभग ३० वर्ष बाद १४८८ ई० में लिखा गया था।
६—राजविनोद सरस्वती वन्दना से आरम्भ होता है। प्रथम सर्ग को सुरेन्द्र सरस्वती-सत्कार नाम दिया गया है। वास्तव में, सम्पूर्ण काव्य ही सरस्वती के द्वारा अभिगीत है। 'महमूदसुरत्राणतेः अभिनववर्णने प्रगल्भा सरस्वती सरसाक्षराणि स्तनोतीत् ॥२०॥ स० ४।	६—शिलालेख भी काश्मीरवासिनीदेवी अर्थात् सरस्वती की वन्दना से प्रारम्भ होता है। (डा० सांकलिया का नोट एपि० इंडिका जन० १९३८ पृ० २१३)। डा० सांकलिया का कथन है कि यह देवी शारदा अथवा सरस्वती प्रतीत होती है। राजविनोद में भी सरस्वती को 'शारदा' नाम से सम्बोधित किया है। (पद्य २ सर्ग २रा)
७—राजविनोद में दिया हुआ बेगड़ा का वंशानुक्रम इस प्रकार है:— मुजफ्फर, महम्मद, (१) अहमद, महम्मद, (२) महमूद। यह वंशानुक्रम मुसलमान इतिहासकारों के आधार से भिन्न है।	७—शिलालेख में दिया हुआ वंशानुक्रम भी इस प्रकार है:— मुजफ्फर, महमद, (१) अहमद, महम्मद, (२) महमूद। यह वंशानुक्रम भी मुस्लिम इतिहासकारों द्वारा दिये हुये वंशानुक्रम से भिन्न है।
८—राजविनोद के दूसरे सर्ग के ३० पद्यों में महमूद के पूर्वजों के वंशक्रम का वर्णन	८—शिलालेख में कुल २६ पद्य हैं जिनमें से पहले ६ पद्यों में तो महमूद के पूर्वजों

उदयराजकृत राजविनोद

है। इन सर्गों में स्वयं महमूद के शासन काल (१४५८ से १४८८ ई० तक) का वर्णन है।

९—प्रथम सर्ग के तीसरे पद्य में कवि ने लिखा है कि '[illegible]' इससे विदित होता है कि महमूद की कृपा प्राप्त करने के लिए (आश्रय) उसके दरबार में प्रवेश पाने के लिए ही यह काव्य किया गया था।

१०—राजविनोद में महमूद के पुत्र अहमद का उल्लेख किया है। (पृ० ४ व ६)

११—राजविनोद सर्ग ७, पद्य १९ में महमूद द्वारा चांपानेर पर आक्रमण करने का वर्णन है —

"यस्य प्रतापभरत्रासवशात् [illegible]
[illegible] ।
[illegible]
[illegible] ॥"

[illegible]

का वर्णन है और शेष ७० पद्यों में महमूद के राज्यकाल से १४५८ ई० से १४८८ ई० तक की घटनाओं का वर्णन है।

९—[illegible] की रचना का प्रकार प्रायः राजविनोद के समान ही है। इससे प्रतीत होता है कि राजविनोद के बाद ही बहुत समय तक सुलतान की कृपा का उपभोग करने के बाद इसकी रचना की थी। [illegible] में बहुत से [illegible] और [illegible] का उल्लेख है जिनका राजविनोद में वर्णन नहीं है। अतः स्पष्ट है कि यह राजविनोद के रचनाकाल से [illegible] के समय (१४८८ ई०) तक की घटनाओं का वर्णन इसी कवि ने इस ग्रन्थ में किया है।

१०—[illegible] में भी अहमद का उल्लेख किया है। (पद्य ४)

११—[illegible] में चांपानेर (नवम्बर १४८४ ई०) चढ़ाई का उल्लेख भी किया है —

"[illegible] (दुर्गं) [illegible]
[illegible] ॥१०॥
[illegible] ।
[illegible] ॥११॥
[illegible] (दुर्गं) [illegible]
[illegible] ।
[illegible] ॥१२॥"

डा० कोमिसेरियट ने लिखा है कि चांपानेर पर के लिए [illegible] में प्रस्थान हुआ था। (हि० गु० भा०, १९३८ पृ० १९१)

उदयराजकृत राजविनोद	दोहाद का शिलालेख
१२—मुदप्फर के पुत्र महमद के विषय में वर्णन करते हुए राजविनोद (सर्ग ७ प० १०) में नन्दपद और पल्लिवन का उल्लेख है:— "आयाप्यहो नन्दपदाधिनाथा भल्लूकवत्पल्लिवने भ्रमन्ति" ॥६॥ फिर, नन्दपद के राजाओं के विषय में लिखा है:— 'विभिन्नप्राकारसौधस्फुरद्देहमालाः' यहाँ 'विभिन्न प्राकार' पद से विदित होता है कि पल्लिवनान्तर्गत नन्दपद में उस समय कोई किला भी था। यहाँ मुदप्फर के पुत्र महम्मद के समय के पल्लिवन से तात्पर्य है।	१२—दोहाद शिलालेख के पद्य १८ में पल्लिदेश का उल्लेख है। उस देश पर बेगड़ा सुलतान के मुख्य मन्त्री इमादुल का शासन था— "पल्लीदेशाधिकारं च पुण्यं पुण्यमतिस्तदा दुष्टारिहृदये राज्यं दुर्गमेनं चकार सं ॥१८॥" डा० सांकलिया का मत है कि गोधरा तालुका में पाली नामक स्थान ही पल्लिदेश है। पल्लीवन और पल्लिदेश एक ही है। यहाँ बेगड़ा के समय के पल्लि देश से तात्पर्य है।
१३—राजविनोद में 'गयासदीन' उपाधि का प्रयोग महमूद बेगड़ा के पिता महम्मद के लिए हुआ है:— "गयासदीन इति साहि महंमदेन्द्रः"	१३—दोहाद शिलालेख के पद्य ७ में—"श्री ग्यास (दीन) प्रभोः अन्वये साह श्री महमूद वीर नृपतिः. . . जातः" लिखा है। यह भी महमूद के पिता ही की उपाधि है, महमूद की नहीं, जैसाकि पद्य पढ़ने से प्रतीत होता है। महमूद की सिक्कों और लेखों में 'नासिर उद्दुनिया वा-उद्-दीन' (संसार और धर्म का रक्षक) लिखा है। अहमद (१) के पुत्र महमद (२) को भी सिक्कों में गयासउद्दीन लिखा है। (एपि० इण्डि० जन० १९३८ पृ० २१६)

इस प्रकार दोहाद के शिलालेख और राजविनोद काव्य की तुलना करने से हम नीचे लिखे निष्कर्षों पर पहुँचते हैं—

(१) श्रीरामदास का पुत्र उदयराज महमूद बेगड़ा (१४५८-१५११ ई०) का हिन्दू राजकवि था।

(२) उदयराज ने यह सप्तसर्गात्मक 'राजविनोद महाकाव्य' संस्कृत में लिखा है और इसमें महमूद बेगड़ा व उसके पूर्वजों का वर्णन है। यह काव्य बेगड़ा के राज्य के पहले दस वर्षों (१४५८-१४६९) में लिखा गया था।

(३) इसके बाद भी दो दशकों तक वह महमूद के दरबार में ही रहा और उसके पूर्वजों व उसके पराक्रमों के वर्णन में अभिरुचि रखता रहा ।

(४) राजविनोद और दोहद के शिलालेख की तुलना से यह धारणा बनती है कि यह शिलालेख इसी कवि की पूर्व रचना की संक्षिप्त और सम्पूर्ण आवृत्तिमात्र है ।

'एपिग्राफिआ इण्डिका' जनवरी, सन् १९३८, भाग २४ अंक ४ में यह लेख इसके मूल पाठान्तर डाक्टर एच० डी० सांकलिया की टिप्पणी सहित प्रकाशित हुआ है जो बहुत महत्त्वपूर्ण है । उक्त लेख को ज्यों का त्यों एवं डाक्टर सांकलिया की टिप्पणी का अनुवाद, आवश्यक टिप्पणियों सहित, इसी पुस्तक में पृष्ठ ७३ में प्रकाशित किया जा रहा है ।

जैसा कि ऊपर सूचित किया गया है इस काव्य की एकमात्र प्राचीन हस्तलिखित प्रति बम्बई सरकार के संग्रहालय की सम्पत्ति है जो पूना के भाण्डारकर ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट में सुरक्षित है । इस प्रति के कुल २८ पत्र हैं । इसके लिखे जाने का कोई समयोल्लेख प्रति में नहीं किया गया है । अतः यह तो निश्चित नहीं कहा जा सकता कि यह किस समय में लिखी गई होगी परन्तु, प्रति की जीर्ण-शीर्ण अवस्था से इतना प्रतीत होता है कि यह ग्रन्थ रचनाकाल के बहुत पीछे लिखी हुई नहीं है और यह तो निश्चित ही है कि उसी शताब्दी में लिखी हुई तो अवश्य है । इसको किसी राम नामक लिपिकार ने स्वकीय आत्मज के पठनार्थ लिखा है । यह कथन अन्तिम उल्लेख से ज्ञात होता है । पाठकों के अवलोकनार्थ, प्रति के अन्तिम पत्र का चित्र भी अन्यत्र दिया जाता है जिससे प्रतिकी लिपि आदि का साक्षात् परिचय मिल सकेगा । प्रति का पाठ प्रायः शुद्ध है । पूरे काव्य में कोई ८-१० ही स्थल ऐसे दृष्टिगोचर होते हैं जो अशुद्ध कहे जा सकते हैं । इससे मालूम होता है कि लिपिकार श्रीराम स्वयं अच्छा संस्कृत का विद्वान् होगा ।

महमूद बेगड़ा गुजरात के सुलतानों में प्रसिद्ध और प्रतापशाली सुलतान हुआ है । सभी हिन्दू अथवा मुसलमान इतिहास लेखकों ने समान रूप से इसकी प्रशंसा लिखी है । उन्हीं के आधार पर आधुनिक इतिहासकारों ने भी इसके चरित्र पर पूर्ण रूप से प्रकाश डाला है । मूलतः यह सुलतान गयासुद्दीन का पुत्र था और इसके पूर्वजों ने किस प्रकार गुजरात में स्वतन्त्र सुलतानत का स्वरूप स्थापित किया इसका विवरण 'मिरात-ए-सिकन्दरी' 'मीराते अहमदी', 'तबकाते महमूदशाही,' कर्नल ब्रिग्स की हिस्ट्री और गुजरात व सिन्धमाला, फार्बस कृत 'रासमाला' आदि पुस्तकों के आधार पर संक्षिप्त रूप से इस 'परिचय' शीर्षक लेख में अंकित किया गया है । इस लेख में आवश्यक पाद टिप्पणियों के साथ राज-विनोद महाकाव्य के श्लोक भी उद्धृत किए गए हैं जिनसे तुलनात्मक ऐतिहासिक घटनाओं पर प्रकाश पड़ता है । इससे यह भी स्पष्ट हो जायगा कि राजविनोद महाकाव्य केवल साहित्यिक दृष्टि से ही नहीं अपितु ऐतिहासिक महत्त्व भी रखता है ।

इस महाकाव्य के कर्ता कवि उदयराज के विषय में अभी और कोई विशेष परिचय प्राप्त नहीं है । कृति को देखते हुए यही प्रतीत होता है कि वह महमूद का समकालीन

कवि था। सम्भव है, उसके दरबार में भी उसे स्थान प्राप्त हो। प्रस्तुत काव्य के द्वारा कितनी ही ऐतिहासिक घटनाओं व महमूद के चरित्र पर तो प्रकाश पड़ता ही है, साथ ही अपनी कृति के लिए समयानुसार विषय चुनकर संस्कृत काव्य परम्परा की शृंखला में एक कड़ी जोड़ने का श्रेय भी कवि को अवश्य ही प्राप्त है।

इस कृतिके इस प्रकार संपादन और प्रकाशन में राजस्थान पुरातत्त्वमन्दिर के सम्मान्य संचालक आचार्य श्रीजिनविजयजी की ही प्रेरणा और मार्ग-दर्शन मुख्यतः कारणभूत है, अतः इनके प्रति आन्तरिक कृतज्ञभाव प्रकट करना अपना परम कर्त्तव्य मानता हूँ।

यदि मध्यकालीन इतिहास के विशेषज्ञ इस ऐतिहासिक काव्य से अपनी गवेषणा में कोई सहायता प्राप्त करके इतिहास के तथ्यों पर अधिक प्रकाश डाल सकेंगे तो इसके प्रकाशन का श्रम सफल समझा जा सकेगा।

गोपालनारायण



महमूदबेगड़ा का वंश-परिचय

गुजरात के राजपूत सुलतानों का मूलपुरुष जिसने इस्लाम धर्म अंगीकार किया था उसका नाम सहारन था। बाद में उसको उपाधि व उपनाम वजीह-उल्-मुल्क हुआ। यह टांक (तक्षक) वंशीय सूर्यवंशी क्षत्रिय* था इसीलिए गुजरात के इतिहास में इसके वंशजों का 'राजपूत सुलतान' नाम से उल्लेख किया गया है।

भगवान् श्री रामचन्द्र जी से कितनी ही पीढ़ियों बाद [illegible] हुआ। उसी के कुल में क्रम से कुलभ, [illegible] भूपत, मदन, भूपाल, सोनारन, त्रिलोक, कुँवर, [illegible], हरीमन, कुँवरपाल, हरीन्द्र, रूपपाल, त्रिभुवनपाल हरपाल और हरचन्द हुए। सहारन हरचन्द का पुत्र था और थानेश्वर के पास एक गाँव में रहता था। उसके छोटे भाई का नाम साधु था। ये दोनों भाई जमींदारी का काम करते थे।

एक बार दिल्ली के बादशाह मुहम्मद तुगलक के चाचा का लड़का शाहजादा फीरोजशाह शिकार को निकला और अपने साथियों से बिछुड़ कर सहारन के गाँव के पास आ पहुँचा। उस समय सहारन, उसका छोटा भाई साधु और दूसरे राजपूत एक जगह बैठे हुए थे। एक राजपूत ने फीरोज के पैर में राजचिह्न पहचान लिया। सहारन और साधु उसे अपने घर ले गए और उसका आदर-सत्कार किया। साधु की बहन ने उसे शराब पिलाई और उसी को नशे में फीरोज ने अपना परिचय दे दिया। साधु की बहन और फीरोज की शादी हो गई। तदनन्तर, ये दोनों भाई फीरोजशाह के साथ दिल्ली चले गये और इस्लाम धर्म को ग्रहण कर लिया। बादशाह ने सहारन को वजीह-उल्-मुल्क का खिताब दिया। वजीह-उल्-मुल्क के जफरखाँ और शम्सखाँ नामक दो लड़के हुए। जफर खाँ ही आगे चल कर मुजफ्फर शाह के नाम से इस वंश का गुजरात का प्रथम शासक हुआ।

बादशाह के कहने से सहारन और साधु ने कुतुब उल् आकताब हजरत मखदुम जहानियाँ से इस्लाम धर्म की दीक्षा ली थी। सहारन का पुत्र जफर खाँ भी इन्हीं महात्मा का शिष्य था। एक दिन हजरत के मठ पर कुछ फकीर इकट्ठे हुए। उस समय महात्मा मखदुम के पास खाने पीने का कुछ भी सामान नहीं था। जफर खाँ को यह बात मालूम थी। वह तुरन्त ही अपने घर से व बाजार से मिठाइयाँ आदि ले आया और सभी फकीरों को भोजन करा दिया। फकीरों ने तृप्त होकर जोर से 'बादशाहो मुजफ्फर' का नारा लगाया। जब मखदुम जहानियाँ को यह बात मालूम हुई तो उन्होंने जफर खाँ को बुलाकर प्रसन्नता पूर्वक कहा 'जो तुमने फकीरों को भोजन कराकर तृप्त किया है उसके बदले में मैं तुम्हें सम्पूर्ण गुजरात की हुकूमत प्रदान करता हूँ।' इस प्रकार जफरखाँ को फकीर का वरदान प्राप्त हुआ।

---

*[illegible] ।
[illegible] ॥१॥ [illegible]

हिजरी सन् ७६३ (१३६१ ई०) में यह खबर आई कि गुजरात के सूबेदार मुकर्रर खाँ ने जो रास्ती खाँ के नाम से प्रसिद्ध था, बलवा कर दिया। उसी वर्ष के रबीउल-अव्वल महीने की दूसरी तारीख को सुलतान मोहम्मद ने जफ़र खाँ को एक लाल तम्बू बख्शीश किया और निजाम मुकर्रर खाँ को दण्ड देने के लिए गुजरात की तरफ़ भेजा। उसी महीने की चौथी तारीख को सुलतान मोहम्मद जफ़र खाँ को विदा करने के लिए हौज़खास पर गया और उसके पुत्र तातार खाँ को अपने पास रखकर पुत्रवत् पालन करने का वचन दिया।

हिजरी सन् ७६४ (१३६२ ई०) में सनहुमन नामक ग्राम के पास जफ़र खाँ और मुकर्रर की मुठभेड़ हुई और इस लड़ाई में जफरखाँ विजयी हुआ। निजाम युद्ध में मारा गया और जफ़र ने पाटण में प्रवेश किया।

सन् ७६५ हिजरी में खान खम्भात[1] की तरफ़ गया और मुसलमानी रीतिके अनुसार गुजरात को अपने आधीन कर लिया।

हिजरी सन् ८०६ (ई० स० १४०३) में मुजफ्फरशाह ने तातार खाँ को गद्दी सौंप दी और उसको नासिरउद्दीन मोहम्मद शाह की पदवी धारण कराई। वह स्वयं आशावल कसबेमें आकर रहने लगा और सब झंझट छोड़ दिया।

सुलतान मोहम्मदशाह इसी वर्ष के जमादिउल आखिर महीने में आशावल क़सबे में तख्त पर बैठा। एक सप्ताह बाद ही उसने नांदोल[2] के हिंदुओं पर चढ़ाई की और उनको हराया। फिर, उसने अपने लश्कर को साथ लेकर दिल्ली की ओर कूच किया। यह खबर सुनकर इकबाल खाँ के मन में बहुत संताप उत्पन्न हुआ[3]। परन्तु शअबान

(१) यद्विशन् कन्दमहीषु येन छिन्नान्यपाण्डूनि यशांसि खड्गः।
स्फुरद्द्विजिह्वशोणितरक्तनिम्नः प्रक्षालितः पश्चिमवारिराशौ ॥३॥
रा० वि० सर्ग २

(२) यस्य प्रतिद्वन्द्विविभिन्नप्राणाम्भोधस्फुरद्द्रुमाला: ।
अनाप्नुवन्तो नन्दनाभिलाषा भल्लूकवत् पल्लिवने भ्रमन्ति ॥६॥
रा० वि० सर्ग २।

(३) तवारीख मोहम्मदशाही में लिखा है कि फीरोजशाह के पुत्र सुल्तान मोहम्मद की मृत्यु के बाद दिल्ली में एक बड़ा विद्रोह हुआ। प्रत्येक विद्रोही सरदार दिल्ली का स्वतन्त्र शासक बनना चाहता था।.......इसी बीच में दिल्ली का राज कार्यभार एक वकील (प्रतिनिधि) के रूप में इकबाल खाँ के हाथ में आया। उस समय तातार खाँ पानीपत में था उसको जीतने के लिए इकबाल खाँ पानीपत को रवाना हुआ। तातार खाँ अपना सब सामान किले में छोड़कर लड़ाई के लिए तैयार हुआ और दिल्ली में पैठ गया। तीसरे दिन इकबाल खाँ ने पानीपत का किला जीतकर तातार खाँ के सामान पर अधिकार कर लिया। तातार खाँ ने गुजरात से लश्कर लाकर दिल्ली पर चढ़ाई करने का इरादा किया इसलिए वह अपने बाप से आकर मिला। इकबाल खाँ का बैर और दिल्ली का राज्य उसके मन से दूर न हुए। इकबाल खाँ भी उससे सावधान रहता था। निम्नांकित पद्य में सम्भवतः सन्तापाग्नि से इकबालखाँ का ही तात्पर्य है:—

के महीनेमें तातार खां की तबीयत एकदम बिगड़ गई और अच्छे अच्छे वैद्यों के दवा करने पर भी कोई फायदा नहीं हुआ। अन्त में, तातार खां की मृत्यु हो गई और उसका शव पाटण में लाकर दफनाया गया।

गुजरात की हकीकत जानने वाले लोगों का कहना है कि कुछ हितशत्रु मित्रों के कहने से तातार खां ने अपने पिता जफर खां को कैद कर लिया था और स्वयं मोहम्मदशाह का नाम धारण करके गद्दी पर बैठ गया। ...... कुछ दिनों बाद उसके पास रहनेवाले अफसरों के हितचिन्तकों ने उसे जहर दे दिया। इसीलिए लोग उसको 'खुदाई शहीद' (The Martyred Lord) कहते हैं। इससे भी प्रतीत होता है कि उसकी मृत्यु स्वाभाविक रूप से नहीं हुई थी।

सुल्तान मोहम्मद की मृत्यु के बाद जफर खां फिर गद्दी पर बैठा। राज्य के भीतर बाहर सब उसके आधीन हो गए और उसने भी सबको आश्वासन दिया।

प्राचीन इतिहास लेखकों ने लिखा है कि सुल्तान मोहम्मद की मृत्यु के बाद राज्य के बड़े बड़े अमीरों और अधिकारियों ने इकट्ठे होकर जफर खां से प्रार्थना की कि बादशाह के वंश में दिल्ली के शासन को सम्हालनेवाला अब कोई नहीं रह गया है और वहां पर गड़बड़ी फैल रही है। गुजरात के शासन जैसे बड़े काम को सम्हालनेवाला आपके सिवाय योग्य पुरुष दिखाई नहीं देता है। अतः समस्त प्रजा का यह मत है कि आप गुजरात का राजछत्र धारण करें। इससे सबको आनन्द होगा। ऐसी इच्छा रखने-वालों की प्रार्थना पर (?) बीरपुर ग्राम में हि० स० ८१० (१४०७ ई०) में सुल्तान मोहम्मद की मृत्यु के तीन वर्ष और सात महीने बाद जफर खां ने राजछत्र धारण करके मुजफ्फरशाह नाम धारण किया।[1]

इस प्रकार सुल्तान का पद धारण करने के पश्चात् मुजफ्फरशाह ने मालवा में धार के हाकिम अलपखान (दिलावरखां के पुत्र) को आधीन करने के लिए चढ़ाई की और उसको कैद करके उसके देश का शासन नुसरत खां को सौंप दिया।

इसी बीच में खबर मिली कि जौनपुर के सुल्तान इब्राहीम ने दिल्ली पर अधिकार करने की नीयत से कन्नौज के आगे लड़ाई का सिलसिला शुरू किया है। उस समय दिल्ली के तख्त पर सुल्तान मोहम्मदशाह का पुत्र महमूद था। उसकी सहायता करने के लिए मुजफ्फरशाह ने दिल्ली की तरफ कूच किया। यह खबर सुनकर सुल्तान इब्राहिम वापस जौनपुर चला गया। सुल्तान मुजफ्फर ने उसका पीछा किया और फिर अपनी

[illegible] ।
[illegible] ॥८॥
[illegible]

(१) [illegible]
[illegible]

राजधानी को लौट आया। उस समय वह धार के पूर्व शासक अलपखाँ को अपने साथ लेता आया था।

अलपखाँ एक वर्ष तक कैद में रहा। इसी बीच में उसी के एक उमराव मूसा खाँ ने, जो माँडू का हाकिम था, मालवे के थोड़ से भाग पर अधिकार कर लिया। इस पर अलपखाँ ने अपने हाथ से एक अर्जी लिखकर मुजफ्फरशाह के पास भेजी कि मेरे एक अधीनस्थ उमराव ने मालवे के कुछ हिस्से पर कब्जा कर लिया है; यदि आप मुझे इन बेड़ियों से मुक्त करके उपकार की कैद में डाल दें तो थोड़े ही समय में मालवे पर पुनः अधिकार प्राप्त करके अपनी शेष आयु आपके गुलाम की तरह बिताऊँगा। सुलतान ने उसपर कृपा करके मुक्त[1] ही नहीं कर दिया वरन् अपने पुत्र अहमदखाँ को लश्कर देकर सहायता के लिए उसके साथ भी भेजा। मूसाखाँ में सामना करने की शक्ति कहाँ थी? वह भाग गया और शाहजादा अलपखाँ को गद्दी पर बिठा कर वापस आया।

मुजफ्फरशाह ने हिजरी सन् ८१२ (ई० १४०६) में कुम्भकोट के हिन्दुओं के विरुद्ध खुदावन्द खाँ की सरदारी में फौज भेजी जो विजयी होकर वापस आई।

मुजफ्फरशाह की मृत्यु के विषय में तवारीख बहादुरशाही में इतना ही लिखा है कि सुलतान की मृत्यु हि० स० ८१३ (ई० स० १४१०) में हुई। कुछ जानकार लोग इस वृत्तान्त के विषय में इस प्रकार कहते हैं कि आशावल कसबे के कोलियों ने सुलतान की सत्ता को स्वीकार नहीं किया और घाट बाट पर लूट पाट करने लगे। मुजफ्फरशाह ने एक हजार सिपाही साथ देकर अहमदखाँ को उन्हें दबाने के लिए भेजा। अहमदखाँ ने शहर से बाहर निकल कर विद्वानों को बुलाया और उनसे प्रश्न किया कि 'एक शख्स किसी दूसरे शख्स के बाप को बिना कुसूर मार डाले तो उससे बाप के मारने का बदला लेना धर्मानुकूल है या नहीं?" सभी विद्वानों ने कहा "बदला लेना ठीक है।" विद्वानों की यह सम्मति एक कागज पर लिखाकर अहमदखाँ ने अपने पास रखी। दूसरे दिन वह अपने सवारों सहित शहर में दाखिल हुआ और सुलतान को कैद करके मार डाला। सुलतान ने मरते समय अहमदखाँ को कुछ शिक्षाएं दीं, जो इस प्रकार हैं :—

"पुत्र! तुमने इतनी जल्दी क्यों की? कुरान में लिखा है कि मृत्यु तो अन्त में आयेगी ही—एक घड़ी पहले या पीछे। मेरी इन शिक्षाओं पर ध्यान रखना। इनसे तुझे लाभ होगा।

जिन लोगों ने तुझे यह काम करने के लिए उकसाया है उनसे दोस्ती मत रखना वरन् उनको मार डालना क्योंकि दगाबाज का खून हलाल (उचित) है।

शराब पीने का शौक बिलकुल मत करना क्योंकि शराब के प्याले में दुःख के समुद्र का तूफान रहता है।

(१) मुमोच [illegible] कारागृह [illegible] नृप [illegible]।
[illegible] ॥४॥ रा० वि० सर्ग २।

डोन्ड मलिक और दाद मलिक को मार डालना क्योंकि ये राज्य में बखेड़ा करने वाले हैं।

तू हमेशा दयावान रहना। यदि तू अपने ही मुल्क में बुरा रहेगा तो देश में सुख चैन नहीं रह सकेगा।

गरीब दरवेशों (सन्तों) को बेफिकर रखना क्योंकि प्रजा के बल पर ही राजा ताज धारण किए रहता है।

प्रजा मूल है और सुल्तान वृक्ष है। हे पुत्र! मूल ही से वृक्ष मजबूत होता है। इसलिए जहाँ तक हो सके वहाँ तक प्रजा से बिगाड़ नहीं करना चाहिए। हे पुत्र! यदि ऐसा करोगे तो तुम अपनी ही जड़ काट डालोगे।"

इसके थोड़ी ही देर बाद सुल्तान इस क्षणभंगुर संसार को छोड़कर चल बसा[1]। यह घटना सफर महीने के अन्तिम दिनों में हुई। उसको पाटन शहर के किले के अन्दर कब्र में दफनाया गया।

मुजफ्फरशाह के बाद उसका पौत्र सुल्तान मोहम्मद का पुत्र अहमदशाह—सुल्तान अहमद नासिरुद्दीन अबुलफतह अहमदशाह का पद धारण करके हिजरी सन् ८१३, तारीख १४ रमजान के महीने में गद्दी पर बैठा। उस समय उसकी आयु २१ वर्ष की थी।

अहमदशाह के गद्दी पर बैठते ही उसके चचेरे भाई फीरोज खाँ ने अपना हक प्रकट किया और भड़ौच में अपने आपको सुल्तान घोषित कर दिया। परन्तु अहमदशाहने कुछ समय के लिए उसके विद्रोह को दबा दिया। इसके बाद सुल्तान ने आसावल[1] नाम की जलवायु को अपने अनुकूल मानते हुए वहाँ पर १४१२ ई० में एक नगर बसाया जो उसीके नाम पर अहमदाबाद कहलाया[2]। आसावल नाम भी इस बड़े नगर का ही एक हिस्सा बन गया। अहमदाबाद उसी समय से गुजरात के बादशाहों की राजधानी रहता आया है।

---

१ मुजफ्फरशाह की मृत्यु ३१ जनवरी सन् १४११ ई० को हुई। [illegible] पृ० ४१४

२ आशा [illegible] आसावल नगर के स्थान पर राज्य करता था। यहीं पर कर्ण [illegible] कर्णावती नगरी बसाई थी। अलबरूनी ने भी [illegible] शताब्दी पूर्व [illegible] नगर का जिक्र किया है।

१ अहमदाबाद का [illegible] हि० सं० ८१६ (१४१३ ई०) में बन कर तैयार हुआ था। कहा जाता है कि इस नगर की नींव रखने में अहमद नाम के चार [illegible] का हाथ था। [illegible] सुल्तान अहमदशाह, दूसरा मुल्ला अहमद, तीसरा [illegible] अहमद और चौथा [illegible] अहमद। जिन्होंने [illegible] बहुत [illegible] थे।

[illegible] अहमदशाह द्वारा नगर [illegible] का कोई वर्णन नहीं है।

उसी वर्ष के अन्त में फीरोज खाँ ने फिर राजगद्दी का दावा किया और मोड़ासा के स्थान पर अपना झण्डा खड़ा किया। ईडर का राव रणमल भी उसके साथ हुआ परन्तु शाह ने रूपनगर स्थान पर उनको परास्त कर दिया और राव व फीरोज खाँ प्राण बचाकर पहाड़ियों में भाग गए। थोड़े दिन बाद राव में और फीरोज खाँ में भी अनबन हो गई और रणमल ने उसके हाथी और घोड़े छीन कर शाह को भेंट कर दिए।

मालवा के सुल्तान हुशंगशाह ने गुजरात के शत्रुओं को आश्रय दिया तथा इस देश पर १४११ ई० व १४१८ ई० में हमले किये परन्तु शाह ने उसको हर बार परास्त कर दिया। अहमदशाह ने भी १४१९ ई० में मालवा पर हमला किया और हुशंगशाह को भागकर मांडू के किले में शरण लेनी पड़ी[1]। १४२२ ई० में अहमदशाह ने फिर मालवा पर आक्रमण किया परन्तु वह मांडू के किले पर अधिकार करने में सफल न हुआ।

हि० स० ८१७ (१४१५ ई०) में अहमदशाह को गिरनार का किला देखने की इच्छा हुई इसलिए उसने विद्रोहियों को उसी दिशा में खदेड़ा। उस समय तक सौराष्ट्र के किसी भी राजा ने मुसलमानों के आगे सिर नहीं झुकाया था इसलिए सोरठ के राजा पर मोर मलिक को आश्रय देने का बहाना बना कर शाह ने उस पर आक्रमण कर दिया। हिन्दू राजा ने सामना तो किया परन्तु मुसलमानों की युद्धप्रणाली से अनभिज्ञ होने के कारण वह जल्दी ही हार गया और भाग खड़ा हुआ। शाह ने गिरनार के किले तक उसका पीछा किया। इसके बाद कुछ वार्षिक कर देना स्वीकार करने पर वह अहमदाबाद लौट गया। रास्ते में उसने सिद्धपुर के देवालयों को नष्ट करके बहुत सा धन व जवाहरात प्राप्त किए।

गुजरात के प्रबल राजाओं के अतिरिक्त छोटे छोटे सरदारों को भी वश करने व उनसे कर वसूल करने में अहमदशाह को खूब प्रयास करना पड़ा था। ये लोग अपने अपने किलों में छुप जाते थे और जंगलों में भाग जाते थे इसलिए इनसे कर वसूल करने में बहुत कठिनाई पड़ती थी। अन्त में शाह ने इन पर वार्षिक कर नियत कर दिए और इनकी जमीनें व किले इनको वापस कर दिये।

१४२६ ई० में शाह ने फिर ईडर पर विजय प्राप्त करने की इच्छा की। वह जानता था कि ईडर के राज्य पर अधिकार रखना उसके काबू से बाहर की बात थी। वह वहाँ का किला भी न ले सका था; इसलिए उसने वहाँ के गांवों पर अधिकार जमाने के लिए हाथमती नदी के किनारे एक विशाल किला बनवाना शुरू किया। यह किला ईडरगढ़ पर हुए हुए पर्वत शिखरों पर से स्पष्ट दिखाई पड़ता था। बादशाह ने इसका नाम अहमदनगर रखा। तत्कालीन ईडर का राव पूंजा सो

१ [illegible]

[illegible] ॥२१॥ [illegible]

एक तहखाने में गिरकर मर गया और उसके पुत्र नारायणदास ने चांदी के तीन लाख टंक वार्षिक कर देना स्वीकार करके संधि करली[1]। परन्तु दूसरे ही वर्ष १४२८ ई० में वह संधि टूट गई और अहमदशाह ने १४ नवम्बर को वह किला छीन लिया। वहीं पर उसने एक विशाल मसजिद भी बनवाई।

इसके बाद (८३५ हि०, १४३१ ई०) दक्षिण के बहमनी सुलतान, सालसेट, माहिम और बम्बई द्वीप पर सुलतान ने विजय प्राप्त की। दिव, घोघा और गन्धार के द्वीप भी गुजरात के इस सुलतान के अधिकार में थे। कितनी ही बार गुजरात की विजयिनी सेना इन द्वीपों से सोने चांदी और जरकसी के कपड़े व जवाहरात लेकर घर लौटी थी।[2]

अहमदशाह की मृत्यु ४ जुलाई सन् १४४३ ई० को अहमदाबाद नगर में हुई और उसको जामा मसजिद के सामने दफनाया गया।

गुजरात के सुलतानों में अहमदशाह को बहुत प्रजाप्रिय और न्यायी सुलतान के रूप में याद किया जाता है। एक कविने उसके लिए लिखा है कि "हे राजा! तेरे न्यायपूर्ण समय में किसी मनुष्य को परिहार करने की आवश्यकता नहीं पड़ी[3]।" यह कविता प्रेमी और गुणग्राहक था।

अहमदशाह के बाद उसका पुत्र मुहम्मदशाह गद्दी पर बैठा। वह बहुत विलासी[4] था और राजकाज में विशेष रुचि नहीं रखता था। इसमें बादशाह के यथोचित बुद्धि भी नहीं थी, परन्तु वह बहुत उदार[5] था इसीलिए उसको लोग 'जरबख्श' कहते थे[6]।

गद्दी पर बैठते ही उसने ईडर पर चढ़ाई की। राव कुछ दिनों तक तो इधर उधर पहाड़ियों में छिपता रहा बाद में उसने अपने अपराधों के लिए क्षमा मांग ली। १४४९ ई० में सुलतान ने चाम्पानेर[7] के रावल गंगादास पर चढ़ाई की और उसको हराकर किले में भाग जाने के लिए बाध्य किया। परन्तु गंगादासने बाद में मालवा के खिलजी सुलतान को अपनी सहायता के लिए राजी कर लिया

(१) [illegible]।

(२) इस स्थल पर गुजरात का उल्लेख राजविनोद में इस प्रकार से किया गया है।
[illegible]।
[illegible] ॥१२॥ रा० वि० सर्ग २

(३) [illegible]।
[illegible] ॥१३॥ रा० वि० सर्ग २

(४) [illegible]।
[illegible] ॥१५॥
रा० वि० सर्ग २

(५) रा० वि० १०,११ सर्ग २. (६) [illegible]।

(७) रा० वि० १८, स० २

तब इस नवीन शत्रु के सामने मुहम्मदशाह न टिक सका और बुरी तरह हारकर लौट गया[1]। थोड़े ही समय बाद हि० स० ८५५ (ई० १४५१-५२) के मोहर्रम मास की २०वीं तारीख को उसकी मृत्यु हो गई।[2]

मुहम्मदशाह के बाद हि० स० ८५५ (१४५१ ई०) के मोहर्रम मास की ११ वीं तारीख को उसका बड़ा शाहजादा कुतुबउद्दीन तख्त पर बैठा। उसी समय उसे मालूम हुआ कि राजधानी से कुछ ही मील की दूरी पर मालवा के सुलतान की सेना आ पहुँची है इसलिए आगे बढ़कर उसका सामना किया। मालवा के महमूद खिलजी को वापस लौटना पड़ा और कुतुब की जीत हुई। इसके बाद इन दोनों सुलतानों ने मिलकर हिन्दुओं के विरुद्ध युद्ध-योजना करते रहने की प्रतिज्ञा की और मेवाड़ के राणा कुम्भा के राज्य को आपस में बांट लेने का मनसूबा किया।

मुजफ्फरशाह के भाई का वंशज शम्स खां उस समय नागोर का स्वामी था इसलिए उसने राणा के विरुद्ध सहायता करने के लिए कुतुबशाह से प्रार्थना की। शाह ने अपनी फौजें उसकी सहायता के लिए भेजीं परन्तु राणा ने उन्हें बुरी तरह हरा दिया। इस पर कुतुबशाह फिर नागोर की तरफ स्वयं रवाना हुआ और मेवाड़ के अधीनस्थ सिरोही के राजपूतों को जीत लिया। फिर वह पहाड़ी मार्ग से कुम्भलमेर के किले की ओर बढ़ा परन्तु बीच ही में राणा ने उस पर आक्रमण कर दिया। इसके बाद राणा में और कुतुबशाह में सन्धि हो गई।

अब, मालवा के सुलतान ने कुतुबशाह को फिर भड़काया और चम्पानेर के स्थान पर राणा के राज्य को आपस में बांट लेने की संधि पर हस्ताक्षर किए। दूसरे वर्ष, कुतुबशाह ने फिर आबूगढ़ को जीत लिया। वहां कुछ फौज छोड़कर वह सिरोही पहुँचा और एकबार फिर राणा से संधि हो गई। अगले वर्ष १४५८ ई० में राणा ने फिर नागोर पर चढ़ाई की। बहुत देर करके कुतुबशाह उसका सामना करने के लिए रवाना हुआ और जय प्राप्त करता हुआ कुम्भलमेर की तरफ बढ़ा परन्तु उसको बीच ही में रुकना पड़ा। इसके थोड़े ही दिनों बाद वह अहमदाबाद लौट गया और मर गया।

कुतुबउद्दीन के बाद हिजरी सन् ८६३ (१४५८-५९) के रजब महीने की २३ वीं तारीख को अहमदशाह का पुत्र दाऊद गद्दी पर बैठा। परन्तु वह बिलकुल अयोग्य सिद्ध हुआ[3] इसलिए गुजरात के अमीरों व उच्च राज्याधिकारियों ने निर्णय किया

(१) तबकाते (२) अथवा उसको जहर दे दिया गया। देखो तबकाते; मीराते सिकन्दरी, तवारीख अहमदशाही।

३ राजविनोद में कुतुबुद्दीन और दाऊद का कोई वर्णन नहीं है। दाऊद का नाम न होने का तो [illegible] है क्योंकि उसने तो [illegible] दिन राज्य किया परन्तु कुतुबुद्दीन ने तो ८ वर्ष [illegible] राज्य किया था और मेवाड़ के [illegible] से कुम्भलगढ़ में युद्ध करके [illegible]। [illegible] मुसलमान इतिहासकारों ने उसका उल्लेख किया है। [illegible] होता है कि कुतुबुद्दीन [illegible]

कि मुहम्मदशाह के पुत्र फतहखाँ को गद्दी पर बिठाना चाहिए क्योंकि उसमें बादशाह होने के गुण भी पाए जाते हैं और आकृति में भी वह भव्य है।

फतहखाँ महमूदशाह के नाम से हि० स० ८६३ (१४५८ ई०) के रमजान माह की पहली तारीख, रविवार के दिन अहमदाबाद में तख्त पर बैठा। उस समय उसकी अवस्था तेरह वर्ष की थी।[1] यही महमूदशाह आगे चल कर महमूद बेगड़ा के नाम से प्रसिद्ध हुआ और यही राजविनोद काव्य का चरित्र-नायक है।

तख्त पर बैठने के थोड़े ही दिन बाद कुछ अविश्वासशील सरदारों ने वजीर इमादउल्मुल्क के साथ झगड़ा करके उसको मार देने का षड्यन्त्र किया। परन्तु, सुलतान ने धीरज और चतुराई से ऐसी व्यवस्था की कि सब विद्रोह शांत हो गया और इसके बाद में वजीर के विरुद्ध सर उठाने की किसी भी सरदार की हिम्मत न पड़ी।

सन् १४६७ ई० में महमूद ने सोरठ पर चढ़ाई की परन्तु इस बार उसको विशेष सफलता नहीं मिली इसलिए उसने वहाँ से अथाहरतन और नकदी की भेंट लेकर राव से [illegible] कर देने की आज्ञा दे दी[2]।

(महमूद बेगड़ा का पहला नाम) का सौतेला भाई था और उम्र में भी उससे [illegible] था। [illegible] की माता [illegible] बहादुर [illegible] की पुत्री थी। उसका नाम बीबी मुगली था। उसकी दूसरी बहन बीबी मिरघी थी। [illegible] बीबी मिरघी का शादी सुलतान [illegible] मुहम्मदशाह के साथ और मुगली की [illegible] कुतुबुद्दीन [illegible] के पुत्र [illegible] शाह [illegible] करने का निश्चय किया था। परन्तु बीबी मुगली अति सुन्दरी थी इसलिए मुहम्मदशाह ने [illegible] और [illegible] के [illegible] दी थी [illegible]। बीबी मिरघी का [illegible] के साथ हो गया। मुहम्मदशाह [illegible] कुतुबुद्दीन [illegible] होकर मुगली और उसके पुत्र फतहखाँ को [illegible] के आश्रय में [illegible]। कुछ समय बाद बीबी मिरघी की मृत्यु हो गई और मुगली ने [illegible] के साथ पुनर्विवाह कर लिया। इस प्रकार फतहखाँ का [illegible] के [illegible] हुआ [illegible]। [illegible] कुतुबुद्दीन [illegible] फतहखाँ के लिए [illegible] कर दिया था। कुतुबखाँ ने कई बार फतहखाँ को मार [illegible] परन्तु [illegible] रहा थी। राजविनोद [illegible] हुआ [illegible] है। [illegible] कुतुब का [illegible] नहीं किया [illegible]। [illegible] किया है कि कुतुबुद्दीन ने [illegible] उसका [illegible] महमूद को [illegible] है। [illegible] और [illegible] में [illegible] है। (सं)

(१) मीराते सिकंदरी

(२) [illegible]।

परन्तु, इससे उसको संतोष नहीं हुआ और वह फिर गिरनार पर हमला करने का बहाना ढूंढने लगा । दूसरे ही वर्ष उसे बहाना मिल भी गया ।

राव माण्डलिक राजचिन्हों को धारण किए हुए किसी मन्दिर में पूजा करने के लिए गया । जब महमूद को यह समाचार मिला तो उसे वह सहन नहीं कर सका और तुरन्त चालीस हजार फौज लेकर राव को शिक्षा देने के लिए रवाना हो गया । राव में इतनी सामर्थ्य नहीं थी कि वह मुसलमानों का सामना करता इसलिए उसने मुंहमांगा कर दे दिया और राजचिह्न भी सुलतान को भेंट कर दिए । परन्तु, यह सब व्यर्थ हुआ और परम शूरवीर पृथ्वीराज चौहान का यह कथन कि 'एक बार उड़ाई हुई मक्खी की तरह शत्रु भी फिर फिर कर वापस आता है' उस पर ठीक ठीक लागू हो गया । उसी वर्ष के अन्त में महमूद ने सोरठ पर फिर चढ़ाई कर दी । राव ने अपनी प्रजा को संकट से बचाने के लिए फिर मुंहमांगा धन देना चाहा परन्तु महमूद ने उसे इसलाम धर्म स्वीकार करने के लिए बाध्य किया । राव ने कुछ उत्तर न देकर किले के दरवाजे बन्द कर लिए और महमूद ने घेरा डाल दिया । अन्त में, राव ने देखा कि उसके दुःखों का अन्त नहीं है तो उसने किले की चाबियां सुलतान को सौंप दी और उसके कहने के अनुसार कलमा पढ़ लिया । (१४७० ई०)[1]

इस विजय के अनन्तर महमूद ने विभिन्न प्रांतों से बहुत से सय्यदों और विद्वानों को सोरठ में बसने के लिए बुलाया और एक नगर भी बसाया । इस नगर का नाम मुस्तफाबाद पड़ा । कहते हैं, यह नगर बहुत जल्दी ही तैयार होकर राजधानी की समानता करने लगा था । वर्ष का कुछ भाग महमूद यहीं बिताता था ।

जब वह इस नए नगर के भवनों का निरीक्षण कर रहा था उसी समय यह समाचार मिला कि कच्छ के निवासियों ने गुजरात पर आक्रमण कर दिया है इसलिए वह उधर चढ़ चला और बहुत जल्दी ही उनको अपनी आधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य कर लिया । इसके अनन्तर महमूदशाह ने सिन्ध के जाटों और बलूचियों पर चढ़ाई की और सिन्धु नदी तक देश के अंतरंग में घुसता चला गया । ये घटनाएं ई० स० १४७२ में हुई ।[2]

सिन्ध की चढ़ाई के बाद महमूद ने जगत (द्वारका) और शङ्खोद्धार (बेट) द्वीप के सरदारों पर चढ़ाई की । इसका कारण यह बतलाया जाता है कि मौलाना मोहम्मद समरकन्दी ने सुलतान के पास आकर द्वारका व बेट द्वीपके ब्राह्मणों की शिकायत की और महमूद ने उधर चढ़ाई कर दी । उसने द्वारका की बहुत सी

(१) मीराते सिकन्दरी में लिखा है कि रावने सुलतान के कहने से इस्लाम धर्म स्वीकार नहीं किया था परन्तु एक फकीर का चमत्कार देखकर ऐसा किया था । उसे यह सीख देने वाले शाह आलम [illegible] थे ।

(२) कामिस्सेरियट—हिस्ट्री ऑफ गुजरात, भा० १ (१९३८), पृ० १३०

इमारतों व मूर्तियों को तुड़वा दिया। इसके बाद वहाँ एक मस्जिद बनवाने के विचार से चार महीनों तक फौज को रोके रखा। तदनन्तर, शङ्खोद्धार द्वीप पर चढ़ाई की। वहाँ के राजा भीम ने २२३ बार युद्ध किया परन्तु अन्त में महमूद का बेड़ा पार उतर गया और बहुत से राजपूत मारे गए। एक छोटीसी नाव में बैठकर भागता हुआ भीम पकड़ लिया गया और अहमदाबाद में लाकर मार दिया गया।[1]

सन् १४७६ ई० की बरसात में सुलतान अहमदाबाद की तरफ गया और शरद ऋतु में मुस्तफाबाद आकर रहने लगा। वहाँ आस पास के जंगलों में वह शिकार के लिए निकलता था। कुछ दिनों बाद वह फिर अहमदाबाद आ गया। एक बार वह शिकार खेलता हुआ अहमदाबाद से ईशानकोण में बारह कोस की दूरी पर वात्रक नदी तक जा पहुँचा। वहाँ उसे ज्ञात हुआ कि लोग अभी तभी लूट पाट कर लेते हैं इसलिए उसके मन में विचार आया कि इस स्थान पर एक नगर बसाया जावे और उसका नाम महमूदाबाद रक्खा जावे। उसी समय नगर की नींव रख दी गई और बहुत जल्दी ही वह बन कर तैयार हो गया।

इसके बाद ही हि० स० ८८५ (ई० स० १४८०) में कुछ मुसलमान सरदारों ने महमूद को पदच्युत करके उसके पुत्र अहमद (मुज़फ्फर) को तख्त पर बिठाने का षड्यन्त्र रचा। सुलतान ने उनका ध्यान बटाने के लिए चाम्पानेर पर चढ़ाई करने के विषय में उनसे मंत्रणा की। परन्तु, वे उसकी बातों में न आए। अतः चाम्पानेर की चढ़ाई कुछ समय के लिए स्थगित रही। बाद में १४८२ ई० में उसने फिर चाम्पानेर पर आक्रमण करने की तैयारियाँ की। परन्तु, उसी समय उसका ध्यान सूरत के दक्षिण में बलसाड़ के जहाजियों की ओर गया जिनका प्रभाव इतना बढ़ गया था कि वे केवल व्यापार ही नहीं करते थे प्रत्युत उनकी ओर से उसके राज्य पर भी हमला होने की आशंका होने लगी थी। महमूद ने तत्काल में एक बेड़ा इकट्ठा किया जिसमें गोलंदाज व धानुष्क तथा गोले चलाने वाले सभी लोग थे। यह बेड़ा जहाजों में बैठकर रवाना हुआ। शत्रुओं के पैर उखड़ गए और सुलतान के बेड़े ने उनका पीछा किया। कुछ देर युद्ध होने के बाद वे भाग गए और उनके जहाज पकड़ लिए गए। इसी वर्ष के अन्त में उसने चाम्पानेर पर चढ़ाई कर दी।

हिजरी सन् ८८७ (१४८२ ई०) में समस्त गुजरात व चाम्पानेर में वर्षा बहुत कम हुई थी। उसी समय सुलतान की फौज का विशेष अफसर मलिक [illegible] अपने लश्कर के साथ चाम्पानेर दुर्ग के पास आ पहुँचा। रावल ने भी किले से

---

(१) द्वारका और बेट द्वीपों पर महमूद ने हि० स० ८७८ (ई० स० १४७३) में विजय प्राप्त करके [illegible] का वहीं का [illegible] [illegible] और [illegible] 'फतहुल मुल्क' का आक्रमण किया।

बेट का राजा भीम १४७३ में मौलाना समरकन्दी के लूटने के अपराध में बाजार बीच टुकड़े टुकड़े करके मार दिया गया (मीराते सिकन्दरी)

अहमदाबाद के सुलतानों में महमूदशाह, यदि सबसे महान् नहीं तो अत्यन्त लोकप्रिय अवश्य हुआ है। जैसे हिन्दू सम्राट् सिद्धराज के विषय में कितनी ही किम्वदन्तियां और अद्भुत कथाएं प्रचलित हैं वैसे ही इसके विषय में भी कितनी ही बातें प्रसिद्ध हैं। महमूद की शारीरिक गठन, शूरता, बल, न्याय, परोपकार, इसलाम पर दृढ़ आस्था, नियम पालन में दृढ़ता और विचारशक्ति की श्रेष्ठता का समानरूप से बखान हुआ है। उसकी 'बेगड़ा' उपाधि के बारे में कुछ लोगों का कहना है कि जिस बैल के सींग दाएं बांएं लम्बे (एक आदमी दूसरे से मिलते समय हाथ बढाए इसतरह) हों उस बैल को हिंदी में बेगड़ा कहते हैं; सुलतान की मूछें इसी तरह की थीं इसलिए लोग उसे बेगड़ा कहते थे। दूसरा मत यह है कि सुलतान महमूदने जूनागढ़ और चम्पानेर के दो किले जीते थे इसलिए वह (बे–दो; गडा–किला) बेगड़ा (दो किलों का विजेता) कहलाता था।[1]

कहते हैं कि, वह बहुत खाने वाला था और इतने बड़े राज्य का स्वामी और राजवैभव में रहनेवाला होने पर भी उसकी जठराग्नि बहुत प्रबल थी। वह कला प्रेमी था और इमारतों का उसे बहुत शौक था। गुजरात की मुसलमानी इमारतों में से अधिकांश के साथ महमूद बेगड़ा का नाम सम्बद्ध है। 'मुस्तफाबाद और महमूदाबाद (चम्पानेर) के अतिरिक्त वात्रक नदी के किनारे उसने अपने नाम से एक और शहर बनाया था जिसके चारों ओर कोट खिंचवाकर अच्छी अच्छी इमारतें बनवाई थीं। इसी नदी के किनारे पर उसने एक उत्कृष्ट महल बनवाया था जिसके अवशिष्ट अब तक वर्तमान हैं।'[2] वह इन्हीं तीन नगरों में से एक में प्रायः बना रहता था परन्तु गरमी के दिनों में जब मतीरे (तरबूज) पक जाते हैं तब अहमदाबाद अवश्य जाता था। मीराते अहमदी के कर्ता ने आगे चलकर लिखा है कि गुजरात देश में जितने शहरों, कसबों और गाँवों में फलों के पेड़ हैं वे सब महमूद के समय में लगाए हुए हैं।[3]

मीराते सिकन्दरी में लिखा है कि अपनी बीमारी की अवस्था में उसने फरमाया कि [illegible] को बुलाओ। परन्तु, वह आकर पहुंचा इससे पहले ही हि० सं० ९१७ के मुबारक रमजान महीने में सोमवार के दिन दोपहर की नमाज के बाद इस फानी दुनिया को छोड़ कर [illegible] हो गया।.... उस समय उसकी उम्र ६७ वर्ष और तीन महीने की थी।

कॉमिसेरियट–हिस्ट्री आफ गुजरात भा० १ पृ० २०७ में लिखा है कि उसकी मृत्यु २३ नवम्बर १५११ ई० को हुई। उस समय वह अपने ६७ वें वर्ष में था।

(१) फरिश्ता।

(२) [illegible] (१०४९ ई०)

(३) [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ २४ ॥ रा० वि० सर्ग १

लड़ाकी लड़ाइयाँ लड़ने के कारण उसकी प्रसिद्धि यूरोपीय देशों तक फैल गई थी। मिस्टर एल्फिन्स्टन ने लिखा है कि इस बादशाह के विषय में तत्कालीन प्रवासियों के बड़े भयानक विचार थे। Bartema (बार्टिमा) और Barbora (बार्बोसा) दोनों ही ने उसका विस्तारसहित वर्णन किया गया है। एक यात्री ने उसके शरीर की बनावट के विषय में भयंकर वर्णन लिखा है। उसके असाधारण मात्रा में भोजन करने और उसके शरीर में विष होने के बारे में दोनों ही लेखक सहमत हैं। विषैला भोजन करते करते उसके शरीर में इतना विष फैल गया था कि यदि कोई मक्खी उड़ती उड़ती आकर बैठ जाती तो तुरन्त मर जाती थी। तत्पश्चात् मनुष्यों को स्वयं [illegible] की उसकी साधारण रीति यह थी कि पान खाकर उन पर थूक की पिचकारी मार देता था। बटलर ने "खम्भात के राजा की बात" लिखी है जिसमें उसका नित्य का भोजन दो जहरी सांप और एक जहरी मेंढक लिखा है। मीराते सिकन्दरी में लिखा है कि साधारण भोजन के अतिरिक्त १५० तोल केले व गुजराती तौल का सवा मन शहद उसके नित्य के भोजन में सम्मिलित थे। रात को सोते समय दो बड़े बड़े भगोने पूओं व बड़े मूंगियों के भरे हुए उसके पलंग के दोनों ओर रख दिए जाते थे। जब तक नींद न आती वह इधर उधर करवट लेकर उनको खाता रहता था। बीच में नींद खुल जाने पर भी वह उन्हें खाने लगता था। वह प्राय कहा करता था कि यदि वह बादशाह न होता तो उसकी जठराग्नि किस प्रकार शान्त होती ?

मीराते सीकन्दरी में इस सुलतान के चरित्र एवं राज्य-प्रबन्ध के विषय में जो विवरण लिखा है वह इस प्रकार है–

"यहाँ यह बात प्रकट करना है कि यह सुलतान गुजरात के सुलतानों में सब ही उत्तम था। न्याय में, धर्म में, संग्राम में, इसलाम धर्म के नियमों पर पालन करने में, बाल्य, यौवन, और वृद्धावस्था में सर्वत्र एकसार उत्तम बुद्धि रखने में, शारीरिक सामर्थ्य में और उदारता में अद्वितीय था। इतने बड़े राज्य वैभव और महान् देश का स्वामी होते हुए भी उसकी भोजन-शक्ति बहुत प्रबल थी।

(इसके राज्य में) "गुजरात देश में एक नई स्फूर्ति आई जो किसी ही समय पूर्व तक न आई थी। सेना सुव्यवस्थित थी और प्रजा निरापद थी। साधु-सन्त स्थिर चित्त से भजन में व्यस्त रहते थे और व्यापारी अपने व्यापार और लाभ से प्रसन्न थे। देश में सर्वत्र शान्ति थी और चोरों का भय नहीं था। सोने की थैली लिये हुए अकेला आदमी पूर्व से पश्चिम तक घूम आता है। हे सम्राट ! [illegible] अब से संसार की सभी दिशाएँ निर्भय हैं। इस प्रकार किसी को पुकार करने की आवश्यकता ही न पड़ती थी।"

"सुलतान की आज्ञा थी कि कोई अमीर अथवा सैनिक अधिकारी युद्ध में मारा जाय या स्वाभाविक रीति से मर जाय तो उसकी जागीर उसके पुत्र को दी

जाय, यदि उसके पुत्र न हो तो जागीर का आधा भाग उसकी पुत्री को दे दिया जाय, यदि पुत्री भी न हो तो उसके आश्रितों के लिये ऐसा प्रबन्ध कर दिया जाय कि उनको जीवन-यापन में किसी प्रकार का कष्ट न मिले। कहते हैं कि एक बार एक मनुष्य ने आकर कहा कि अमुक अमीर मर गया है और उसका पुत्र उस पद के योग्य नहीं है। सुलतान ने कहा कि वह पद उस लड़के को अपने योग्य बना लेगा। इसके बाद ऐसी बातों में किसी को कुछ कहने का साहस न पड़ा।

इस सुलतान के समय में प्रजा सुखी थी इसका कारण यह था कि अकारण ही अत्याचार करके किसी जागीरदार की जागीर नहीं छीनी जाती थी और सरकार द्वारा निश्चित लगान ही ले लिया जाता था। जब सुलतान महमूद शहीद के समय में कार्यकर्ता मन्त्रियों ने देश की उपज की तपास की तो ज्ञात हुआ कि उस समय देश में पहले से दसगुनी उपज अधिक होने लगी थी और गावों में कोई भी किसान निर्धन नहीं था। व्यापारियों को लुटेरों की कोई चिन्ता न थी क्योंकि व्यापार के सभी मार्ग सुरक्षित थे और सुलतान के राज्य में चोर की उत्पत्ति ही न होती थी। साधु-सन्त शान्ति से रहते थे क्योंकि सुलतान स्वयं इस मान्य-वर्ग का शिष्य एवं भक्त था। वह प्रति वर्ष इनकी जागीरें बढ़ाता रहता था और इसके अतिरिक्त भी सन्तों को इच्छानुसार उन्हें अनुदान दिया करता था। यात्रियों के लिये उसने बड़ी-बड़ी धर्मशालाएं बनवाईं और स्वर्ग के समान सुन्दर पाठशालाओं तथा मसजिदों का निर्माण कराया। सुलतान बड़ा न्यायी था और उसके राज्य म किसी को हानि पहुंचाने का किसी का साहस न होता था। उसके विषय में एक कविता में लिखा है कि "अपराधियों पर तुम्हारा ऐसा आतङ्क छाया हुआ है कि कोई कबूतर पकड़ने के लिये बाज नहीं छोड़ सकता है"।

छोटे बड़े सभी वर्गों के लोगों का मत है कि महमूद बेगड़ा जैसा बादशाह गुजरात में पहले नहीं हुआ और न्याय में तो उस के बाद भी कोई समानता न कर सका। उसने जूनागढ़ का किला, सोरठ देश, चांपानेर का किला तथा और आसपास के प्रदेशों को जीतकर वहां पर हिन्दू रीति-रिवाजों को नष्ट कर दिया और इसलामी रीति-रिवाजों को प्रचलित किया, इसलिये कयामत तक जो भी कार्य इन प्रदेशों में होंगे वे उसी के नाम लिखे जायेंगे। उसका पौत्र बहादुरशाह यद्यपि देश जीतने में उससे बढ़ कर हुआ तथापि अनुभव में वह सुलतान महमूद को नहीं पा सकता था। सुलतान तो इन दोनों ही बातों में बढ़ कर था।

'सुना प्रतिभाशाली और भाग्यवान् था; ऐसा था कि वैभव में युवक और युक्ति प्रवृत्ति में प्रौढ़ था।"

"जिस समय यह सुलतान यहां राज्य करता था उसी समय खुरासान में सुलतान हुसेन मिर्जा राज्य करता था और बेनमुन वजीर मीरअली उसके प्रधान मंत्री

के पद पर सुशोभित था। मूर्ति तथा मनोहर काव्यकर्मों के स्थान पर मौलाना कासी प्रतिष्ठित थे जो ईश्वरीय मार्ग एवं मोक्ष प्राप्ति के परम साधन ज्ञान में अनुभवी थे। उसी समय दिल्ली के तख्त पर सुलतान सिकन्दर बहलोल लोदी विराजमान थे। उसके वजीर परम बुद्धिमान और दूरदर्शी दीवान बहलोलखां लोदी थे। उसी समय मांडू के तख्त पर सुलतान महमूद खिलजी के पुत्र सुलतान ग्यासुद्दीन बैठे थे जिनके शासन और उदारता की ख्याति चारों ओर फैल रही थी। उसी समय दक्षिण की गद्दी पर सुलतान महमूद बहमनी वर्तमान था। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि जितने ही वर्षों बाद सुलतान महमूद गजनवी की आत्मा सुलतान महमूद बेगड़ा के रूप में अवतार लेकर आ गई थी क्योंकि उसके सभी कार्य उतने ही प्रतिष्ठित थे जितने कि उस महान् सुलतान के थे।"

"कहते हैं कि जिस दिन सुलतान महमूद गद्दी पर बैठा उस दिन उसके समाई खुदावन्द खां ने जो बड़ा विद्वान और ज्योतिष कला में निपुण था सुलतान के हाथ में दीवान हाफिज की पुस्तक देकर शकुन देखने के लिये प्रार्थना की। ज्यों ही सुलतान ने पुस्तक खोली अनायास उसमें इस आशय की कविता निकली ...... "अरे जिसके शरीर पर बादशाही का जामा आ रहा है और जिसके नमूने के दो मोतियों से बादशाही झलक रही है।"

"इस सुलतान के राज्य में कभी अनाज महंगा नहीं हुआ। प्रत्येक चीज सस्ते मूल्य पर प्राप्त होती थी। गुजरात के लोगों का कहना है कि गुजरात में ऐसी सस्ताई कभी नहीं देखी थी। चंगेजखां मुगल की तरह इसकी सेना ने भी कभी पराजय का अनुभव नहीं किया था। सदा नई-नई विजय इसको प्राप्त होती थी। सुलतान ने एक आदेश जारी किया था कि सेना के आदमियों में से कोई ऋण न ले। उनके लिये सरकारी कर का कोई अंश अलग निर्धारित करके रख दिया जाता था जिसमें से सिपाही लोग आवश्यकतानुसार रकम उधार लेते थे और बाद में जमा करा दिया करते थे। इस प्रबन्ध से व्यापारी लोग अवश्य ही कुछ संकट में पड़ गये थे और इसलिये वे उसकी आलोचना करते हुये उसे बुरा कहा करते थे। सुलतान बारम्बार कहा करता था कि जो मुसलमान ब्याज खाता है वह धर्मयुद्ध में नहीं टिक सकता। इसी कारण परमात्मा उसे युद्ध में विजयी करता था।"

"ईश्वर की कृपा से गुजरात में आम, अनार, रायण, जामुन, नारियल, केले और महुआ आदि के अनेक जाति के पेड़ बहुतायत से दिखते हैं वे सब इसी महाप्रतापी सुलतान के प्रयत्नों का फल हैं। प्रजा में जो कोई अपनी भूमि में पेड़ लगाता था उसको सहायता दी जाती थी। इसी कारण जनसाधारण में बागों की रचना करने व पेड़ लगाने की प्रवृत्ति बढ़ गई थी। इस सम्बन्ध में कहा जाता है कि सड़क पर या किसी झोंपड़ी के आगे सूखता हुआ पेड़ देख कर सुलतान

अपने घोड़े को रोक लेता और पेड़ लगानेवाले से पूछता कि इस वृक्ष को पानी कहां से लाकर पिलाते हो। यदि वह पानी का स्थान कहीं दूर पर बतलाता तो सुलतान कृपापूर्वक वहीं कुआ खुदवा देता और पेड़ बड़ा होने पर लगानेवाले को इनाम देता। फिरदोस बाग जो ५ कोस लम्बा और १ कोस चौड़ा है इसी सुलतान का लगवाया हुआ है। शाबान बाग भी जो स्वर्ग की समानता करता है इसी के समय में तैयार हुआ था। इसी प्रकार जब वह किसी खाली दुकान या मकान को देखता तो वहां के अधिकारी या नौकरों से इसका कारण पूछता और तुरन्त ही उसको आबाद करने का प्रबन्ध करता था। इस प्रकार 'जो दाखिल होता है वह सही सलामत है' इस कुरान की आयत के अनुसार प्रजा उसके राज्य में सुखी थी।'

अनेक लड़ाइयों में विजयलाभ प्राप्त करने से उसकी वीरता व भवनों तथा बाग बगीचों से उसके कला-प्रेम का तो परिचय मिलता ही है, परन्तु कवि उदयराज विरचित प्रस्तुत राजविनोद काव्य से उसके चरित्र का एक और पहलू भी सामने आता है (जिसको प्रायः हमारे इतिहासकार विशेष महत्त्व नहीं दिया करते हैं); वह यह है कि वह कविता प्रेमी भी था। अवश्य ही, कट्टर मुसलमान होते हुए भी, संस्कृत में निगुम्फित उसके इस यशोगान ने उसके मूलतः हिन्दू हृदय को परम सन्तोष प्रदान किया होगा।

राज वि०

२८

राजविनोद काव्यकी आदर्शभूत प्रतिका अन्तिम पत्र

कवि-उदयराजविरचितं

राजविनोदमहाकाव्यम् ।

॥ प्रथमः सर्गः ॥

॥ ॐ नमः सरस्वत्यै ॥ श्री जगदम्बायै नमः ॥

जगत्कर्त्ता विजयते करुणावरुणालयः ।
राजरूपेण रमते यः प्रजानुग्रहेच्छया ॥१॥

राजन्यचूडामणिमभ्युदारमाराध्महे श्रीमहमूदशाहिम् ।
यत्नाभिषेकस्य पदं श्रयेते सरस्वती श्रीश्च समानमेव ॥ २ ॥

एतच्चरित्रे मम लोभ पात्र पदे पदे हन्त मति सरस्वती ।
उदारकीर्त्तेर्महमूदशाहेर्यावद्गुणानेव गुम्फयामि ॥ ३ ॥

अमुष्य राज्ञा परमेश्वरस्य पूजोपहाराय मयोपनीत ।
कवित्वपुष्पाञ्जलिरेष रम्य गन्धामोदभर भजतु ॥ ४ ॥

उत्तरंगाब्धि गरेव रम्या श्रीमान्महमूदशाहे ।
उग्रगुणगुम्फ सिताम्बुज सरस्वती समारुह्य प्रसन्ना ॥ ५ ॥

प्रभु कश्चित् वेत्ति [१०१B] यस्य मनुष्य चतुर्भुजत्वे स्थितपराग ।
विप्रेनिदेशात् प्रथमो द्वितीय सामस्तात्समस्तात् पृथिव्याम् ॥ ६ ॥

दानादय धर्मनिरत विशाल मधुव्रतानामिव पद्मिनाम् ।
सौन्दर्य श्रीमहमूदशाहे यथा सरसुरेश्वराणां ॥ ७ ॥

वीथीषु वीथीषु च गवाक्षान्तर द्वारे नरेन्द्रस्य च मन्दिरेषु ।
सेवी सुरेन्द्रस्य दृशा स्वगात्रे स्वान्स्त्रिया गन्धमाल्यैव ॥ ८ ॥

दिशासु नित्यमहनमाला दीनानामनाथानां प्रमत्त ।
आशासित सर्वदि सुवर्णवीर प्राप्ता सुत श्रीमहमूदशाहे ॥ ९ ॥

महाप्रतिष्ठान्वयमालामणिगुणश्रेणीपूरितोऽसौ
श्रीमानमहमूदशाह राजन्य सर्वार्थमानस्य ।
सारोदोयेयस्योदयावनिप्रणतयोग्यतीर्थ्येषु [१०२A]
युवराज महमूदशाहसुरेन्द्रशोभाभिमानिनः ॥१०॥

आलि ! ब्रह्मसभां सुभाषितरसत्यागेन रुष्टाननां
कृत्वा क्रीडसि भूतले किमिति सा शक्रेण पृष्टाऽब्रवीत् ।
सुत्रामन् महमूदसाहिनृपतेर्विद्याविदां संसदि
स्वच्छन्दप्रसरत्कवित्वलहरीं त्यक्तुं कथं शक्यते ॥११॥

इन्द्रः किं कमलापतिः किमथवा किं वा रतेर्वल्लभः
शृङ्गारः किमु मूर्तिमानिति बुधैस्सोल्लासमालोकितः ।
सञ्चच्चामरवीजितः सुमहच्छत्रेण विभ्राजितः
सोऽयं श्रीमहमूदसाहिनृपतिः सिंहासने राजते ॥१२॥

औदार्यं परमस्य शौर्यमतुलं गाम्भीर्यमुख्यान् गुणान्
प्रेक्ष्य श्रीमहमूदसाहनृपतेराश्चर्यमासेदुषाम् ।
केषां वा विदुषां दधीचिरर्हनि धत्ते न चित्ते चिरं
कर्णः कर्णकटुत्वमेति [पृ०2B] भवति प्रायो बलिर्विस्मृतः ॥१३॥

पूर्णोऽन्यः सुरधेनवः फलभरैर्भुग्नाश्च कल्पद्रुमा-
स्ते चिन्तामणयो दृषद्गुरुतया योग्यास्तुलारोहणे ।
पीरश्रीमहमूदसाहनृपतेः शतानेककोटिम्भरे-
र्जातं दानगुणेन सम्प्रति यतो याच्ञाविमुक्तं जगत् ॥१४॥

चिन्तामणेर्लोचनमार्थिना श्रीः करं च कल्पद्रुमदानशक्तिः ।
वाणी विलासेन न दोग्धि कामान् जिष्णोर्जगत्यां महमूदसाहेः ॥१५॥

उच्चैस्त्रिगद्भूधरपक्षच्छेदैककर्तुः शतकोटिभर्तुः ।
गंल्दयते श्रीमहमूदसाहेर्गण्डस्थलत्वं क्षितिमण्डलेऽपि ॥१६॥

यशोभरैः श्रीमहमूदसाहेर्वसुन्धरायां कुमुदावदातैः ।
उदस्य दोषाकरवंशजन्मा विनिर्मितानां चन्द्रमसां सहस्रम् ॥१७॥

प्राच्यां प्रतीच्यामपि दिग्वधूनामुच्चैरिन्दो [पृ०3A] च्चामुदयं दधानः ।
प्रतापभानुर्महमूदसाहेः करोति निर्वैरिमः समस्तम् ॥१८॥

श्रीचन्द्रभागो महमूदसाहेः सुतन्वतो वैरिनिर्गमनि राहून् ।
तेषां यशश्चन्द्रमसः प्रतापभानोश्च सर्वग्रहणे रणेषु ॥१९॥

संत्रासभानं निपुणं नयस्तु सुरङ्गैर्नाम्यविता रणेषु ।
कृपाणवल्लिर्महमूदसाहेरपि प्रभूतानभिमाननोति ॥२०॥

प्रत्यर्थिनं वधिरयामसमागमोत्सैन्ये पतत्त्रिभिरवक्षितमयगम् ।
धनुर्हि शार्ङ्गं महमूदसाहेर्नाम्नापि पूर्वं धनुर्भुजश्रियम् ॥२१॥

यत्कीयशा श्रीमहमूदभूभुजा हृता हि ये दैनिभिगद्देऽहिता ।
विभिद्य ते मण्डलमुभाज्जनो गताम्बरागण्डमुद्भूष्टवण्डजा ॥२२॥

यस्यां जिघृक्षति महम्मद महमम्मयात् महम्मयस्या ॥ महम्मेन ।
श्रीमा [पृ० ३ B] नगरमहमूदनृप्रयाणे रेणुव्रजे दिनि दिनि प्रविजृम्भमाणे ॥२३॥

किं भास्करोऽभ्युदयानम्मथ्यपर्णी जम्भारिरम्भमृपति विमयाधिरूढ ।
इत्य वदन्ति समुद महमूदसाह दृष्ट्वा विविनिष्टमनयो वरवारणगम् ॥२४॥

दुर्नीतिदावदहन निजमण्डलायपाराजमैत्ताममना महत्तावनीयम् ।
एतेन शान्द्रारण्याम्बुपोन काम गम्भीतिनिम्नगदि पल्लवितेव भाति ॥२५॥

मुक्तोज्ज्वलाभिरभिता स्फिताभुम्भपाराभिरभ्रलगन्ध्रगम्भूताभि ।
यट्टाभिरेतगमये स्वयमेव राजा प्रेम्णा यतेन महिषीव गुणाभिरिक्ता ॥२६॥

लीना कवीन्द्रवपविद्दि प्रकटीभवन्ती भ्रान्ता जगज्जडतामाधियोधिगिता ।
यान्त्रु प्रवासमपुनाऽधिगताऽस्मि मोर विद्यासिवे रनिनस्य गतस्यमुख्य ॥२७॥ [पृ० ४ A]

इति निगद्य गुरुसमोरमं सुतगिर महमूदमहीपते ।
ससगनाभिमुखी स्थित भागनी पुरयोपदिद मधुर यत ॥२८॥

श्रीमान् शाहिमुदस्य स्मभवजनि श्रीगुर्जरक्ष्मारि-
न्तस्मात् शाहिमहम्मदस्मसभवत् शाहिल्लाषोऽस्मर ।
आतस्माहिमहम्मदोऽस्य तनुजो गायासदीनाह्वया
स्यात श्रीमहमूदशाहिनृपतिर्जीयात् तदीयात्मज ॥२९॥

॥ इति श्रीमहाराजाधिराज-जयवरणपानसाह-श्रीमहमूदगुरत्राणचरित्रे
राजविनोदे महाकाव्ये गुरेन्द्रसरस्वतीसम्वादो नाम प्रथमस्सर्गः ॥

॥ द्वितीयः सर्गः ॥

धरामहासिन्धुभवो जगद्वा आसन्तो गर्जरकोरिवेद ।
कर्तोत्तमो यत्र विनयवीर्यं श्रीमान् पुरा शाहिमुदस्तरेन्द्र ॥ १ ॥

श्रीतस्य पार्श्वो[1] कर्णिवास्भीरा कृतस्य महासुपिती[पृ० ४ B]रेव ।
त्स्नोत्पूरद् गुर्जरदेहमैन रसार शो मृद्वं नि नियतरत्नम् ॥ २ ॥

स्पष्टुदितः कस्यामहोद् वेत किल्लोगत्स्ति दलांति महत ।
प्ररुदुंद्विमसांनि याद्रवं प्रशर्म वर्निकमसांनिम्तो ॥ ३ ॥

---

(१) वर्ष-वर्णीकि-स्फुरम् ।

विलङ्घ्य वारांनिधिमेकवीरो [illegible] हीरमगात् करीन्द्रः ।
तस्माद्धिरेवोऽभवदस्यचार हीरे तु तस्त्वपि यत्प्रतापः ॥ ४ ॥

सुतोऽस्य वन्दीकृतमल्लगानमल्लपदीर्घ वल्लवत्तरो यः ।
कृत्वात्मनो मालवराजवन्दिमोक्षप्रदानं विरुदं वहन्ति ॥ ५ ॥

तस्यात्मजन्माहिमहम्मदोऽभूद् यस्य क्षमाभोगपुरन्दरस्य ।
औदार्यगर्वेण जगत्यजस्रं क्वापि दारिद्र्यमयं न मिलम् ॥ ६ ॥

यत्राग मस्य न रिपुं मिनं दस्मिन् दयन्दायुधमेकवीरे ।
पूर्वस्तत[पृ० ५ A]स्मात् [illegible] भोगेस्यन् पुलस्तस्य वल्प्रतीतेः ॥ ७ ॥

उदित्वरो यस्य बभौ जगत्यां सहस्रभानुप्रतिमः प्रतापः ।
यो मल्लखानाख्यमुल्लकमिन्द्रप्रस्थस्य मुक्तेर्जितवान् द्विषन्तम् ॥ ८ ॥

यस्य प्रतिष्ठैर्हिर्नैर्भिनिमप्राकारगौरस्फुरद्गुमालाः ।
अद्यापि तो तस्याधिनाथा भल्लूकवत् पल्लिवने भ्रमन्ति ॥ ९ ॥

तस्मात् समुद्रादिव पूर्णचन्द्रः श्रीमानभूत् साहिमहम्मदेन्द्रः ।
निरन्तरोन्नतवर्णैर्गोभि ज्योत्स्नोज्ज्वलैर्येन जगद् यशोभिः ॥१०॥

दुर्गं [illegible] मण्डपमागतेन ।
[illegible] पदे पदे मालवमण्डलश्रीः ॥११॥

विभज्य दुर्गाणि निरस्य वीरान् हठात् गतागाद्गूर्जरान् निर्जित्य ।
[illegible] [पृ० ५ B] [illegible] ॥१२॥

[illegible] श्रीगुणगौरवेण ।
[illegible] न परे लभन्ते ॥१३॥

[illegible] निखिलसम्पादनाय ।
[illegible] ॥१४॥

[illegible] निरतं निजानाम् ।
[illegible] ॥१५॥

[illegible] श्रीमन्[illegible] ।
[illegible] ॥१६॥

[illegible] [पृ० ६ A] [illegible] प्रवीणः
[illegible] ॥१७

यस्य प्रतापभरतारतमन्नुमेन दग्धस्य सायरगिरे गिरिगह्वरेषु ।
प्रशान्त जर्जरगुहागिरिगुणानि भस्मगाणिक्यानि दिवो निपतन्ति ॥१८॥

निस्वनगामाश्रितनिरन्तरोणा गम्भारम्य मत्ता मदिरारसं ।
यस्य प्रभो पतारेण च पुण्यात् क्षोणीभुजोऽपि दग्धाग्रका प्रयता ॥१९॥

सम्यापगज शिरः सरस्वतापात धीमान्त विजयं मदमत्ताः ।
रणेन गुर्जरम्भुनाद्युगयेव्यमानो भागपुरीतरणविद्रगवादो य ॥२०॥

पूर्वाशिवनिरम्मारिनिर्जितिना शिरोनिर्देशो प्रतापनवि[पृ० ६ B]णो यदुपा प्रयता ।
दुर्गाण्येव गत्वा प्रभुणा स्वकार्या भग्नानि तानि यदपदुर्गपुरशिखानि ॥२१॥

यातो यथाति मरुदवोदरस्य महतो रणे विभज्याशरपट्ट तत ।
प्रर्याविते दिशि यदुपमणिदम्य प्रतापिरंभवदितापिजनाय दत्ते ॥२२॥

[illegible] गत् [illegible] नीतम् ।
अपि [illegible] दृष्टि द्विगतो त्रिभुवनमस्तविमत्य जगति प्रमत्त प्रताप ॥२३॥

सागरेऽपि पुटजैरम मानमनिरोरज्यमान या भूमध-
लवालोरम्यास्वादमधुरिम्या कृता वाटिका ।
आराधना निलिलोद्भिदारंतुरैः प्रशान्ताराम सा-
लवालेन पुराणि पुण्यजनानुनानि ततानि च ॥२४॥

उद्दण्डसुतुण्डनीरनिरच्छाया पर विस्फुरद्-[पृ० ७ A]
वीर्याणामरणीविता पतित्सदाशिलीगत्ना ।
यज्ञो निरन्तरपुण्यंकरे शतो गमता गता
यागाग शिलिला दयाम्य नृपतेर्गोत्रान्तानिद ॥२५॥

मोन्दर्यं गगनगतंजलिति शो च यत्रोम
साम्यै स्पृहणीय गगन भीमेन पुत्र रणे ।
यावो निविडं गगने गर्जित शीघ्रम् ज्यतीमर
भर्तारं मन्युमारुण्यमारा सान्दति शिव प्रता ॥२६॥

आनीतोदग्नीरवाधिविलसत्कल्लोलमालाकरैर
दर्शनैः प्रमदकीर्तिपुञ्जैः सदा नोमिद्गतम् ।
धीमीनानुगतापुरे दष्टर पुरा कृतैर्
रोप्रसन्नपुरिवा दिवतो दुर्ग दुर्गमानम् ॥२७

उच्चैरङ्गनां बिभर्ति वल्गितां या नर्म्मदा मौलिषु
प्रत्यर्थिक्षितिपालमूर्द्ध[पृ० ७ B]सु पुनर्या चक्रवद् भ्राम्यति ।
मान्यानां महतां च येन रूपदे मालेव या भ्राजते
वीरश्रीमहमूदसाहनृपतेराज्ञा जगद् रक्षति ॥२८॥

मर्य्यादां न विलङ्घयन्ति निधयो वारामवारोर्म्मय-
स्तन्द्रार्कावुदयास्तकालनियमं नैवाप्यतिक्रामतः ।
यस्याज्ञावशतश्चरन्ति पतितस्तारा निरालम्बने ।
सोऽयं श्रीमहमूदसाहमवतात् कर्त्ता जगत्तारकः ॥२९॥

इत्थमीयवनपरम्पराः सृजन्ती वाग्देवी विरचितनव्यकाव्यबन्धा ।
शिष्याय निजगुरोः पुरोगताय व्याकर्त्तुं पुनरुदयुङ्क्त राजचर्य्याम् ॥३०॥

श्रीमान् साहिमुदफ्फरस्समजनि श्रीगूर्ज्जरक्ष्मापति-
स्तस्मात् साहिमहम्मदस्समभवत् साहिस्ततोऽहम्मदः ।
जातस्साहिमहम्मदोऽस्य तनुजो गायासदीनाख्यया
ख्यातः श्रीमहमूदसाहिनृपति[पृ० ८ A]र्जीयात् तदीयात्मजः ॥३१॥

॥ इति श्रीमहाराजाधिराज-जरवक्सपातसाह-श्रीमहमूदसुरत्राणचरित्रे
राजविनोदे महाकाव्ये वंशानुसङ्कीर्तनो नाम द्वितीयः सर्गः ॥

॥ तृतीयः सर्गः ॥

उच्चैस्तरां पुरन्दरजितेन प्रहृष्यमाणो ह्रेषितेन ।
नान्देन नादेन च दुन्दुभीनां प्रबुद्ध्यतेऽसौ समये नरेन्द्रः ॥ १ ॥
कृतावगाहो रुचिरं स्वरेण वीणारवैर्मङ्गलगानुगतम् ।
सौभाग्यभाग्योऽस्य विलासगीतैः प्राभातिकं मङ्गलमातनोति ॥ २ ॥
आलोकनीयं नयनाञ्जनाभ्यां निजाननाभ्यामथ मञ्जुलाभ्याम् ।
मुखारविन्दं स्वकराभिरामं प्रबोधकाले विकसायमानि ॥ ३ ॥
प्राभातिकामार्गिकयोः स्वरेण प्रभातिकं वीक्ष्य मुखं नृपस्य ।
सरोरुहं सुन्दरि नान्यजातं सर्वं पुनर्भजति नाभि[पृ० ८ B]नाभौ ॥ ४ ॥
सुवर्णवर्णस्य विभोः करे च रत्नाङ्गदः सुन्दरभिन्दराणाम् ।
स्नानेन तुल्यानि श्रीमहमूदसाहिनरेन्द्रस्य श्रीः ॥ ५ ॥

विराजिते श्रीमहमूदशाहे. सद्भिः सभायामभितो निविष्टाम् ।
कर्पूरवासैः ककुभां मुखानि ताम्बूलयोगः सुरभी करोति ॥ ६ ॥

मृणालसूत्रैरिव निर्मितं यद् अयं नवीनं मुकुटं महीन्द्रः ।
यस्य. शरच्चन्द्रमरीचिगौरमङ्गस्य तन्मण्डनमाविभर्ति ॥ ७ ॥

विरच्येव पूर्णोऽङ्कुर. प्रयत्नात् रत्नैरिव पूर्वं घटितं मयूरं ।
रत्नप्रभाभूरितदिग्विभागमयं महीन्द्रो मुकुटं बिभर्ति ॥ ८ ॥

परिस्फुरत्कुण्डलरत्नरागप्रभाङ्कुरैरञ्जितमास्यमस्य ।
हिमांशुबिम्बं हसतीव गूढं बालातपस्पृष्टसरोजलक्ष्मीम् ॥ ९ ॥

अलं विशालं नृहरेर्विभाति वक्षःस्थलं श्रीमहमूदशाहे । [पृ० ९ A]
लक्ष्मीर्यदालिङ्ग्य सदा सहारं मुदा करोति प्रमदाविलासम् ॥१०॥

अथ भुजाभ्यां स्फुरदङ्गदाभ्यामाश्लिष्टाभ्यां चतुरङ्गलक्ष्म्या ।
विराजते श्रीमहमूदशाहिः साम्राज्यमुद्राङ्कितपाणिपद्मः ॥११॥

पादारविन्दं महमूदशाहेः शिरोऽधिपानां नयमानमानम् ।
दारिद्र्यसन्तापनुदे सदैव यदाश्रयीभिर्जने घन्त्या ॥१२॥

आस्थानमासाद्य गतोऽस्मि सौधप्रान्ते महमूदशाहिम् ।
मुञ्चन्ति साक्षात् मदनायकानां मुदीक्ष्यमाणा मदिरायतास्य ॥१३॥

आसीनमष्टापदपीठपृष्ठे सभासमेतं नरनाथसदम् ।
नीराजय साध्वी नवरत्नदीपैर्मुदा सनि सम्पूज्यमर्चयन्ति ॥१४॥

एवं सदा राजपुरन्ध्रीभिर्मुदा प्रशस्तो परिचर्यमाणः ।
बहिःसभाप्रविशनाय [पृ० ९ B] लोकविलोकनेच्छो गमनं करोति ॥१५॥

सिंहासनं श्रीमहमूदशाहे महेन्द्रमारोहति राजसिंहे ।
सर्वे विराजः प्रसरत् पुरस्तात्सकलस्य कर्णौ नयमानोति ॥१६॥

सहस्रशः छत्रसमाजमाय तिरस्कुर्वन् महमूदशाहे ।
सुवर्णकुम्भध्वजवानिवाधि पताकिनि नागन्दद् दन्तिनाम् ॥१७॥

तत्र प्रगल्भान् दाक्षिणिकोत्तरस्य मन्त्रसंसदाय साभि ।
एतद्वर्षावरपादभावाङ्गरेन्द्रवन्द्य पतिन्योऽजरन्ति ॥१८॥

मारोहमातार्जि सर्वांभीषणाद्दृष्टद्रव्य प्रपन्नोरान्निम ।
भेत्स्यन्ति वै इत्युसिम महेन्द्र सदो नमाज्ञाति पूर्वेपदम् ॥ १९ ॥

निहन्तनम्रस्य पदारविन्दं द्रुतं नमन्त्यस्य नरेन्द्रवृन्दम् ।
तत्पीठभूमौ विलुठन्तु वारा तन्मौलिमाणिक्यमयूखधारा ॥ २० ॥

निरङ्कुशत्वेन मदातिरेका [पृ०१०A] नोज्झन्ति ये स्वैरविहारदर्पम् ।
स्थिता निरुद्धा महमूदसाहेर्द्वारि गजेन्द्रा इव ते नरेन्द्राः ॥२१॥

नतं समासाद्य नरेन्द्रवृन्दैरकुण्ठकण्ठं मधुरं पठन्तः ।
वैतालिकाः श्रीमहमूदसाहं छन्दोविदः संसदि संस्तुवन्ति ॥२२॥

उदात्तलालित्य [illegible] गाम्भीर्यकोटीरगिरः[1] पुरस्तात् ।
दूरात्तगर्वेण कृतप्रणादा यदृच्छयार्थिजना लभन्ते ॥२३॥

यतो यतो भूमिभुजोऽस्य सीमं प्रसादपूर्णः सरतु दृगन्तः ।
ततस्ततः सरति [illegible] लक्ष्मीर्भजते विलास्या ॥२४॥

आकर्ण्य वर्णितरीतरस्यान् सुवर्णदानान् महमूदसाहेः ।
प्रागेव निःशेषमतोऽस्मरद् देशान्तराणि न दीनवृन्दः ॥२५॥

तदीयवाणां महमूदसाहेर्दानप्रमाणितगता द्विजेन्द्राः ।
दानाम्बुना सीतिसरोजि [पृ०१०B] नीता स्फुरत्सुपर्णार्पित भान्ति दन्तैः ॥२६॥

[illegible] महाकवीनां कीर्तिं स्फुरन्ती महमूदसाहेः ।
दिगन्ते [illegible] ॥२७॥

[illegible] भाति नरेन्द्रकोऽसौ व्याप्नोति तेजोमहिमाऽस्य विश्वम् ।
[illegible] ॥२८॥

[illegible] गगनमुर्च्छितगात्र [illegible]
[illegible] महमूदसाहेः ॥२९॥

[illegible] महमूदसाह [illegible] ।
[illegible] ॥३०॥

[illegible] [पृ० ११ A] [illegible] ।
[illegible] ॥३१॥

[illegible] ।
[illegible] ॥३२॥

(१) [illegible]

श्रीमान् शाह्मुदफ्फरस्समजनि श्रीगूर्जरक्ष्माधिप-
　　स्तस्मात् शाहिमहम्मदस्समभवत् शाहिर्गयासोऽस्मदः ।
जातस्साहिमहम्मदोऽस्य तनुजो मायामदीनाम्नया
　　स्यात श्रीमहमूदसाहिनृपतिर्जीयात् सदीयात्मजः ॥३२॥

॥ इति श्रीमहाराजाधिराज-जयवारणपातशाह-श्रीमहमूदसुरत्राणचरिते राजविनोदे महाकाव्ये सभासमागमो नाम तृतीयः सर्गः ॥[पृ० ११ B]

॥चतुर्थः सर्गः॥

भूयोऽन्यभाग्यैः गुणाभिरामा यत्पूर्णचन्द्रप्रभया विशेषेण मेयम् ।
राज्ञोऽस्य देवाधरदत्तरत्नप्रासाद् देशाधिपान् सदसि पश्य कृतप्रवेशान् ॥ १ ॥
देशस्य यस्य महिमानमिवोपगातुं गङ्गा विराजति सहस्रमुखी भवन्ती ।
यद्गम्य तस्य नृपतिं प्रणति विधत्ते प्राचीनयोनिनिधिगमणिनिरत्नपाणि ॥ २ ॥
पुष्पाकरस्य समस्तार्थकणिभानि अवन्तिगुर्जरमुखानि पुराणि तानि ।
अन्येऽन्तरस्य पत्नगा तुल्या धृतानि वाणीरतोनि पुरुष प्रणिपत्य पार्श्वम् ॥ ३ ॥
स्त्रीणां विचित्रवरवेशविभूषणानामये निधाय नगर हृदि गेहजानाम् ।
आगापयत्यमुगनङ्गशिरङ्गरूपमङ्गाधिप गच्छनृपसमुद्गतोऽसौ ॥ ४ ॥
सिंहलानां प्रविशतां मुहु[पृ०१२A]रङ्गदेश्यो हीरैस्समं क्षितिभुजां भुजपट्टनेन ।
हारप्रदेशमतिदृश्यममुष्य पश्यन् मान जहाति किल स्वगुणाधिराज ॥ ५ ॥
आयाति मन्दरनवैर नन्दिहृदयाव श्रीगूर्जरेश्वरनिकटे प्रतिराजभूमौ ।
उद्दामवाजिरमहृतगृहीतपुत्रशतलक्षणमहितश्रीविद्दिशायाम् ॥ ६ ॥
अश्वामेव गमनेषु कृतश्रमा ये प्रागेव गाम्भीर्यममुष्य सभाङ्गणस्था ।
तैस्मौ,विचित्रगुणस्य महतो प्रशस्य प्रोत्फुल्लवाक्यरचना परिरम्भयन्ति ॥ ७ ॥
भवन्त्या च मदवर्धित वायवमेघुलीला स्फूर्जाति मदति सन्तापे गजाद्भुतम् ।
सोऽन्यस्य पत्र वाग्मी यत्र प्राप्त पर्णास्य गम्भीरौसिताम्बुदः ॥ ८ ॥
मुक्तामणिभिः परीधिरितेनयावनुर्घ्नीरवप्रगल्भी[पृ०१२B]रत्न पाद्रि ।
ऐरावतीतिवर्ण्यश्नो दमेन दन्ताविभेर्मति मिन्नभूमिदान ॥ ९ ॥
येन विनेतर्नविद इषपदरेन इन्द्रानवि इन्द्रमुदन्दित्वायायामन ।
गजा विराजितान्ता परिहृत्यमाना(नो) सो डीढु दन्तिद्युत विकास्य ॥१०॥

॥ पञ्चमः सर्गः ॥

ततो मृदङ्गध्वनिना मृगीदृशो मुहुर्वहन्त्योऽभिनयाय विभ्रमम् ।
रणज्झणन्नूपुरसूचितागमा विशन्ति सङ्गीतकरङ्गमण्डपम् ॥१॥

सुगन्धिनानाकुसुमस्रजां भरैः प्रकॢप्तमुद्दिश्य विलासमण्डपम् ।
समागतान्तः पतितो मधुव्रताः सृजन्ति झङ्कारमनोहरा दिशः ॥२॥

समीरणो रङ्गभुवः समुल्लसन् विलेपिना वा घनयक्षकर्दमैः ।
सभाजनं भावयतीव सौरभैः कृतार्थयिष्यन्निव गन्धवाहताम् ॥३॥

समन्ततोऽपि प्रसृतं नृपालये प्रकृष्टकृष्णागरुधूमसञ्चयम् ।
गवाक्षमार्गैर्नियता मुहुर्बहिर्निरस्यता वासितमम्बरं महत् ॥४॥

ततो नुदत्यो निजभूषणस्फुरन्मणिप्रभाभिः परितः पुरन्ध्रयः ।
नृपस्य नीराजनमङ्गलोत्सवं सृजन्ति सायंतनदीपमालया ॥५॥

उदारशृङ्गारमनोहराकृतिर्विभाति राजा कनकासनस्थितः ।
स्फुरत्सुप[पृ० १६A]र्णोपरि सन्निवेशतः श्रयन्मुरारेस्तनुरूपतामिव ॥६॥

सभ समन्तात् परिवृत्य वल्लभं विभान्त्यमूश्चन्द्रमिवोडवः स्थिताः ।
विलोचनैरञ्चितविभ्रमैस्त्रियः कृतोपहारा विकचोत्पलैरिव ॥७॥

इमाः प्रकृत्यैव परं मनोरमाः पुनर्विचित्राभरणैर्विभूषिताः ।
तथा न नृत्याभिनयानुयुक्ताः कथं न रामा रमयन्ति मानसम् ॥८॥

अनन्तरा पाणितलादरि क्षणं [illegible] निबद्धरागया ।
[illegible] स्वर्वीणयाऽन्यया प्रवीणया राजमनो विनोद्यते ॥९॥

[illegible] वादित्रमनेऽपि वेणुना [illegible] ।
यदेव [illegible] मिवोपजीव्यते ॥१०॥

दिगन्तरालेषु नरेन्द्रमन्दिराद् विजृम्भते सान्द्रमृदङ्गनिस्वनः ।
[illegible] ॥११॥ [पृ० १६B]

[illegible] नरेन्द्र [illegible] ।
[illegible] ॥१२॥

इदं [illegible] ।
[illegible] ॥१३॥

(१) पृ० १६ [illegible]

श्रीमान् शाहिमुहम्मदस्समजनि श्रीगुर्जरक्ष्मापति-
स्तस्मात् शाहिमहम्मदस्समभवत् शाहिस्ततोऽप्यह्मदः ।
आसीच्छाहिमहम्मदोऽस्य तनुजो भावाप्रदीनाह्वया
स्यात् श्रीमहमूदशाहिनृपतिर्जीयात् नदीयान्मम ॥३३॥

॥ इति श्रीमहाराजाधिराज-अश्वपतिपातशाह-श्रीमहमूदसुरत्राणचरित्रे राजविनोदे महाकाव्ये सभासमागमो नाम तृतीयः सर्गः ॥[पृ० ११ B]

॥ चतुर्थः सर्गः ॥

भूयोऽप्यभाराद् गुर्जरावनिभारपूर्णा सा पूर्णचन्द्रवदना निदधेन्द्रमेवम् ।
राजोऽस्य येन घनदस्य धनात् देशाधिपान् महसि यस्य कृतप्रवेशान् ॥ १ ॥
देशस्य यस्य महिमानमिवोन्नतुं गङ्गा गिरजाऽपि महस्रमुखी भवन्ती ।
यद्गुण यस्य नृपति द्रवति विपक्षे प्राचीरचीनिरिमन्दमिरसहत्तानि ॥ २ ॥
गृहाणि नानाममहारथमनिभानि स्वर्गेन्दुगन्धर्वविमानसुरालयानि ।
अन्येऽपरस्य यशसा गुम्फा गृहाणि गलीतरोऽपि पुरः प्रविशन्त्य पाण्ड्य ॥ ३ ॥
स्त्रीणां विचित्रवस्त्रैर्नवविभूषणानामथ निधाय सदा हरिणेक्षणानाम् ।
आनायसम्पूर्णनवमङ्गलगानमङ्गलानि गम्यगृहगमनागतोऽसौ ॥ ४ ॥
निर्गच्छतां प्रविशतां मह[पृ० १२A]नृदेभ्यो हीरैःस्फुरं शिविभुजां भवनद्वतेन ।
हास्यदेशमदिवृन्दममुष्य यस्य भात अपि निज मनुजाधिराज ॥ ५ ॥
आवाति गन्धवहैर वनितनाथ श्रीगुर्जरेशशिनिरवे प्रविशत्यभूमौ ।
उद्यानवाटिकानवपुष्पनवसारपल्लवगुहासविशिष्टमायाम् ॥ ६ ॥
अथापरेव नगरेषु कृतोत्सवा ये प्रत्येव नाकनगरमस्य समाहृतामाः ।
मैत्री विचित्रपुष्पदा यथा यथा प्रोन्नतप्रासादश्च परिस्तीर्णवनि ॥ ७ ॥
भवना न मन्दराद्रि गगनस्पृशीनां स्फुरन्ति मणि मन्दिरे समाकुलम् ।
सोऽयम् पुरं यस्य नाम अत्र सुरेश्वर मनुजोऽपि विनिर्मयेत ॥ ८ ॥
मुक्तावलीरिव यशोविनिवेशनानामुच्चैर्महालयशिरो[पृ० १२B]गत पाण्डु ।
तैरावतस्त्विषां स्वर्गोन्मुखेन दन्तावलीभिरपि निर्मलिताः ॥ ९ ॥
येन निशीथिनि रत्नदीपेन हर्म्यशिखरमुद्रीन्दुरश्मिपातेन ।
राजा विराजितशर्वरीन्द्रमुखसमां(सो) सो धीर् हरिनन्दनेन विलासेन ॥१०॥

॥ पञ्चमः सर्गः ॥

इतो मृदङ्गध्वनिना मृगीदृशो मुहुर्वहन्त्योऽभिनयाय विभ्रमम् ।
रणज्झणन्नूपुरसूचितागमा विशन्ति सङ्गीतकरङ्गमण्डपम् ॥१॥

सुगन्धिनानाकुसुमस्रजांभरैः प्रक्लृप्तमुद्दिश्य विलासमण्डपम् ।
समापतन्तः परितो मधुव्रताः सृजन्ति झङ्कारमनोहरा दिशः ॥२॥

समीरणो रङ्गभुवः समुल्लसन् विलेपिता या घनयक्षकर्दमैः ।
सभाजनं भावयतीव सौरभैः कृतार्थयिष्यन्निव गन्धवाहताम् ॥३॥

समन्ततोऽपि प्रसृतं नृपालये प्रकृष्टकृष्णागरु[1]धूपसञ्चयम् ।
गवाक्षमार्गैर्नियता मुहुर्वहिर्नभस्वता वासितमम्बरं महत् ॥४॥

तमो नुदन्त्यो निजभूषणस्फुरन्मणिप्रभाभिः परितः पुरन्ध्रयः ।
नृपस्य नीराजनमङ्गलोत्सवं सृजन्ति सायंतनदीपमालया ॥५॥

उदारशृङ्गारमनोहराकृतिर्विभाति राजा कनकासनस्थितः ।
स्फुरत्सुप[पृ०१६A]र्णोपरि सन्निषेदुषः श्रयन्मुरारेरनुरूपतामिव ॥६॥

समं समन्तात् परिवृत्य वल्लभं विभान्त्यमूश्चन्द्रमिवोडवः स्थिताः ।
विलोचनैरञ्चितविभ्रमैस्स्त्रियः कृतोपहारा विकचोत्पलैरिव ॥७॥

इमाः प्रकृत्यैव परं मनोरमाः पुनर्विचित्राभरणैर्विभूषिताः ।
नवा न नृत्याभिनयाय सोत्सुकाः कथं न रामा रमयन्ति मानसम् ॥८॥

अमुत्रया पाणिनखादपि क्षणं स्खलन्त्यसत्येव निबद्धरागया ।
कलं च गायन्त्यथ वीणयाऽनया प्रवीणया राजमनो विनोद्यते ॥९॥

जितं हि वादित्रजनेऽपि वेणुना स्वयं निषादाधरपल्लवेऽनया ।
वरेण गान्धारिजयेन मुग्धया स्वकण्ठमाधुर्यमिवोपशिक्ष्यते ॥१०॥

दिगन्तरालेषु नरेन्द्रमन्दिरात् विजृम्भते सान्द्रमृदङ्गनिस्वनः ।
अयं नभस्यागमनि गर्जितभ्रमात् कलापमाताण्डवयन् शिखण्डिनः ॥११॥ [पृ०१६B]

कलावतीयं मधुरेण गायति स्वरेण संतानितरागमूर्छनम् ।
निजं मनो मन्मथसायकानलैर्निरोधजागरयत्यनुक्षणम् ॥१२॥

इयं मृगाक्षोत्पलनीलवासिनी विलासिनीनां मधुरागनिर्भरैः ।
मनोरमालापिनि गीतिषु श्रुतेः करोति हुंकारभरेण पूरणम् ॥१३॥

---

(१) गुरु इति क० ।

अन्तःपुरे योऽवनिपैः पदेऽपि ममगुरुत्वमलासन्दिता ।
अवपमेयास्यमनाङ्गनाग विशाला गायति भूपते पुरः ॥१४॥

परैरुदारैर्विरुदैः स्वरैरपि स्फुटैरपि पाटैर्निरुपवर्द्धनम् ।
अमुष्य राज्ञः कलकण्ठभाषिणी कुतूहलाद् गायति हर्षवर्द्धनम् ॥१५॥

प्रियेण पृष्टे स्वयमेव निर्मितं स्वयं च कण्ठाभरणीकृतं प्रियम् ।
सुरस्मिता गायति वीणया समं मनोरमं गानरसस्वरं मुदा ॥१६॥

इयं विनन्ती नवरङ्गमङ्गना स्फुरत्प्रसूनं परिपूरिताञ्जलिः ।[पृ० १७ A]
प्रियस्य सौन्दर्यविनिर्जितान् स्मरात् स्वयं प्रहीतेऽपि भाति मार्गणैः ॥१७॥

समुल्लसन्ती कलकण्ठप्रिया स्मितेन सची कुसुमानि सन्वती ।
इयं कटाक्षभ्रमरोपशोभिता मरोमुक कन्यलेव नृत्यति ॥१८॥

विधाय विश्राम्यति नृत्यमेविका पदानुसाराश्च नृत्यति ।
समानतोऽस्यर्विनिष्टयोर्द्वयोर्विधिस्या नैव पदान्तरम् ॥१९॥

समाननावल्लयोर्विभूषणा प्रगल्भो लास्यविलासमङ्गना ।
इमा सुगन्धीरसनानुकूलनात् करोति मये वकुलाविभ्रमम् ॥२०॥

प्रदीपनतो यदा सुधाविधे स्फुट वपुर्य्य मुदारसान्निभि ।
सर्वैरंधयस्य कुन्तलमध्रिय विपुल्यो भावमपूर्वमङ्गना ॥२१॥

यथाङ्गहारैर्हरिणेक्षणा क्षणात् नव नव बिभर्ति विभ्रमोदयम् ।
तथापि दर्पान्मुखा कुरङ्गिणी जयाय सज्जीभवतीव मन्मथ ॥२२॥[पृ० १७ B]

पदानि लोलान्यपि शिक्षितुं नितम्बिनीना चरणाब्जसङ्गतौ ।
कलं करणिकूर्ममिर्णकायविच्छनैः हंसैरभिराम्यते मरा ॥२३॥

समुच्चयैर्भूरिसभावशोभिता स्फुटं स्तना परिवेशमुच्चयम् ।
नताभ्रुवो बिभर्ति नेत्रयानमनिलस्वच्छन्दनालिता इव भ्रमी ॥२४॥

समीरणं चन्दनमारोपरे प्रगतात्पदयसारितारिभिः ।
करोति रङ्गाङ्गणवेल्लिका वधूजनानां व्यजनोभितोभिर ॥२५॥

वितन्य गन्धीरसने मनो मनाक् प्रगतानवर्णेति चारुनालितो ।
इह चारुयामरस्तोरैत्र समुन्नतास्यायवदननवर्णे ॥२६॥

प्रस्फुरत्मालमधुमातृकम[illegible]दभोर्विम्बितवदनम् ।
इय गुरुरा विलसितान्ता बिभर्ति गन्धार्थ्याग्रकुसुमम् ॥२७॥

दिशि दिशि द्विजनामनिरुन्महो बहिरनादुदयन्निजमन्दिरात् ।
अतिरदीप्तिचयेन समुदीक्ष्यते दिनकरः शरदम्बुधरादिव ॥१४॥

नगरनेत्रगुणान्वितया श्रिया स्फुटतरं बहुरत्नगुणाश्रयैः ।
अवनिरैर्मदनैरिव सङ्गतं नर्तति नाम्बलं मकरध्वजैः ॥१५॥

अथ नृपस्तु ददर्श नगोपुरो निविशतेऽनतिदूरतरे पुरः ।
उपवनेऽनुगतैर्बहुशोऽभितः पुरजनैः प्रणयादुपशोभितः ॥१६॥

अरुणरागभरस्फुरिताम्बरं प्रततरश्मिसहस्रमवेक्षते ।
स्म भुवोऽधिभुवो नवमण्डपं दिनकृतेः प्रतिरूपमिवोदितम् ॥१७॥

सितातपत्रभवैः शरदम्बुदसन्निभैः कटकस्य निवेशभूः ।
हिमगिरेरिव सानुभिरभ्र[पृ० २०A]तलचुम्बिना यत्र न राजति मण्डपैः ॥१८॥

विजयिनः कटकेऽस्य महीपतेः प्रकटितैर्निशि दीपसहस्रकैः ।
प्रतिहता विजनेषु विजृम्भिता रिपुपुरेषु घना तमसां भराः ॥१९॥

अमृतकुम्भमिवेन्दुमण्डलं क्षितिभुजः सुरराजदिगङ्गना ।
अभिमुखं कुरुते धृतमन्मथ[illegible]मर्पितम् ॥२०॥

नीरागिनिनवनाटककौतुकेन निद्रां दृशोः प्रियतमामपि वञ्चयित्वा ।
कं वा न वीरनाटके [illegible] रजनी शिशिरप्रगल्भा ॥२१॥

प्रान्तां [illegible] व्यवनेन [illegible]विभागाः ।
[illegible] वैतालिकाः सूक्तिभिर्वचनानां विलासैः ॥२२॥

[illegible] जनार्दनस्य ।
श्री[illegible] [पृ० २१ A] [illegible] जयश्रियम् ॥२३॥

[illegible] नोज्झति [illegible]म् ।
[illegible] ॥२४॥

[illegible] ।
[illegible] प्रयाति ॥२५॥

[illegible] प्रिया [illegible] ।
[illegible] ॥२६॥

[illegible] ।
[illegible] ॥२७॥

अन्तर्गृह पोष्टानि पर्युषित गन्धमृदङ्गमानतन्त्रिका ।
प्रपञ्चयेन्नाम्यमन्दमन्थरं विभाजना गायति नृपते पुर ॥१४॥

पदैकदारैर्धिरद्रे स्वर्गति स्फुटेन पार्श्वनिपर्वदर्शनम् ।
अमुष्य राज चन्द्रमाशिनी तुरुष्कात् गायति हर्षवर्धनम् ॥१५॥

प्रियेण पूर्ण स्वयमेव निर्मितं स्वय च वल्लभान्वीहृतेप्सितम् ।
सुनिश्चिता गायति वीणया मम मनोरम गायरन्ध्र मुदा ॥१६॥

इय विनन्ती नवरङ्गनङ्गना स्फुरन्मूर्तं पतिभूमिपादजति ॥[पृ० १७A]
प्रियस्य गोऽर्द्धविनिर्जिताद् स्मरात् स्वय प्रहीत्यि भाति मार्गणं ॥१७॥

समुन्नताङ्गी चरणार्पितश्रिया स्मितेन मन्वी कुसुमानि तन्वती ।
इय पताकाम्बरशोभिता मनोभुव धनान्तेव नृ यति ॥१८॥

शिरात विभ्राम्यति नृपमेरिता गगनुगत्वाताग प नृपति ।
समानतोऽर्ध्वविनिष्टयोर्ध्वयोर्विविक्तं नैव पगारस्य ॥१९॥

समानपायस्वरयोर्विभूषणा प्रनन्वमे सम्यगिनागमल्लना ।
इमा गुणङ्गीतरसानुकूलत्वात् करोति मन्ये वहुन्नविभ्रमम् ॥२०॥

अवसंचन्चो वदने सुधानिधे स्फुट वधुर्म्यस्मुतास्यान्निति ।
शरीरधारण कुशेशयश्रिय विनुस्ते भारमपूर्वमङ्गना ॥२१॥

सपाङ्गतार्द्धदीर्घलोचना धनात् भव नव विभाति विभ्रमोदयम् ।
सर्वाङ्गिपर्वाद्भुता गुणज्ञितो जयाय मञ्जीभवतीय मन्मथ ॥२२॥[पृ० १७B]

नवानि लीलाविलासानि निशितु निरम्बिरोला पन्तात्ययनङ्गनं ।
यन्त्र करार्पितार्द्धमंशितसावलिस्तनेन हसेतनिरम्बने मन ॥२३॥

समुन्नवर्धं रसनागोचिता स्फुट दधाना परिवर्तमुज्ज्वलम् ।
नवभूरी विभाति नेत्रागमरितरस्मितलालिता इव असौ ॥२४॥

गम्भीरसं गन्धगन्धोद्गमे प्रसारङ्गधमयाभिलाषिरिं ।
करोति रत्नाङ्गुलीयैश्चालिता वधुकाना प्रसन्नोविलासिनि ॥२५॥

विलग्न मञ्जीरम्यो मनो मनाक् प्रकाशामारघति यन्त्रासिनी ।
इय चारुसंख्यानगतीरंगा ममुन्नतवातानारदवन्दना ॥२६॥

अनुरागोमावनमुरुकमनल्पनङ्गलोर्विलासवदनम् ।
इय मुनेरा विदग्धविनोदिता विभाति समार्पितपञ्चवन्धुकम् ॥२७॥

दिशि दिशि द्विरदाश्वनिरुद्धपथो बहिरसावुदयन्निजमन्दिरात् ।
अधिकदीप्तितरः समुदीयते दिनकरः शरदम्बुधरादिव ॥१४॥

नरपतेरनुकान्तिगता श्रिया स्फुटतरं बहुलागुणाश्रयैः ।
अवनिर्मदनैरिव सङ्गतं चलति चारुबलं मकरध्वजैः ॥१५॥

अथ नृपः स्फुरदभ्रगोपुरो निविशतेऽनतिदूरतरे पुरः ।
उपवनेऽनुगतैर्बहुशोऽभितः पुरजनैः प्रणयादुपशोभितः ॥१६॥

अरुणरागभरस्फुरिताम्बरं प्रततरश्मिसहस्रमवेक्षते ।
इह भुवोऽधिभुवो नवमण्डपं दिनकृतेः प्रतिरूपमिवोदितम् ॥१७॥

सितपटप्रभवैः शरदम्बुदप्रतिभटैः कटकस्य निवेशभूः ।
हिमगिरेरिव सानुभिरुन्नत[पृ० २०A]रैराचिता क्व न राजति मण्डपैः ॥१८॥

विजयिनः कटकेऽस्य महीपतेः प्रकटितैर्निशि दीपसहस्रकैः ।
प्रतिहता विजनेषु विजृम्भिता रिपुपुरेषु घना तमसांभराः ॥१९॥

अमृतकुम्भमिवैन्दवमण्डलं क्षितिभुजः सुरराजदिगङ्गना ।
अभिमुखं कुरुते ध्रुवमुन्नतेरुदयार्घ्यं समौलिसमर्पितम् ॥२०॥

क्रीडाविचित्रनवनाटककौतुकेन निद्रां दृशोः प्रियतमामपि वञ्चयित्वा ।
कं वा न वीरकटके स्मरबन्धुतारा जागर्तेव रजनी शिशिरप्रगल्भा ॥२१॥

प्रान्तां [illegible] पातेन लक्षितविभातनिशाविभागाः ।
जागरयन्ति मधुसूदनमधिराजं वैतालिकाः सूक्तिभिर्वचसां विलासैः ॥२२॥

यस्याङ्गनं पुनरिवोर्मिनिराधिवासे लक्ष्म्याः स्वयम्वरविधौ न जनार्दनस्य ।
श्रीरामनाथनृपनरेन्द्र नितं [पृ०२१ A] नाभात तदनु रणमूर्ध्नि जयश्रियस्ते ॥२३॥

कान्ता [illegible] शिथा प्राणेश नम्रमिव नोज्झितुमिच्छतीयम् ।
व्योमाङ्गनं नृपतिनक्षत्रशीर्णतारा राशिः स्फुटद्विरलतारककुलहारा ॥२४॥

अस्माभिरेतदवनं ननु गीयमानमाकर्णयन्निव यशः श्रवणाभिरामम् ।
चन्द्रः कुरङ्गनयना [illegible] प्रतिनतान्तिकानि प्रयाति ॥२५॥

नागरिकाभिरभिनन्दित [illegible] प्रियां नयति मन्मथनायकस्यम् ।
[illegible] ॥२६॥

प्रातोन्मुखं भगवतान् पश्चिमतः शिशिरं [illegible] ।
[illegible] ॥२७॥

उत्कण्ठया निशि भृशं विरहं विषह्य तीरान्तरेषु सरसः सरसं रमन्ते । [पृ० २१B]
राजन् परस्परविनोदमुपागतानां येनाति हन्त नियतानि रथाङ्गनाम्नाम् ॥२८॥

प्रासादिकेन पवनेन हिमागमेऽपि नृप प्रबोधितस्मरविग्रहाणामिव ।
स्वर्देशिनामविरलं नगरेऽशरीर सिञ्चन्ति लोचनजलैर्हृदयं मनस्य ॥२९॥

श्रीमण्डपे तव नवाद्भुतनाविशिष्टमाञ्जिष्ठमाञ्जिमति मङ्गलगायनीनाम् ।
नित्यागमोत्सवगुणेन मुहुर्धमन्तो वीणारवं मधुरगा नृप गायवन्ते ॥३०॥

दन्तावलेष्वधिकृता युधि योधमुख्यान् प्राणाय बाणनिरमून् प्रतियोधयन्ति ।
धीरा पराभवमपि प्रणयात् सहन्ते मानोज्झिता न नृपगर्वदमाद्रियन्ते ॥३१॥

अन्योन्यमत्सरभृतो नवमन्दुरासु तृणोदरासु तुरगा गुरुलोष्टकैश्च ।
येनो हरन्ति मधुरं नृप हेषमाणा प्राभातिकाय यशसे हयास्तवीया ॥३२॥

नादं समुन्नमति [पृ० २२ A] मर्दङ्गतन्त्रीणां मेघागमगर्जनसमाजनिवेशनानी ।
राजन् सुखानि घनमङ्गलतूरिभेरीभाङ्कारभाञ्जि कुकुभामथ नो भवन्ति ॥३३॥

इति मधुरवचोभिर्मागधैस्तूयमानः क्षितिपतिनतपादाम्भोजनीराजिताङ्घ्रि ।
दिनकर इव भूयस्तेजसा वर्धमानो महमदनृपसूनुः स्वां सभामभ्युपैति ॥३४॥

एवं निगद्य यवनाधिपतिः सदस्या सा मानसमुन्नतिमनुत्तमानलाप्ता ।
एश्वर्यमाजरथिरासमुन्न पटांशराशिप्रपन्नमहमदस्यागीवं ॥३५॥

श्रीमान् शाहिमुदफ्फरस्समभवत् श्रीगूर्जरक्ष्मापति-
स्तस्मात् शाहिमहम्मदस्समभवत् शाहिस्ततोऽहम्मदः ।
तस्माच्छाहिमहम्मदोऽस्य तनुजो गायासदीनाह्वया-
त्तस्मात् श्रीमहमूदशाहिनृपतिर्जीयात् तदीयान्मत ॥३६॥

॥इति श्रीमहाराजाधिराज-सुरत्राणपातशाह-श्रीमहमूदसुरत्राणचरित्रे
राजविनोदे महाकाव्ये विजययात्रोत्सवो नाम षष्ठः सर्गः ॥
[पृ० २२ B]

॥ सप्तमः सर्गः ॥

प्रणामं शुश्रूषो सति चरितमस्य श्रुतिसुखं
नृणां स्वेनांगेन श्रियवति सुरेन्द्रे प्रभवता ।
दधाना सान्निध्यं वदति महमूदक्षितिपतेः
कवीनां वाग्गुम्फैर्मुदमुद्वहत् सा भगवती ॥१॥

[illegible] सैन्यसन्नाहा नव पुरो विन्ध्यं विलङ्घ्यापरा
प्रालेयाद्रितटीस्तीत्वा उदिति प्राचीं दिशं गाहते ।
वीर श्रीमहमूदसाहनृपते धावन्ति सार्द्धं मृगै-
स्तन्मध्ये परिपन्थिनो निपतिताः स्थातुं न यातुं क्षमाः ॥२॥

दिनकरन्यासपनिषण्णगणां पृष्ठानुयानगजवाजिरथव्रजानाम् ।
मध्ये पुनःसन्नद्धैस्तव मृग्यमाणा भ्राम्यन्ति हन्त हरिणैस्सह वैरिणोऽपि ॥३॥

भ्रमन्ति यान्ति परितस्त विलोकयन्ति गह्वरीभवन्ति न विदन्ध दिशो व्रजन्ति ।
मृगाश्च वीरनृपुरजमृगीदृशश्च नेत्रां गतां दधति नापभृतः पुरस्ते ॥४॥

पृष्ठे च [पृ० ३३ A] वक्रकरगाद् [illegible] स्वनारीगणोऽजिनीः पथि विहाय पलायमानाः ।
वीर त्वदीयकटकेन पुरो निरुद्धास्तास्त्वेव [illegible] पुनरापतन्ति ॥५॥

प्राणांस्तृणानि गणयन्ति [illegible] तृणानि लोभाच्च सर्वमिति [illegible] त्यजन्ति ।
[illegible] प्राणवन्तात् [illegible] कृतान्दरीणाम् ॥६॥

[illegible] ।
[illegible] निरं निरंमि [illegible] पुरनिरः ॥७॥

[illegible] प्रतिगजस्य [illegible] ।
[illegible] वीरमहोर्मि [illegible] ॥८॥

[illegible] [पृ० ३३ B] तो श्रेणिगजस्य [illegible] ।
[illegible] नन्नी ॥९॥

[illegible] ।
[illegible] नासानि ॥१०॥

[illegible] ।
[illegible] ॥११॥

[illegible]
[illegible] ।

वीर श्रीमहमूदशाहनृपते त्वत्कुन्तजग्धा पुन-
र्दृष्टिं दैन्यभरान्निबद्ध्य पुरो न ज्ञाता यदि ॥१२॥

राजन् स्यन्दनमण्डलानि बहुधा त्व[पृ० २८ A]त्संभ्रम विभ्रति
भूप गच्छति कोटिशश्च सुभटा कुर्वन्ति नवीनीम् ।
वन्दीर्नक्षिपमावहन्ति गुम्फा दीपोपमा दन्तिनो
मज्जन्ति द्विरदा गुल्फानि धन्विना त्वत्सैन्यपारापरौ ॥१३॥

पारसीकचयाजितजितुरुष्कोत्पुलकसामन्तकी
पूर्वीयानतिपानरीतमन्दिरे गत स्यन्दन गते ।
वीर श्रीमहमूदशाहनृपते त्वत्तोऽमुना नीयते
भूप गेहुपवनचकितो त्वत्सारि सदारे ॥१४॥

यस्यन्ती बहुलविजातमितय तस्ङ्गिणि स्वेच्छया
वीर श्रीमहमूदशाह महता धाटी*भिरावेष्टिता ।
श्रृङ्गारभूषोऽप मर्कटमुखा केचित्त कापालिका
योऽसिरेभृतो नदीजमूगाल् निर्यान्ति निर्वनगम् ॥१५॥

त्वत्ता भूहरिला द्विषा पण्डिता वाहोगमा गयता
मन्मूरा [पृ० २८ B] गमुरैर्जिता गगनत पोतान्वे गर्भले ।
पुर्यन्ताभिमुख प्रहीणविनता नो दीक्षिता एव ते
गर्भस्त्रापगालरैन्य धरे त्व रविनु जीवितम् ॥१६॥

दुष्यद्भिर्मलिमेपलाक्षुणन द्विरदेन रथच्युते
विमर्श*त्वनमर्द प्रविपर भावे पराङ्मुरे ।
कान्तारेऽपि कवि प्रतापनलितिपर्यस्ततोयो
गाय त्वत्कीर्तिलिपिता कुम्भाङ्कुर्वन्ति गमान्तरे ॥१७॥

अद्रे मन्दरमाश्रयन्ति गिरयन्तरन्तिर महान्त
रो कुमञ्जराधिरा पन्नगी शोभातु केसरिण ।
ते भ्राम्यन्ति कान्तारेषु विमुक्तमुक्तालिकाम्यमी
स्वामिन्यद्भुतविभ्रमेण अपि मतुरक्षमदन्तना ॥१८॥

आरोहन्ति गिरि विशन्ति विपिन गाहन्ति सिन्धून्तरे
पाराचाम्यर्जा गर्जित पनितो द्वीरत्न[पृ० २९ A]र गर्जित च ।

---

* स्ती यत्र इति मोरे ।

(1) कस्तनुते इति मो । (2) विपर्दित मो ।

यत्र त्वद्भुयतो व्रजन्ति रिपवो वीर प्रतापः स्फुटं
तत्रैव प्रकटीभवन् हुतवहात् मन्ये जवो धावति ॥१९॥

त्वद्विद्वेषिपुरेषु दावहुतभुग्ज्वालावली जृम्भते
लुम्पन्ति क्षितिमम्बरं हयखुरैरुच्छलिता धूल्यः ।
हेलान्तेऽलकुतूहलादिव भटाः कुर्वन्ति कोलाहलं
[illegible]ल्लिलैर्नश्यन्ति ते शात्रवाः ॥२०॥

आविद्धाः पत्रिभिः शिलीमुखशतैः स्वनप्रसूनोद्गिर-
[illegible]भृतः परिच्छदभरैर्दिगन्तरे वर्जिताः ।
लक्ष्यन्ते न वनान्तरे त्वदरयो राजेन्द्र सेनान्तरे-
स्तुल्याकारतया वसन्तसमये लीनाः पलाशद्रुमैः ॥२१॥

हिमगिरि विपिनस्थानोद्देशाः [illegible]गाहनैः
शिशिरसमयकाले राजेन्द्र भद्रगजास्तव ।
कमलवनिकास्व[पृ० २१ B]स्वा मध्ये कटेषु निशानिला-
निह मधुलिहां झङ्कारौघैर्वहन्ति मदं मुहुः ॥२२॥

अविरलतया निर्गच्छन्तो दिशां युधि नृपवान् विविधनगरीसौधाट्टाल्यप्रपातसमुद्यताः ।
[illegible] क्वचिदपि राजन् मत्ता नदन्ति न दन्तिनः ॥२३॥

रिपुजनरथाक्रान्तौ स्थानं गगनतलश्रियां प्रतिगजघटाकुम्भद्वन्द्वप्रहारविधौ पुनः ।
धरणितलं [illegible] राजन् परिक्रमणे दिशां कटकतुरगैर्व्याप्यन्ते हयास्तव मण्डलीम् ॥२४॥

[illegible]विजितश्रमाः पवन[illegible]वेगैरेते निर्वर्तितमुद्धताः ।
नृप तव हयाः [illegible] त्वदीयगरे रिपूनाम् ॥२५॥

न [illegible] न विन्दति न गालति स्वहृदये न [illegible]पतिः ।
[illegible] ॥२६॥

[illegible] पृष्ठे[illegible]भिराम् ।
[illegible] नृप [illegible] ॥२७॥

[illegible]
[illegible] ।
[illegible]
[illegible] ॥२८॥

[illegible]
[illegible] ।

त्वत्तया खड्गादे[पृ० २६ B]नरपतिरिपवो द्राग् दुर्गमाश्रित्य
राजन् जीवितमात्रशरणमधुना कान्तारगा मान्य ॥२९॥

या शीर्णोपवनेषु दग्धनगरेष्वाक्रोशवीथिभ्रमाद्
देशेषु द्विषतां हठेन हरिणा धावन्ति तृष्णान्धया ।
न ह्येता मृगतृष्णिका नृप भवत्तीव्रप्रतापाग्नि-
प्लुष्टस्य द्युमणेर्निमज्जनकृते तोयाशया सम्भृता ॥३०॥

भग्नानां समराङ्गणे चम्वा वीर त्वया वैरिणा
यद् ग्रामेषु पुरेषु यावनजना देशेषु च स्थापिता ।
एतास्ते महमूदशाह् धरित्रीकोटीश्वर सर्वतः
कीर्तिस्तम्भमिषादुदञ्चितभुजा व्याख्याति पृथ्वी स्वयम् ॥३१॥

अगमदमरकोलीगन्धमायागमाक्षा जितमिव तव भटाक्ष भग्ननाशाग्निपूगाम् ।
गन्धमदविदारी मन्दनामोदवाही प्रियसुहृदिव [1]मृदुनाम्यङ्गमाश्लिष्य सेदम् ॥३२॥[पृ०२७
स्फुरति विरहभाजां दुर्महोऽस्य वसन्तमासागमनाङ्को बाणश्रीरतोति ।
इति हि परभृतानां काकुपूरावगर्भा रचयति नृप वाचा प्रेयसीनाङ्गमार्पम् ॥३३॥
मलयगिरिपवनद्रुमैर्मञ्जरीपुञ्जितानां विनिपतद्भ्रमरास्फालनीयगाभैः ।
प्रतिदिनमुपचित्य गुर्जरक्ष्मापलक्ष्मी रचयति मदनाङ्गैर्नोऽस्तादीय पंत्र ॥३४॥
घनतरमकरन्दैः स्नापिता पल्लवौघैः कलितकलितयाता प्रोन्मदद्भृङ्गमुग्धी ।
स्फुटकुसुमसमग्रैः गान्धवाहोरगर्भैः जयजयशब्दाम्बहारा गुर्जरक्ष्मा ॥३५॥
अपि बहुतरकूपवापुच्चय शोभमाना परवर्षगिरक्ष्मे केशरीवर्धयन्ती ।
नृपकुलतिलके न प्राकारासमवेशा जयति मुहम्मदनाम्ना राजधानी ॥३६॥ [पृ०२७ B]

एतां प्रविश्य नगरीं धर्माढ्यपूर्णां द्वारावतीमिव रमारमण प्रकामम् ।
नानाविधान्यधिवसन् मणिमन्दिराणि राजन् रमस्व रमणीभिरुदारमूर्ते ॥३७॥
सम्भाविता भवस्थितेन सम्यक् शोभाम्बरेषु भवता नृप स्वर्णभूमौ ।
श्रीरागगाढमधुरं रिपुवधूषु प्रेमाधिकेन परिपालय मुक्तोदयान ॥३८॥
एवं विधानि वचनानि कवीश्वराणां कर्णामृतानि कृतवान् नृपशेखरोऽसौ ।
गोवर्धनप्रभृतिभिरयं कृतवर्णशीर्षां राजधियाभिजाता रमते द्रुतमम् ॥३९॥
श्रीमान्गतोऽपि सुविवेकपुरस्कृताना कीर्तिप्रसिद्धितरनरोत्तमस्य ।
आत्माज्ञया यवनाधिपराजराज्य बाल मया विरचितं महमूदनाम्ने ॥४०॥

(१) मृदुमन्द० इति प्र०

प्रयागदानस्य तनूद्भवेन श्रीरामदासेन कृ [पृ० २८ A] ताभियोगः ।
व्यधत राज्यं महमूदसाहेः सदोदयायोदयराजनाम्ना ॥४१॥

[लोकाः सप्त?] विभान्ति यावदनघा यावच्च सप्तर्षयो
यावद्द्वीप्यति सप्तसप्तिरमलो यावच्च सप्तार्णवाः ।
यावत्सप्तशरावरा पुनरिमाः पुर्यश्च सप्तोत्तमाः
राज्यं श्रीमहमूदसाहनृपतेस्तावज्जनैर्गीयताम् ॥४२॥

श्रीमान् साहिमुदफ्फरस्समजनि श्रीगूर्जरक्ष्मापति-
स्तस्मात् साहिमहम्मदस्समभवत् साहिस्ततोऽहम्मदः ।
जातस्साहिमहम्मदोऽस्य तनुजो गायासदीनाख्यया
ख्यातः श्रीमहमूदसाहिनृपतिर्जीयात् तदीयात्मजः ॥४३॥

॥ इति श्रीमहाराजाधिराज-जरवखसपातसाह-श्रीमहमूदसुरत्राणचरित्र
राजविनोदे श्रीमदुदयराजविरचिते महाकाव्ये
विजयलक्ष्मीलाभो नाम सप्तमः सर्गः ॥



विलसति सतां प्रसत्त्या सहस्रमयुत न लक्षमथ कोटिम् ।
महमूदसाहनृपतिः पुष्यति प्रार्थनामेकः ॥१॥



श्रीरामेणात्मजपठनार्थमिदं पुस्तकमलेखि ॥

[पृ० २८ B]

॥ श्री ॥

महमूद (बेगड़ा) का दोहाद का शिलालेख

(वि० सं० १५४५; शक सं० १४१०)

श्री[1]

पातु[2] श्रीरुद्रगामिनी देवी नरा गाहि[3]मुदा [क] स्यादौ
यत्र जगति सिन्धु [उ] – – म[4] पानगाहीना (नाम्) ॥ १ ॥

आदौ श्री [गु[4]] र्जरेशो नृपकुलतिलक [] प्राप्त पु[ण्यै[5]] प्रदेश[]
श्रीमान् शौर्याद्विगारं[?] प्रबुध्मगिरः यो विजित्याधि [न] रपो ।

पश्चात् श्रीमत्तनेस्मिन् प्र [श]स्तगुण ˘ – – –स्वकीर्तिर्यशस्वी
मानी भूपाल्मौल्यिर्यमुकुटमणि[6]र्बीर्यविज्ञानम् [स्ति] ॥ २ ॥

श्रीमान् वीरोऽभवत् शाहिमुदाफरनृपस्तु ।
तत्पुत्रो वीरवि [ख्या]तो महम्मदमहीपतिः ॥ ३ ॥

तस्यान्वये — ˘ ˘ – प्रभूत प्रतापवनताशिरमाल्देन. ।
वीरः सदा श्रीमदहम्मदेन्द्रो राजा महीमण्डलमण्डनाय ॥ ४ ॥

य सर्वधर्मार्थनिशाम्यागतंस [पुत्रो नृप] महमान ।
जित्वा मही माल्यवताधिपस्य जयाद् महेन्द्रोपम च पश्चात् ॥ ५ ॥

तस्मात्सुतर्भूमिपतिः प्रतापवीर [] सदा शाहमहम्मदो ऽभूत् ।
दाता जगज्जीवनजातकीर्ति [र्यस्य प्रभावो] विदित पृथिव्याम् ॥ ६ ॥

शाहश्रीमहमूदवीरनृपति श्रीप्राप्त [वीर] प्रभो-
विख्यात ˘ ˘ – [8]उदारपतितो जातोन्वये वीर्यवान् ।

यो गर्जनाशधि [र] ˘ – प पदवी – – सदामेन[10] यं
सर्वं विक्रमभूपति च जितवान् शाहस्यार्थनागे गुरम् ॥ ७ ॥

गाजर प्राप्य निज प्रग[11]म [वड]नो दानानिधी [शी] जित
पश्चात (?) तिजदिशानि श्रावारेस – [12] जित्वा रिपुम् ।

---

(१) यह अक्षर अब बहुत ध्वस्त दिखाई पड़ता है। इसके पहले सम्भवतः 'ॐ' ... होगा। (२) ... होना चाहिए। (३) शुद्ध शब्द '...' है। ... श्लोक में ... लिया है। (४) सम्भवतः यहां '...' पद है। (५) अब इस अक्षर को ... देखी है। (६) पाठ ... है। (७) ... यहां ... दिया गया है। (८) '...' होना चाहिये। (९) ...(?) (१०) ... होना चाहिए। (११) यहां ... लिया गया है जो अनावश्यक है। (१२) सम्भवतः '...' होना चाहिए।

[तस्यो वै]रं (र) मनागिरस्य नकलं देशं नवं भूधरे-
　　　　र्गत्वा श्रीमहमूदशाहनृपतिश्चक्रे मतिं [रि] पते ॥ ८ ॥

तस्मीनंगनगेन्द्रसंगतभवान् चौहयादरेण [स्वकं]
　　　　गुर्जं चाक्रतविक्रमं [स कृतवान्] भूपः स्वसेनाजनैः ।
जित्वा दुर्गमशेषवैरिविहितं यो जीर्णं नगं ⏑–[1]
　　　　कीर्तिस्तंभमिदं चकार नृपतिस्तद्वैवतं पर्वतम् ॥ ९ ॥

चंपक – –[2] पश्चात् नं – – वैरिकुल(ला?)कुद्दाल [:] ।
जित्वा पावक [दुर्गं] पिता मद्रं प्रतापतापू[3](वंम्) ॥१०॥

　　　　महमूदमहीपालप्रतापेनैव पावकम् ।
　　　　प्रविश्य ज्वालित [सर्वं] वैरिवृंदं पतंगवत् ॥११॥
　　　　जीवंतं तस्यापि व[द्ध्वा] दुर्गं [नी] त्वा महाबलम् ।
　　　　चकार नम्रं राज्यं महमूदमहीश्वर [:] ॥१२॥

ज्ञात्वा गुणैः [ ] समंभिः सुदारैर्नं कुलीनं नृपवंशजातम् ।
मुख्यं चतागत्य गृहे महीशः न सेवके [श्यो]भिकमानदानैः ॥१३॥
पश्चादि [पं] सेवा [मि] सर्वागमिमादत्वं कार्यंकरं विदित्वा ।
आ – ⏑ – – ⏑ नदाभिमुरं नद्वाय – – ⏑ ⏑ देशर[4]क्षाम् ॥१४॥
[तत्] मीत्वंशे नृपतिश [स्तो] न (नः)– – ⏑ मोभूदतुल्यप्रतापः ।
न – हन गा मं (नां) नागरीन – नृपते – ⏑ ⏑ नारकीर्त्तिः ॥१५॥
तस्मात् संवत्सरेज – – – मतिर्न क्षिती – – –(:)
मा (मी) प्रतापवान् वीर (रो) दिग्यान [ ] पुण्यकर्मणि ॥१६॥
गरा(गे)ड मही[पा]लोनाद्रीप्रतापवान् ।
पार्वतीनिरतं शीलसद्भिन्नमीडिमाद्य. ॥१७॥
तस्मीदेवाभिधानं च पुण्यं पुण्यमतिस्तदा ।
दुःखान्तिनो गाज्य[5] दुर्गमिनं चकार नै ॥१८॥
[पितानी] ⏑ ⏑ – ⏑ मौरि: [निवृत्त] संगोभितस्तोन्नत्
　　　　पूर्वं पुण्यतरेन मं ⏑ ⏑ – – – ⏑ – – ⏑ – ।
नानार्थं – दर्शार ग[6] मतर्थं नानेन निर्माजितं
　　　　मोद नीर प्रमाने [अनूप] सिद्धं नानारूपमयम् ॥१९॥

(१) [illegible] । (२) '[illegible]' [illegible] । (३) [illegible]
[illegible] । (४) [illegible] ऐसा मालूम होता है । (५) [illegible]
(६) '[illegible]' [illegible] है ।

अहम्मदपुर्गनम्य. कूपो यस्य विराजते ।
जगज्जीवनदानेन यशोराशिमिवोद्वहन् ॥२०॥

य [।] श्रीमन्महमू'दात्कृपया श्रीचपकाम्ये पुरे
¹—[श्री] निविवर्द्धन सुविपुल तापत्रयोन्मूलनम् ।

मानदेन चकार मानससम 'मन्युप्कर' भूतले
सोय वीर इमाद्ल्मैद्रनृपनिर्दुर्गं चकारोत्तमम् ॥२१॥

बागृ्राधिपतिर्यस्य जयदेवो म – ट ‿ [।]
· · · · मिर्पनिन्ये लूपजीवशिर [;] स्वयम्² ॥२२॥

मनाशेरा [नृरि] पून् हन्त्वा कृत्वा दिग्विजयोदयम् ।
गायदुर्गं ममभयत् योमो वीर इमादल. ॥२३॥

· (रावल) वेगनेन मरन्द सद्वैरिवृन्द स [था]
लि – विमुवन गोलवगणं सहत्य चूर्णीकृ [तम्]

दुर्गं दू [र्गं] यन्त्री विजित्य सबल प्रोद्यत्प्रतापेन यो
धर्म्मंद्र रमिद प्रहात्महित स – ‿ पा – दंदी³ ॥२४॥

बागृ [म] मूग म्बक प्रह [म्य प्रग] षडमूनी-त्यपालरनां ।
य. पावरे पूर्वंवि [रु] ढ भर्ता ि यच्यंते वास्य जयस्य वार्ता ॥२५॥

दधिपद्रे दधिप्तर दुर्गं वै दुमह · · · ।
श्रीमदिमादल्मुल्को दान · सुदरश्चक्रे ॥२६॥

श्रीनृ।शिरनार्वमसमयानीत सवत् १५४५⁴ वर्षे शाके १४०१०⁵ वर्षे प्रवर्तमाने वैशाख सुदि १३ · · · · · · · · शुभे दिने मलिक श्रीइमादल्मल्कि दुर्गं उद्धरे [श्रीरस्तु] जे गढ पोलि नी पारी ते षगरी · · · · · तिम · ।



(१) 'पुम्'
(२) अर्थ स्पष्ट नहीं है । (३) मध्ये दृत्तानिपदंडी ।
(४) १५४ और ५ के बीच में एक बिन्दु सा दिखाई देता है । संभवत पत्थर की खरोंच है ।
(५) १४ और १० के बीच का बिन्दु अनावश्यक है ।

महमूद बेगड़ा के समय का दोहाद का शिलालेख[1]।

(वि० सं० १५४५; शाके १४१०)

मूल लेख के संपादक

डा० एच्० डी० सांकलिया, एम्० ए०, एल्-एल् बी०, पीएच्० डी० (लन्दन)

यह शिलालेख प्रिंस आफ वेल्स म्यूज़ियम, बम्बई में सुरक्षित है। उक्त म्यूज़ियम के संरक्षकों के सौजन्य से प्राप्त लेख की छापों एवं मूल शिला से मिलान कर इस लेख को सर्वप्रथम अभी प्रकाशित किया जा रहा है। पुरातत्त्व विभाग के क्यूरेटर श्री जी० सी० आचार्य व श्री आर० डी० आचार्य ने इस लेख के कुछ अंशों को पढ़ने में सहायता की है अतः सम्पादक उनका आभार मानता है। जिस पत्थर पर यह लेख खुदा हुआ है वह ३ फीट ८ इंच लम्बा और १ फुट ७ इंच चौड़ा है। कहते हैं कि यह पत्थर दोहाद नगर से प्राप्त किया गया था जो बम्बई प्रेसीडेन्सी में बड़ौदा से उत्तरपूर्व में ७७ मील पर स्थित है। दोहाद पंचमहाल जिले के सबडिवीजन का प्रधान नगर है। दो लम्बी दरारों के अतिरिक्त कई जगह से इस पत्थर की पपड़ी उतरी हुई है जिससे इस लेख की [illegible] नष्ट हो गयी है। [illegible] इस पर सिन्दूर [illegible] और कुछ रंगीन [illegible] जिससे [illegible] और भी बढ़ जाती है। इस लेख में कुल ४८ पंक्तियाँ लिखी गई हैं, परन्तु [illegible] की दो पंक्तियों के बहुत से अक्षर बिलकुल [illegible] गये हैं। [illegible]

यह लेख [illegible] सुदी १३ विक्रम संवत् १५४५, शक संवत् १४१०, का है (संवत्सर [illegible] शक संवत् और [illegible] का नाम भी खुदा हुआ था जो बिलकुल नष्ट गया है)। [illegible] २४ अप्रैल १४८८ ई० ([illegible]) [illegible] है। तिथि के विषय में [illegible] विक्रम संवत् तथा शक संवत् दोनों ही खुदे हुए हैं। [illegible] महमूद के समय के [illegible] शिलालेखों[*] में

[1] [illegible] (भाग [illegible])
[illegible]

[2] [illegible]

[*] [illegible]
[illegible]

नहीं करना गया है वरन् उसको भारत के दूसरे लेखों में भी ऐसा ही पाया जाता है। काठियावाड़ में प्राप्त *इसी काल के शिलालेखों† पर केवल विक्रम संवत् ही पाया जाता है।‡

लेख की लिपि देवनागरी है और इस विषय पर विशेष प्रकाश डालने की आवश्यकता नहीं है।

शिलालेख की भाषा संस्कृत है और आरम्भ में मङ्गलाचरण व अन्त में [illegible] गद्य के बाद के अन्त के अतिरिक्त सम्पूर्ण लेख पद्य में है।

दुर्भाग्य से अन्त की तीन पंक्तियाँ बहुत ज्यादा घिस गई हैं और यह ठीक-ठीक पता लगाना सम्भव नहीं है कि यह लेख महमूद बेगड़ा के राज्यकाल में खुदवाया गया था अथवा उसकी स्वयं की आज्ञा से उसके कार्यों का इतिहास अंकित करने के लिये तैयार किया गया था। इन पंक्तियों से जो कुछ आशय निकलता है वह इतना ही है कि यह लेख महमूद बेगड़ा के मुख्यमन्त्री इमादुल-मुल्क द्वारा दधिपद्र (दोहद) के दुर्ग का निर्माण कराए जाने के बाद ही खुदवाया गया था। सम्भवतः इसमें गुजरात के सुलतानों की वंशावली, उनके कार्यों और मुख्यतः महमूद के वीरकृत्यों का भी वर्णन आ गया है। यह पहला ही शिलालेख है जिसमें महमद बेगड़ा और उसके पूर्वजों के कार्यों का अर्थात् उनकी बनवाई हुई इमारतों व उनकी जीती हुई लड़ाइयों का विवरण दिया हुआ है।¶

* देखो भाण्डारकर, लिस्ट आफ इन्सक्रिप्शन्स आफ नार्दर्न इण्डिया (List of Inscriptions of Northen India.) सं० ७९३ और ११२७, ७९६ और ११३१; ७३७ और ११२७, ७४८ और ११२८, ७५७ और ११२९, ७७१ और ११३०, ८३१ और ११३६, ८०१ और ११३८, ८६७ और ११४६।

† देखो डिस्क्लाइज लिस्ट Revised List etc पृ० २३६-२८, २४८-४९, २५१, २५८, २५७, २६३।

‡ इससे पता चलता है कि सल्तनत का प्रभाव [illegible] काठियावाड़ में १३वीं शताब्दी के अन्त तक नहीं [illegible] हो गई थी।

¶ यह लेख के प्रकाशित अन्य शिलालेख [illegible] —डिस्क्लाइज लिस्ट, गुजरात [illegible] पृ० ३०३ [illegible] ASI १९२७-२८ पृ० १८६ में प्रकाशित हुआ है [illegible] गुजरात के उन सुलतानों के नाम दिए हैं जिनका [illegible] था। [illegible] १९२९-३० पृ० ४ में प्रकाशित हुआ है।

[illegible] —भण्डारकर लिस्ट पृ० ३१० [illegible] Inscription Rev. List पृ० ३००, [illegible] पृ० २९८।

१५०० ई० तक के सभी लेखों [illegible]

यह लेख मङ्गलाचरण से आरम्भ होता है जिसमें काश्मीरस्वामिनी देवी§ को नमस्कार किया गया है। इसके बाद मुजफ़र पातशाह का उल्लेख है जो गुजरात के मुजफ़्फ़र प्रथम के अतिरिक्त और कोई नहीं हो सकता।

उसके बाद गुजरात के सुलतानों की वंशावली इस प्रकार दी हुई है:—(१) शाह मुज़फ़्फ़र (२) उसका पुत्र महम्मद (३) उसके वंश में उत्पन्न शाह अहमद (४) तत्पुत्र शाह महम्मद (५) उसका वंशज शाह महमूद।

यह वंशावली मुस्लिम इतिहासकारों द्वारा दी हुई (एवं कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया* द्वारा स्वीकृत) वंशावली से भिन्न है। इस पर नीचे विचार किया जाता है।

फरिश्ता,† मीराते सिकन्दरी,‡ मीराते अहमदी¶ और अर्रबिक हिस्ट्री ऑफ़ गुजरात|| के लेखकों ने सुलतानों की सूची इस प्रकार दी है:—

राजपूत राजाओं के, उनके मुसलमान प्रभुशासकों का उल्लेख है। उनमें से प्रस्तुत लेख के समय का निकटवर्ती एक ही लेख राजपूताने की जोधपुर रियासत के अन्तर्गत नाणू नामक स्थान का मिला है। यह लेख संग्रह में है और वि० सं० १३७३ का है। [illegible] इसमें शहाबुद्दीन गोरी से अलाउद्दीन खिलजी तक दिल्ली के बादशाहों की नामावली दी है। देखो जि० १८, पृ० १३-२३।

§ [illegible] के समय के दूसरे लेखों से इस देवी को पहचानने में सहायता नहीं मिलती। सम्भवतः यह शारदा सरस्वती देवी है क्योंकि गुजरात के एक लेखक चन्द्रप्रभसूरि (१२७८ ई०) ने भी अपने प्रभावक-चरित (सं० हीरानन्द शर्मा, बम्बई १९०९ ई०) के हेमचन्द्र प्रबन्ध खण्ड में 'देवी काश्मीरवासिनी' पद का प्रयोग किया गया है (पद्य ३९–४६)। उसमें यह बताया गया है कि हेमचन्द्र ने काश्मीरवासिनी ब्राह्मी देवी को प्रणाम किया और 'सिद्धसारस्वत' हो गया। [illegible] काश्मीर के शारदा-स्वामिनी दुर्गा सरस्वती से भी तात्पर्य हो सकता है। यह मंदिर ११वीं और १२वीं शताब्दी में भारतवर्ष में खूब प्रसिद्ध था। देखो—स्टीन का 'राजतरंगिणी [illegible] काश्मीर,' भा० २, पृ० २७९।

* जिल्द ३, पृ० ३१४ और ७११

† ब्रिग्स कृत फारसी से अंग्रेजी अनुवाद—'हिस्ट्री ऑफ दी राइज़ आफ दी मुहोमेडन पावर' जिल्द ४, पृ० १-६। यहां पृ० ५-६ पर फरिश्ता ने किसी इतिहासकार का हवाला नहीं दिया है परन्तु लिखा है कि मुजफ्फरशाह ने अपने पुत्र को दिल्ली [illegible] पूर्व [illegible] 'नसीरुद्दीन मोहम्मद शाह' की उपाधि प्रदान की।

‡ [illegible] अनुवाद पृ० ७, इसमें भी लिखा है कि [illegible] ने स्वतन्त्र होने के पहले [illegible] को नासिरुद्दीन मुहम्मदशाह की उपाधि दी थी।

¶ [illegible] (अं०) [illegible] पृ० ३६४-३६६, ३७१-७२;

|| [illegible] (अं०) पृ० १, ३, ९४, ९०८ (देखो जिल्द ३ परिशिष्ट)

(१) मुजफ्फर शाह (मुजफ्फर प्रथम) (२) अहमद शाह (अहमद) (३) उसका पुत्र मुहम्मदशाह (मुहम्मद), (४) उसका पुत्र कुतुबउद्दीन (कुतुबद्दीन अहमद शाह), (५) दाउद (दाऊद) और (६) महमूद (महमूद प्रथम), मुहम्मदशाह का द्वितीय पुत्र।

इससे विदित होगा कि इस लेख की वंशावली में क्रमांक (४) व (५) के अर्थात् मुहम्मदशाह के पुत्र कुतुबुद्दीन* और उसके भाई तथा कुतुबुद्दीन के चाचा दाऊद के नाम नहीं दिए हुए हैं। परन्तु इसमें महम्मद (जिसको मुसलमान इतिहासकार मुहम्मद लिखते हैं) का उल्लेख अवश्य किया गया है। मुहम्मद का असली नाम तातारखां था और उसको यह उपाधि, उसके दिल्ली रवाना होने से पहले, उसके पिता जफरखां ने प्रदान की थी।† यह घटना उस समय की है जब जफरखां दिल्ली के बादशाह की ओर से गुजरात में सूबेदार ही था और वहां का स्वतन्त्र शासक नहीं हुआ था। प्रस्तुत शिलालेख में महम्मद का 'महीपति' की स्थिति में वर्णन किया गया है। सम्भवतः उसके लिए इस उपाधि का प्रयोग महम्मद के उपरिवर्णित अल्पकालीन प्रभुत्व का स्मरण कराने के लिए ही किया गया हो। यह बात इस कारण से और भी सत्य प्रतीत होती है कि उसे 'महीपति' लिखने के अतिरिक्त इस लेख में उसके द्वारा विजय की हुई किन्हीं लड़ाइयों का उल्लेख नहीं किया गया है।

परन्तु, इन कुतुबुद्दीन और दाऊद के नाम इसी शिलालेख में छोड़ दिये गये हों ऐसी बात नहीं है, दूसरे दो अरबी शिलालेखों में भी ये नाम नहीं मिलते हैं। एक लेख तो स्वयं महमूद‡ का है और दूसरा बाई हरी की बनवाई बावड़ी¶ में प्राप्त हुआ है। महमूद के सिक्कों§ और अन्य बयानों में भी इसका पता नहीं चलता है। इसके अतिरिक्त इन लेखों में भी मुजफ्फरशाह के पुत्र मुहम्मद (तातारखां) को मुहम्मदशाह लिखा है जिसका अर्थ यह निकलता है कि वह गुजरात के स्वतन्त्र सुलतानों में से था।

इस वंशावली के सम्बन्ध में दो बातें और ध्यान देने योग्य हैं। (१) यद्यपि अहमद (क० २) और महमूद (क० ५) क्रमशः महम्मद (क० ३) और शाह महम्मद (क० ४) के पुत्र थे परन्तु जिस प्रकार इन दोनों को स्पष्टतया क्रमशः मुजफ्फर और

* देखो—ऊपर बताए हुए इतिहासकारों की लिखावटें।

† मिरात—पृ० ९; फरिश्ता—पृ० ६, बर्ड—पृ० १३१ पर लिखा है कि तातारखां ने अपने पिता को कैद करके नासिरुद्दीन मुहम्मद शाह की पदवी धारण की और बेले में पृ० ८०४ पर लिखा है कि मुहम्मदशाह उसका नाम था और नासिरुद्दीन उसकी उपाधि थी।

‡ एपि० इण्डो-मोस्लेमिका Ep. Indo-Mos., 1929–30 P. 4

¶ इण्डियन एण्टि०, भा० ४, पृ० ३६७

§ देखो—प्रिन्स आफ वेल्स म्यूजियम बम्बई का सूचीपत्र, गुजरात के सुलतान, पृ० २३

अहमद का पुत्र लिखा है इस प्रकार उनके बारे में स्पष्ट न लिखकर "उनके वंशज" इतना ही उल्लेख किया है। (२) कुतुबुद्दीन और दाऊद के नाम इस सूची में नहीं दिये गए हैं। दाऊद का नाम न देने की बात समझ में आ सकती है, क्योंकि उसने बहुत ही थोड़े समय राज्य किया और वह इस वंश का क्रमानुयायी भी नहीं था; परन्तु कुतुबुद्दीन तो मुहम्मद का ज्येष्ठ पुत्र था और उसने ७ वर्ष तक राज्य किया। यद्यपि ७ वर्ष का समय कोई लम्बा समय नहीं कहा जा सकता परन्तु उसका राज्यकाल नगण्य भी नहीं माना जा सकता। इसलिए, इन लेखों में इसका नाम न पाये जाने का कोई कारण† समझ में नहीं आता है। ऐसा हो सकता है कि महमूद के समय के सभी अरबी और संस्कृत के लेखों में मुहम्मद (प्रथम) का नाम उल्लिखित करने का और कुतुबुद्दीन व दाऊद का नाम निकाल देने का कोई विशेष कारण रहा हो, जो अब तक ज्ञात नहीं हो सका है। परन्तु, यह कहना तो संगत नहीं होगा कि इन लेखों के लिये जिन साधनों से जानकारी प्राप्त की गई थी वे इतने विश्वस्त नहीं थे जितने कि उन इतिहासकारों की जानकारी के स्रोत जिन्हें हम जानते हैं। फिर, महमूद में और इन दोनों में इतनी अधिक पीढ़ियों का अन्तर भी नहीं है कि उनके परवर्ती आलेखों में उनको सहज ही भुलाया जा सके। वरन्, ऐसे आलेखों में तो उनके विषय में बाहरी लोगों की अपेक्षा और भी अधिक जानकारी की सामग्री मौजूद होनी चाहिये। सम्भवतः विभिन्न इतिहासकारों और लेखों से प्राप्त वंशावलियों में भिन्नता होने का यही कारण हो (कि वे इन मुसलमानी वंश आलेखों पर आधारित नहीं हैं)।

इस लेख से हमें जो दूसरी जानकारी प्राप्त होती है वह यह है कि इसमें मुजफ्फर शाह को 'गुर्जरेश्वर नृप प्रभु' लिखा है। इस 'नृप प्रभु' उपाधि से, दिल्ली के बादशाहों‡ की सेवा करते हुए, १३९६ ई० में मुजफ्फर द्वारा गुजरात के स्वतन्त्र राज्य की स्थापना की ओर संकेत किया गया है। इस राज्य की राजधानी पट्टन थी जो प्राचीन काल में गुजरात के चालुक्यों के समय (९६०-१३०० ई०) में अनहिल पट्टन के नाम से प्रसिद्ध थी। दिल्ली के सम्राट मुहम्मदशाह के सूबेदार की हैसियत से मुजफ्फर द्वारा गुजरात के विद्रोही सूबेदार फरहत-उल्-मुल्क और अन्य पड़ोसी सूबों पर विजय§ का उल्लेख इस प्रकार किया गया है:—

* बॉम्बे गैज़ेटियर [illegible], भा० १, पृ० २४१–२४२; ब्रिग्ज़–पृ० ३- [illegible]; [illegible] ४१, [illegible]।

† [illegible] ([illegible] ३ पृ० [illegible]) में लिखा है कि [illegible] (ब्रिग्ज़–जि० ४ पृ० ३९)

‡ [illegible] जि० ३, पृ० २९१-९४

§ [illegible] पृ० ८-१०, [illegible] ४-५; ९-१०, [illegible]

“नृपकुलं अरिरं यो जितिय अधिनम्यु”

मुजफ्फर के पुत्र महम्मद को केवल 'महीपति' लिखा है। जब तक कोई विशेष वृत्तान्त प्राप्त न हो, इस उपाधि से कोई तात्पर्य नहीं निकलता है। वास्तव में न तो महम्मद अपने पिता का उत्तराधिकारी हुआ और न इतिहासकारों ने ही उसके विषय में कुछ अधिक लिखा है। अतः उसके लिए इस साधारण उपाधि का प्रयोग उपयुक्त ही जान पड़ता है।

महम्मद के बाद अहम्मद हुआ। उसके विषय में लिखा है कि वह महीमण्डल का भूषण (भूषण) और सब धर्मों पदार्थों और विचारों को जानने वाला और पालन करने वाला था। उसने अपने पराक्रम से मालवाधिपति का आक्रमण ही नहीं किया वरन उसके देश और धन पर भी अधिकार कर लिया। अहमद की इस प्रशंसा की सत्यता बहुत कुछ इतिहास से प्रमाणित होती है। उसको 'महीमण्डल मण्डन' इसलिए कहा गया है कि वह गुजरात के पहले बड़े सुलतानों में से था। उसने अपने राज्य को दृढ़ बनाया और अहमदाबाद शहर बसाया। यह आश्चर्य की बात है कि इस लेख में उसके अन्य महान कार्यों के साथ साथ नगर निर्माण के विषय में कुछ नहीं उल्लेख किया गया है, यद्यपि २० वें पद्य में इस नगर का नाम प्रसंगवश आ गया है।

जैसा कि हमें मुसलमान इतिहासकारों से ज्ञात होता है अहमद मालवा के अधिपति हुशंगशाह की आँखों में खटकता था। सन १४११ व १४१८ ई० में दो बार हुशंगशाह ने गुजरात पर आक्रमण* किये परन्तु अहमद ने दोनों बार उसे पीछे हटा दिया। इतना ही नहीं, १४१९† ई० में उसने स्वयं मालवा पर चढ़ाई की और हुशंग को हार कर मांडू के गढ़ में शरण लेनी पड़ी। इसके बाद १४२० ई० में जब हुशंगशाह उड़ीसा पर चढ़ाई करने गया हुआ था तो अहमद ने फिर मालवा पर आक्रमण किया परन्तु मांडू पर अधिकार करने में सफल नहीं हुआ।‡ अहमदशाह के इन हमलों का कोई विशेष फल न निकला। उसने केवल मालवा प्रान्त को लूट और बरबाद कर दिया परन्तु उसे अपने राज्य में न मिला सका। प्रस्तुत शिलालेख में उल्लिखित मालवा का पतन करना ऐतिहासिक आधारों पर सिद्ध नहीं होता है।¶

* ब्रिग-फ़िर० ४, पृ० १६–१८ [illegible] पृ० [illegible] फ़िर० ३ पृ० २६६।

† ब्रिग-फ़िर० ४ पृ० [illegible]

‡ ब्रिग-पृ० [illegible]

¶ 'अपार महम्मद के [illegible]' [illegible]

विवरण के लिए देखिए—ब्रिग-फ़िर० ४ पृ० १३ [illegible] पृ० १८ १७ १६, २१, [illegible] पृ० १८८ [illegible] फ़िर० [illegible] पृ० २६६–६६।

यह भी विचारणीय है कि इस लेख में अहमद की दूसरी चढ़ाइयों* का कोई उल्लेख नहीं है, विशेषतः गिरनार के चूड़ासमा राजा, खानदेश के नासिर और चांपानेर के राजा पर, जिनको उसने १४२२ ई० में अपने आधीन कर लिया था। दक्षिण के बहमनी राजा अलाउद्दीन अहमद के विजय में भी इसमें कोई उल्लेख नहीं है।

अहमद के पुत्र महम्मद के बारे में इस लेख में विशेष हाल नहीं लिखा है और यह ठीक भी है। यद्यपि ऐसा कहते हैं कि ईडर के राजा बीर (बैर), मेवाड़ के राणा कुम्भा और चम्पानेर के राजा गंगादास† पर उसने विजय प्राप्त की थी‡ परन्तु कुछ मुसलमान इतिहासकारों ने उसके विषय में लिखा है कि वह कायर था और जब मालवा के सुलतान महमूद ने उस पर हमला किया तो उसने पीठ दिखा दी थी। उसकी इस कायरता के फलस्वरूप ही कुछ अफसरों के बहकाने से उसकी स्त्री ने उसे विष दे दिया था।¶ उसका एक गुण यह था कि वह उदार§ बहुत था और इसीलिये मुसलमान लोग उसे 'करीम' कहते थे।||

महम्मद के बाद तुरन्त ही महमूद से हमारा परिचय होता है। जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है उसके दो पूर्वाधिकारियों के नाम छोड़ दिये गये हैं। महमूद का नाम महमूद बेगड़ा (गुजराती बेगड़ो) अधिक प्रसिद्ध है। प्रस्तुत शिलालेख में उसको वीर योद्धा** लिखा है और आगे चल कर ग्यासुद्दीन का उल्लेख है। यह स्पष्ट नहीं है कि इस उपाधि का प्रयोग महमूद के लिए किया गया है अथवा उसके कुल में उत्पन्न किसी अन्य व्यक्ति के लिए। यदि इसका प्रयोग महमूद के लिए किया गया है तो यह बात कुछ विचित्र सी जान पड़ती है क्योंकि इस उपाधि का अर्थ है (गियास-उद्दीन) धर्म का सहायक, और सिक्कों†† और लेखों‡‡ में उसके लिए नासिरुद्दीन या उद्दुनिया अर्थात् 'धर्म और जगत् का रक्षक' लिखा है। अहमद प्रथम के पुत्र मुहम्मद द्वितीय को उसके सिक्कों में गियासउद्दीन लिखा है।¶¶

* देखिए—कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया, जि० ३, पृ० [illegible]

† देखिए [illegible]

‡ [illegible] जि० ३ पृ० [illegible]; ब्रिग–जि० ४, पृ० ३५; [illegible]–पृ० [illegible]

¶ ब्रिग–[illegible]

§ [illegible]

[illegible]

** [illegible]

†† [illegible], पृ० [illegible]

‡‡ [illegible], पृ० [illegible]

¶¶ [illegible]

जिन पंक्तियों में उसके युद्धों का वर्णन किया गया है वे दुर्भाग्य से कई जगह खण्डित हो गई हैं, अतः इन सब घटनाओं का ठीक-ठीक पता लगाना कठिन है। आठवें पद में दक्षिण विद्रूपति और दम्मण के अधिपति के साथ महमूद के सम्बन्धों का वर्णन है (?) रैवत तथ पर्व्वो पर अधिकार (?) का भी जिक्र है। (पद ७) पूर्व भाग में माण्डू के महमूद खिलजी द्वारा १४६२ और १४६३ ई० में* दक्षिण विद्रूपति निजाम शाह पर चढ़ाई करने के अवसर पर महमूद ने जो सहायता की थी उसका उल्लेख किया गया प्रतीत होता है और अपर भाग में दम्मण के पास पारडी में राजा द्वारा १४६४ ई०† में किए गए आत्म-समर्पण की ओर संकेत है।

रैवत अर्थात् जूनागढ़ में गिरनार पर्वत का उल्लेख करने से महमूद द्वारा १४६६ ई० में उस राज्य पर किए पहले हमले से तात्पर्य है। उस समय वहाँ के राजा मण्डलीक से महमूद ने कर वसूल किया था और उसे राजचिह्न छोड़ने को बाध्य किया था।‡ अगले पद में लिखा है कि महमूद ने उस दुर्जेय जूना (जीर्ण) गढ़ को विजय किया और उसकी कीर्ति को चिरस्थायी करने के लिये रैवताचल पर विजय स्तम्भ बनाया गया। इसमें जूनागढ़ के किले को पूर्णतया जीत कर दिसम्बर १४७० ई०¶ में सोरठ को गुजरात में सम्मिलित कर लेने की ओर लक्ष्य किया गया है। मुसलमान इतिहासकारों का कहना है कि गिरनार के राजा को फिर आत्म-समर्पण करने के लिए दबाया गया तब उसने इस्लाम धर्म को अंगीकार कर लिया और उसको 'खान-ए-जहान्' की उपाधि प्रदान की गई। पहाड़ी की तलहटी में महमूद ने मुस्तफाबाद नामक नगर बसाया और वह नगर भी उसकी राजधानियों में से एक था—साथ ही, वह उसके ठहरने का एक मनचाहा स्थान भी था।§

* कै० हि० इ०, जि० ३, पृ० ३०४-०५, बिग्स पृ० ४६-५१, फरिश्ता पृ० ६०-६२, बर्ड ने पृ० २०६ पर एक ही लड़ाई का हाल १४६१-६२ दिया है। कॉम पृ० १७

† कै० हि० इ०, जि० ३ पृ० ३०५, यहाँ न इसका कोई उल्लेख नहीं किया है, बिग्स ने पृ० ५१ पर दम्मण का तो उल्लेख नहीं किया है परन्तु १४६४ ई० में सुलतान के बावर की चढ़ाई का वर्णन अवश्य किया है। फरिश्ता ने पृ० ६२ पर बावर पर्वत पर चढ़ाई और एक पहाड़ी किले की विजय का उल्लेख किया है। कॉम में पृ० १८ पर (Bardu) बरडू विजय का हाल लिखा है। यह सब पहाड़ पर स्थित हैं जो दम्मण के सामने दिखती हुई हैं।

‡ कै० हि० इ०, जि० ३, पृ० ३०५, बिग्स के अनुसार पहला हमला १४६९ ई० में हुआ पृ० ५२, फरिश्ता (पृ० ५३-५४) और बर्ड इस हमले को १४६७ ई० के आस पास हुआ बताते हैं। कॉम—पृ० १०

¶ कै० हि० इ०, जि० ३, पृ० ३०५-०६, पृ० ५५ पृ० ६७ और पृ० ००१ पर १४७२ लिखा है।

§ कै० हि० इ०, पृ० ३०६-०७, पृ० ५६, ५७ २०६, ७० ७५, ७६ कमस

पद्य संख्या १०–१२ में बताया गया है कि महमूद ने चम्पक (पद ?) अर्थात् चाँपान (चाँपानेर) को ले लिया, पावक* (पावागढ़) को जीत कर वहाँ के शासक को पीड़ित करके लिया और उस नगर पर राज्य करने लगा। यहाँ चम्पानेर और इसके किले पावागढ़ पर अंतिम विजय से सम्बन्ध में कुछ मुख्य घटनाओं का पता चलता है। मालवा और गुजरात के बीच में चाँपानेर एक 'राजनैतिक स्थिति' का राज्य था। यहाँ के शासक चौहान शाखा के राजपूत थे और गुजरात के पास यही एकमात्र हिन्दू राज्य था। इसलिए जब कभी मालवा के शासक को गुजरात पर आक्रमण करना होता तो वह पहले चाँपानेर के राजा को सहायता था अथवा यदि उसी को कोई आपत्ति होती तो वह स्वयं गुजरात प्रदेश में लूट मार करके वहाँ के सुल्तानों को तंग किया करता था। इस प्रकार, इस राजा और गुजरात के सुल्तानों में प्रायः छुटपुट की लड़ाइयाँ और कभी-कभी बड़ी लड़ाइयाँ होती ही रहती थीं परन्तु महमूद से पहले कोई भी सुल्तान पावागढ़ को जीत कर वहाँ के राजा को वश में नहीं कर सका था।

उस समय सम्भवतः जयसिंह चाँपानेर† का राजा था और महमूद उसके विद्रोह-पूर्ण कार्यों को भली तरह जानता था परन्तु बहुत समय तक उसके राज्य पर आक्रमण

* जयसिंह का वि० सं० १५२५ का एक शिलालेख, इण्डियन एन्टीक्वेरी, जि० ६ पृ० २, [illegible] जि० १ पृ० ३५७ ([illegible]); बाम्बे गजेटियर, जि० ३ पृ० ३०८, [illegible], जि० ४ पृ० ५६। आजकल इसके [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] है।

† वि० सं० १५२५ के शिलालेखानुसार जयसिंह उस समय पावागढ़ पर राज्य करता था और सम्भवतः महमूद के हमले तक भी वही राज्य कर रहा था। प्रस्तुत शिलालेख के २१ वें पद्य में जिस जयसिंह का नाम आता है वह वास्तव में जयसिंह ही है क्योंकि 'तारीखे फरिश्ता' (ब्रिग्ज द्वारा सम्पादित पृ० ६१२) और 'मीराते सिकन्दरी' (बेले पृ० ७४) में भी लिखा है कि चाँपानेर के राजा 'जयसिंह' को महमूद ने हराया था। इन नामों में सरल समानता है। इसके अतिरिक्त लेख में दिए हुए चाँपानेर के राजाओं के नाम मुसलमान इतिहासकारों द्वारा दिए हुए नामों से मिलते हैं। यथा—

जयसिंह के १५२५ वि. सं. का लेख	मुसलमान इतिहासकार
(१) [illegible]	(१) [illegible] (तारीखे फरिश्ता) जो महमूद I, अहमदशाह का समकालीन था।
(२) त्र्यम्बक भूप	(२) त्रिम्बक दास (मीराते सिकन्दरी पृ० १०५) जो भी अहमदशाह का समकालीन था।
(३) गंगराजेश्वर	(३) गंगदास (मीराते सिकन्दरी पृ० ५८ व ३०) जो कुतुबुद्दीन का समकालीन था

करने का कोई अवसर नहीं मिला। निदान, १४८२ ई० में जब चांपानेर के एक पताई* द्वारा पड़ोसी प्रदेश का सूबेदार मलिक सूद मारा गया तो उसे मौका मिल गया। उसके [illegible] कार्य से नाराज होकर महमूद ने चांपानेर पर चढ़ाई की और उस पर अधिकार करके वहाँ एक मस्जिद बनवाई। पताई ने पावागढ़ में शरण ली और महमूद ने उस किले को घेर लिया। यह घेरा २१ महीनों तक चला और अन्त में पावागढ़ के किले पर हमला बोल दिया गया। हताश होकर राजपूतों ने (जो अब बहुत थोड़े रह गये थे) स्त्रियों को जीवित जला कर जौहर पूर्ण किया और मरणपर्यन्त मुसलमानों से अन्तिम युद्ध करने के लिये मैदान में आ गए। (इसका उल्लेख शिलालेख में किया गया मालूम होता है) कहते हैं कि और सब राजपूत मारे गये परन्तु रावल पताई और उसका एक मन्त्री डूंगरसी जीवित पकड़े गए। महमूद उनके साहस और वीरतापूर्ण युद्ध करने पर बहुत प्रसन्न हुआ और जब उनके घाव ठीक हो गए तो उन्हें इस्लाम धर्म अंगीकार करने के लिये कहा। जब वे इनकार हो गए तो उन्हें बंद कर दिया गया और फिर सोचने के लिए समय दिया गया। जब उन्होंने फिर सुलतान के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया और मुसलमान न होने का दृढ़ निश्चय प्रकट किया तो पाँच* महीने बाद उनको फाँसी दे दी गई। इसके बाद महमूद ने महमूदाबाद नगर बसाया और इसके चारों तरफ एक किला बनाया जो जहाँपनाह कहलाया।

१३-१४ पद्यों का तात्पर्य यह है कि इस नए जीते हुए प्रदेश पर शासन करने के लिए इमादुल को नियुक्त किया गया।

आगे के कुछ पद्यों में मलिक इमादुल द्वारा पल्लिदेश की विजय और वहाँ पर एक गढ़ी निर्माण कराने का वर्णन है। इमादुल की आज्ञा से बने हुए इसी किले व वहाँ पर खुदवाए हुए दो तालाबों का उल्लेख १६ वें पद्य में किया गया प्रतीत होता है। जैसा कि पहले बताया गया है, यह पल्लिदेश गोधरा जिले का ही कुछ भाग था न कि राजपूताने का वह जिला जो इस नाम से प्रसिद्ध है।

पद्य संख्या २० में एक कुएं का वर्णन है जो, स्पष्ट है कि, इमादुल द्वारा अहमदपुर में खुदवाया गया था। यहाँ अहमदपुर से अहमदाबाद का तात्पर्य है न कि अहमदनगर का।

* दूसरे इतिहासकारों (जैन फरिश्ता, ब्रिग्स पृ० ६६) ने उसे 'बेनीराय' लिखा है; फरीदी (पृ० ६५-६७) ने रावल पताई कहा (पृ० २१२) न रावल दुर्गा, और बेले ने 'लोकल महमेडन डाइनेस्टीज़ गुजरात' (१८८६ पृ० २११) [illegible] 'राव पताई' लिखा है। इससे विदित होता है कि दूसरे 'चौहान' अथवा 'चौहान' वंश के राजाओं की तरह चांपानेर के राजा भी 'रावल' कहलाते थे। वाटसन (इंडि० एन्टि०, जि० ६, पृ० २) का यह अनुमान ठीक है कि 'पताई' जयसिंह का उपनाम था।

* बे० हि० इ०, जि० ३, पृ० ३०६-१०, फरीदी, पृ० ६६-६७ फरिश्ता जि० ४, पृ० ६६-७०; टॉड, पृ० २३-३१

इक्कीसवें पद्य में लिखा है कि इमादुल ने महमूदशाह की आज्ञा से [चम्पक पुर (चाँपानेर ?)] में एक सुदृढ़ दुर्ग और बावड़ी बनवाई। यहाँ दुर्ग से तात्पर्य चाँपानेर के चारों ओर की उस चारदीवारी और विशेष परकोटे से है जिसको बनवाने के लिए महमूद ने आज्ञा दी थी।*

पद्य सं० २२–२५ में पावकाधिपति का वर्णन है जिसका नाम जयसिंह था (पद्य २२)। इमादुल ने उसकी सेना को पूर्णतः पराजित कर दिया था। तेईसवें पद्य में [illegible] का उल्लेख है। [illegible] (राजा) का दुर्ग सम्भवतः [illegible] (जयसिंह) कहा जाता था। चौबीसवें पद्य में किसी किले पर विजय प्राप्त करने का वर्णन है। यहाँ पर यह स्पष्ट नहीं है कि ये सब पद्य पावागढ़ के राजा ही के विषय में हैं जिसका नाम जयसिंह था और जिसको पावागढ़ के शिलालेख का जयसिंहदेव बताया जाता [illegible] इस पावकाधिपति जयसिंह के विषय में जो पावागढ़ के राजा से भिन्न व्यक्ति था। [illegible] पद्य को मान लेने के लिए पद्य २३ में प्रयुक्त 'शिखिनगर' शब्द ही कारण है। सम्भव है पावागढ़ को ही 'शिखिनगर' कहा गया हो। क्योंकि इसे अब तक कोई भी मुसलमान सुलतान [illegible] नहीं कर सका था। फिर, यही एक ऐसा हिन्दू राज्य था जो अब तक [illegible] हुआ था। इस वर्णन से भी कोई [illegible] नहीं है कि [illegible] विजय का [illegible] किया गया है और फिर नहीं लिया गया क्योंकि २४ वें पद्य में फिर 'पावक' [illegible] की हुई। यह प्रश्न तब तक ठीक-ठीक हल नहीं हो सकता जब तक कि [illegible] न किया जाये। शायद यह [illegible] का दूसरा नाम हो जिस पर पावागढ़ का राजा [illegible] रखता था। सम्भव है, पावागढ़ के प्रदेश [illegible] से भिन्न नाम [illegible] हो [illegible] 'लालवाल' हो जो गुजरात और [illegible] के बीच [illegible] महमूद [illegible] नियन्त्रण था। मुसलमान लेखकों द्वारा [illegible] का कहीं उल्लेख नहीं किया गया है।

छब्बीसवें पद्य में, जो ठीक-ठीक नहीं पढ़ा जा सकता है, दधिपद्र (आधुनिक दोहद) के [illegible] का उल्लेख है। यह किला इमादुल मुल्क द्वारा [illegible] सम्वत् [illegible] विक्रम

* [illegible], पृ० [illegible], [illegible] (नागरी [illegible]) [illegible] 'बावड़ी' [illegible] [illegible] [illegible] pl. 25, Beley (बेले) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], पृ० १६०

† [illegible] (इमाद मुल्क [illegible]) [illegible] [illegible] है।

सम्वत् १५४५ में बनवाया गया था। इक्कीसवीं पंक्ति में इमादुल मलिक द्वारा किसी खास दिन जीर्णोद्धार कराए जाने का उल्लेख है। यह तिथि और दिन अब नहीं पढ़े जा सके हैं।

इस (२६ वें) पद्य में हमें एक नई ही सूचना मिलती है। किसी भी मुसलमान इतिहासकार ने, दधिपद्र (दोहाद) के दुर्ग के निर्माण अथवा जीर्णोद्धार का श्रेय महमूद अथवा उसके साथियों को जिनके कार्यों का विस्तृत वर्णन मीराते सिकन्दरी* में मिलता है, नहीं दिया है।

इस शिलालेख में महमूद की १४९० ई० (जब यह उत्कीर्ण हुआ था) तक की सभी महत्वपूर्ण विजयों का उल्लेख है परन्तु इसमें सिन्ध, जगत और द्वारा (द्वारका) के हमलों को छोड़ दिया है जो क्रमशः १४७२ और १४७३ ई० में हुए थे।†

लेख की ११, १३, १५–१७, २० और २१ वीं पंक्तियों में क्रमशः (१) इमादल (२) इमादल मलिक (३) 'खोर' इमादल, (४) इमादुल मुल्क और (५) इमादुल मलिक नामक व्यक्ति के कार्यों का उल्लेख है।

पहली (११वीं) पंक्ति का सन्दर्भ स्पष्ट नहीं है। (इससे) ऐसा प्रतीत होता है कि उसे (इमादल को) 'देश रक्षा', (सम्भवतः नये जीते हुए चांपानेर राज्य की रक्षा) के लिए नियुक्त किया गया था। दूसरी (१३ वीं) पंक्ति के अनुसार मलिक इमादल ने पलिसदेश को जीत कर वहां एक किला बनवाया था। तीसरे, उसने चम्पकपुर में एक किला बनाया था। और चौथे इमादुल मुल्क ने दधिपद्र दुर्ग के सम्बन्ध में एक दान दिया और अन्त में मलिक इमादल ने अपने अधीनस्थ उसी दुर्ग का (?) जीर्णोद्धार कराया (गलिकि ?)

क्रमशः देखने से ये सब कार्य एक ही व्यक्ति इमादुल मुल्क द्वारा सम्पन्न हुए जान पड़ते हैं‡। प्रस्तुत शिलालेख में इन कार्यों का वर्णन 'देश रक्षा' पर नियुक्ति से लेकर सम्वत् १५४५ में दधिपद्र दुर्ग के जीर्णोद्धार तक तिथि क्रमानुसार लिखा गया है।

यह इमादल मुल्क और इमादुलमुल्क‡ एक ही हो सकता है जो कि प्रधान मन्त्री के समकक्ष ही एक पद होता था। महमूद के समय में इस तरह के तीन¶ इमादुल-मुल्क हुए (१) इमादुल मुल्क शा' बान, (२) इमादुल मुल्क हाजी सुल्तानी और (३) उसका पुत्र बूद। पहले इमादुलमुल्क ने महमूद की उस षड्यन्त्र के विरुद्ध सहायता की जो उसके तख्त पर बैठने समय हुआ था। बूद वह व्यक्ति था जिसकी सहायता से महमूद ने चांपानेर आदि स्थानों पर विजय प्राप्त की और दधिपद्र (दोहाद) का किला बनवाया

* देखिये—फरीदी पृ० ७८ ८८, बेले पृ० २३८ इतिहासकारों ने इमादुल-मुल्क मलिक आईन का नाम लिया है जिसने आईनपुर बसाया। यह अहमदाबाद का बड़ा सुन्दर कस्बा है। परन्तु दधिपद्र और दोहाद एक है अतः इस सूचना से विरोध नहीं बनता है।

† कै० हि० इ०, जि० २, पृ० ३०६-०७

‡ प्रिन्स ऑफ वेल्स म्यूज़ियम के श्री आनी के मतानुसार।

¶ कै० हि० इ०, जि० ३, पृ० ३०४ व ३०१

तथा उसका जीर्णोद्धार कराया क्योंकि उसका पिता [illegible] सुल्तानी चांपानेर की चढ़ाई*
के पहले ही बन चुका था ।

इस शिलालेख में अहमदपुर, चम्पक (गढ़), मुहम्मदपुर, दधिपद्र नामक स्थानों, गुर्जर, मालवा, दक्खन और [illegible] के अधिपतियों; पावक और जोगे (?) दुर्गों तथा [illegible] पर्वत के नाम आये हैं ।

जिस प्रसंग में अहमदपुर का नाम आया है वह स्पष्ट नहीं है । अधिक सम्भव यही है कि इससे अहमदाबाद ही का तात्पर्य है जिसको अहमदशाह ने प्राचीन नगर आशावल† के स्थान पर बसाया था । वहाँ पर उसी के बसाये हुए अहमदनगर‡ का प्रसंग [illegible] और यही देखा कि महमूद द्वारा वहाँ पर बनवाई हुई किसी भी इमारत का उल्लेख नहीं मिलता है; जब कि अहमदाबाद में उसने चांपानेर विजय करने के बाद ही [illegible]¶ [illegible] बुर्जें बनवाई थीं ।

चम्पक (गढ़) अथवा मुहम्मदपुर ही आधुनिक चांपानेर है जिसके प्राचीन गौरव का इतिहासकारों ने§ बखान किया है । महमूद की बनवाई हुई कितनी ही इमारतों के भग्नावशेष अब भी चांपानेर में मौजूद हैं । इनमें से गढ़ (राज प्रासाद) का परकोटा, बुर्जें, दरवाजे, [illegible] के थाने, मस्जिदें और कब्रें मुख्य हैं । सबसे बड़ी जामा मस्जिद है।||

दधिपद्र और दोहद एक ही हैं । इसका शब्दार्थ है 'दधि पर बसा हुआ पद्र (गांव)।' दधि से तात्पर्य है दूधमती नदी जिसके किनारे आजकल दोहद** बसा हुआ है ।

* [illegible] जि० १, पृ० ३०९

† ई० हि० ग०, जि० ३, पृ० ३००

‡ वही, पृ० ११०

¶ ई० हि० ग०, जि० ३, पृ० ३१२; जि० ४, पृ० ३०

§ [illegible] जि० ६, पृ० [illegible]

|| इन [illegible] इमारतों के लिए देखिए—आर्कियोलॉजिकल सर्वे, [illegible], भाग ६, पृ० ४१ (Arch. Surv. West India. Vol. VI, P. 41 and Pls. LVI, LVIII, LXI, and XIV; and C. H. I. Vol. III, 612-13 and Pl. XXV और ई० हि० ग० भा ३, पृ० ६१२-१३

** [illegible] दधिपुर [illegible] । [illegible] नाम दधिम [illegible] दधिपद्र नाम ही [illegible] पुरातनता बताने के लिए [illegible] ।

[[illegible] 'दोहद' [illegible] 'दधिपद्र' [illegible] [illegible] 'दोहद' [illegible] और [illegible]

दोहद से प्राप्त हुए जयसिंह और कुमारपाल के समय के शिलालेखों* में भी दधिपद्र शब्द का प्रयोग मिलता है।

मुसलमान इतिहासकार दोहद में दुर्ग निर्माण के जिस प्रश्न को पूर्णतया हल नहीं कर सके थे वह प्रस्तुत शिलालेख से हल हो जाता है। उदाहरणार्थ, मीराते अहमदी के लेखक ने एक जगह† लिखा है कि दोहद की चहारदिवारी को अहमदशाह ने तैयार किया बनवाया, दूसरी जगह‡ इसके बनवाने का श्रेय मुजफ्फर (द्वितीय) को दिया गया है। परन्तु, मीरात-ए-सिकन्दरी के कर्ता का अभिप्राय है कि दमोह और दोहद एक ही स्थान के नाम हैं और दोहद का किला महमूद (प्रथम)* ने बनवाया तथा मुजफ्फर ने मालवा जाते हुए १५१८† ई० में इसका जीर्णोद्धार कराया।

हमारे शिलालेख के प्रमाण से ज्ञात होता है कि दधिपद्र में किला तो पहले ही मौजूद‡ था परन्तु वह टूटी-फूटी दशा में था। इसका जीर्णोद्धार¶ महमूद (प्रथम) के समय में मलिक इमादुल ने कराया। सम्भवतः यह किला महमूद (प्रथम) का ही बनवाया हुआ था, जैसा कि ऊपर बताया गया है।

हम ऊपर लिख चुके हैं कि बालूका या तो फरिश्ता§ द्वारा उल्लिखित 'बागलान' है अथवा अबुल फजल|| व अन्य ग्रन्थ कर्ताओं के मतानुसार "बागलाण" है। फरिश्ता का कहना है कि यह 'गुजरात' के पास का प्रदेश है, दूसरे लोगों का मत है कि यह गुजरात और दक्खन के बीच का पहाड़ी और इसी आकार का प्रदेश था। आजकल के नासिक जिले** का एक भाग जो बागलान कहलाता है वह इस वर्णन से मिलता है। मुसलमान इतिहासकारों के मतानुसार इस स्थान के शासक राष्ट्रकूट वंश के थे। ये लोग और कन्नौज†† के राठौड़ एक ही थे। इन लोगों की वंशपरम्परागत उपाधि 'बहर्जी' थी जो

* इण्डियन एण्टिक्वेरी जि० १० पृ० १५९

† वही पृ० १६०

‡ वही, पृ० २२३

* 'दोहद का एक भाग का कोट [illegible] जो [illegible] के बीच में था'। फरीदी, पृ० १७

† फरीदी पृ० १९

‡ [illegible] पृ० ११

¶ उद्धरण पृ० २१

§ ब्रिग्स, जि० ४, पृ० १९ व २०

|| आईन-ए-अकबरी (जैरेट), जि० ३, पृ० ७१। इस का उल्लेख गजेटियर, Bombay Gaz. Vol. XVI p. 188 Vol. VII, p. 69 and 159 में किया गया है।

** Bombay Gaz. Vol. XVI p. 399

†† [illegible] द्वारा उल्लिखित [illegible] (गुजरात का इतिहास) पृ० १२२-इसका यह कथन विश्वसनीय नहीं है कि [illegible] के [illegible] [illegible] के बदले के था।

[illegible] [illegible]* के [illegible] कन्नौज के राजवंश की उत्पत्ति 'बड़राह' से मिलती है। इन लोगों का कहना है कि इस प्रदेश में सात दुर्ग थे जिनमें से मुल्हेर और सालेर के किले [illegible] हुए थे।

[illegible] में [illegible] दक्षिण और गुजरात के समुद्री किनारे पर चौल का स्थान रहा है। तेरहवीं शताब्दी के अन्त में गुजरात के अन्तिम हिन्दू शासक कर्ण ने यहाँ पर शरण ली थी। इसके बाद भी यह स्थान गुजरात के और दक्षिण के सुलतानों के बीच लड़ाई का कारण रहा है। कभी इस पर एक का अधिकार होता था तो कभी दूसरे का, और कभी कभी यह दोनों ही के अधिकार से निकल कर स्वतन्त्र हो जाता था। प्रस्तुत शिलालेख में भी गुजरात के सुलतानों की किसी ऐसी ही विजय से अभिप्राय है जिसका मुसलमान इतिहासकारों ने उल्लेख नहीं किया है। यह विजय उन्होंने [illegible] के [illegible] मलिक [illegible] और मलिक [illegible] को १४८७ ई० की [illegible] से [illegible] प्राप्त की होगी।

[illegible] के विषय में अवश्य स्पष्ट नहीं है परन्तु इतना अवश्य विदित होता है कि इस नाम से देश में [illegible] ने एक किला बनवाया था। आजकल के [illegible] तालुका में एक स्थान है जो पारी कहलाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस प्रदेश के प्राचीन नाम [illegible] के आधार पर ही इस स्थान का यह नाम चला आ रहा हो। शिलालेख में वर्णित [illegible] को [illegible]§ का प्रसिद्ध किला पारी मानने के लिए प्रसङ्ग की संगति ठीक नहीं बैठती है क्योंकि [illegible] विजय करते समय महमूद ने उसी भूभाग पर अधिकार किया होगा जो आजकल [illegible] तालुका के अन्तर्गत है और जो उस समय [illegible] के नाम से प्रसिद्ध था। [illegible] में महमूद ने कोई विजय प्राप्त नहीं की। हाँ, [illegible] और [illegible] के [illegible] को [illegible] करने के लिये [illegible] के [illegible] और [illegible] किलों पर आक्रमण करने का उसने [illegible] आदेश दिया था। इस [illegible] का कार्य [illegible]-

* [illegible] भा० १०, पृ० १८४ [illegible] में [illegible] है।

† [illegible] है। ([illegible], भा० १६, पृ० [illegible]) [illegible] प्रदेश [illegible] है।

‡ [illegible], पृ० १८

¶ [illegible] है।

§ [illegible], पृ० [illegible], पृ० [illegible]

मुल्क और ऐसरजा के आधीन किया गया था। परन्तु, इसमें सन्देह है कि यह हमला कभी हुआ भी था या नहीं। इसके विपरीत यह कहा जाता है कि महमूद के अधिकार में गोधरा नाम का एक अलग ही प्रान्त था जिसका सूबेदार कुवाम-उल-मुल्क था*। कुछ भी हो, इस (पञ्चमी) देश में दुर्ग-निर्माण का प्रश्न इस स्थान पर हल नहीं हो सकता है।

पावकदुर्ग (१६) ही पावागढ़ का पहाड़ी किला है जो बम्बई प्रान्त के पंचमहाल जिले में गोधरा से २५ मील दक्षिण में और सड़क द्वारा बड़ोदा† से २६ मील पूर्व में स्थित है। यहां के शासकों के एक शिलालेख में इसका नाम पावागढ़ भी दिया है।‡

महमूद से पहले अहमदशाह और उसके पुत्र महम्मदशाह ने इस दुर्ग को लेने के लिए प्रयत्न किये थे परन्तु वे सफल नहीं हुए। एक लम्बे घेरे के बाद १४८४ ई० के नवम्बर मास में इस किले पर हमला करने और इसके दरवाजे तोड़ देने में सफलता मिली। कहते हैं कि पहाड़ी पर अधिकार प्राप्त करने के बाद महमूद ने ऊपर और नीचे के दोनों किलों¶ में रक्षकों के दल को और भी मजबूत कर दिया और यहां पर महमूदाबाद नामक शहर बसाया जो महमूदाबाद चांपानेर§ भी कहलाता था। प्रस्तुत शिलालेख में इन बातों की ओर इतना ही कह कर लक्ष्य किया है कि महमूद ने उस देश पर राज्य किया।

जीर्ण (दुर्ग) से आधुनिक जूनागढ़ का अभिप्राय नहीं है बल्कि यहां पर बनाये गये किलों में से एक का है जिनका हाल मुसलमान इतिहासकारों ने लिखा है और दूसरे शिलालेखों में भी जिनका उल्लेख मिलता है। उक्त आधारों से विदित होता है कि १५वीं शताब्दी में यहां पर दो किले|| और एक शहर था। शहर का नाम सम्भवतः गिरिनगर** था जैसा कि इससे पूर्व क्रमशः दूसरी†† और आठवीं‡‡ शताब्दियों में मिलता है। शहर का किला जो दामोदर घाट¶¶ के किनारे पर गिरनार (रैवत पर्वत) की ढाल पर बना

* ब्रिग्ज, पृ० ६२

† बाम्बे गजेटियर, जि० ३, पृ० १८५ नो० १

‡ वही, पृ० २१७ नो० ३,४

¶ पावागढ़ की पहाड़ी और किले का नक्शा देखिये, बाम्बे गजे०, जि०३, पृ० १६६,

§ फरिश्ता, जि० ४, पृ० ७, बर्ड, पृ० २१७, फरीदी, पृ० ६७, ऐ० हि० इ०, जि० ३, पृ० ३१०

|| फरीदी, पृ० ५२, ५४, बर्ड पृ० २०८

** ब्रिग्ज (फरिश्ता), जि० ४, पृ० ५२, ५३ "महमूदशाह . गिरनार देश की ओर (चला) जिसकी राजधानी का भी यही नाम था।"

†† रुद्रदमन का शिलालेख, ब्रिग्ज, जि० ८, पृ० ४५

‡‡ जयभट्ट का दानपत्र (इण्डि० एण्टि०, भा० १३ पृ० ७८ पंक्ति १६)

¶¶ ब्रिग्ज, जि० ४, पृ० ५३

हुआ है जीर्णदुर्ग,* सिलकोट† अथवा जूनागढ़‡ कहलाता था। इसीको शायद आजकल उपरकोट¶ कहते हैं। वास्तव में, यह परकोटे से घिरा हुआ राजमहल था। यह मुगलों की गढ़ियों जैसा था और सम्भवतः इसको गिरनार के चूड़ासमा राजाओं ने बनवाया था। दूसरा किला पहाड़ के ऊपर बना हुआ था§ और अब उसके कोई भी चिह्न अवशिष्ट नहीं हैं। इस पर्वत का प्राचीन नाम रैवत अथवा ऊर्जयन्त (उज्जयन्त) से बदल कर गिरिनगर के आधार पर गिरनार होना और शहर का नाम जीर्णदुर्ग अथवा जूनागढ़ में बदल जाना सम्भवतः १५ वीं शताब्दी के बाद की बात है।

रैवतक गिरनार पर्वत का ही दूसरा नाम प्रतीत होता है। इसी स्थान पर मिले हुए एक शिलालेख में इस पर्वत का नाम ऊर्जयत‖ लिखा है। स्कन्दगुप्त** के लेख में ये दोनों ही नाम मिलते हैं। फ्लीट साहब का मत है कि गिरनार की दो पहाड़ियों में से एक का नाम रैवतक है न कि समस्त गिरनार†† ही का। इसके बाद १२०० ई० तक का कोई शिलालेख सम्बन्धी प्रमाण अबतक‡‡ प्राप्त नहीं हुआ है। इसके बाद के शिलालेखों में रैवत

* [illegible] वि० सं० १४४५ (भावनगर् [illegible] [illegible], पृ० [illegible], [illegible], परिशिष्ट पृ० १०३ [illegible] [illegible], भा० १५, पृ० [illegible], [illegible] भा० १६, [illegible] पृ० ६८

† भावनगर [illegible], पृ० ३६१ [illegible] पंक्ति ६

‡ [illegible], पृ० ५३

¶ [illegible] [illegible] अथवा [illegible] [illegible] [illegible] (आर्कियालॉजिकल सर्वे [illegible] इण्डिया, भा० [illegible], पृ० १५)

§ [illegible] ([illegible], पृ० [illegible]) "[illegible]......[illegible]"।

‖ [illegible] ([illegible], पृ० [illegible])

** [illegible], भा० ३, पृ० [illegible]

†† [illegible] गिरनार [illegible]।" [illegible] ([illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ई० [illegible] [illegible] [illegible]

‡‡ [illegible] पृ० [illegible]

और उज्जयन्त‡ पर्वत को एक ही बताया गया है। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि पूर्व समय में गिरनार की दो भिन्न-भिन्न पहाड़ियों के नाम रैवत और उज्जयन्त थे परन्तु बाद में वे एक ही पर्वत¶ के नाम हो गए। अतः प्रस्तुत शिलालेख में उल्लिखित रैवतक से उस पर्वत का अभिप्राय है कि जिस पर मन्दिर आदि बने हुए हैं और जो गिरनार के नाम से प्रसिद्ध है।

‡ देखो नेमीनाथ के मन्दिर से प्राप्त लेख सं० १४ (रिवाइज्ड लिस्ट बाम्बे प्रसि०, पृ० ३५५) और मन्तदेव का धोल्काड का लेख पृ० २५०। माण्डलिक राजा के एक लेख में दोनों नाम हैं परन्तु यह स्पष्ट नहीं है कि ये दोनों नाम एक ही के हैं अथवा भिन्न भिन्न पर्वतों के। (पृ० ३४७-४८)

¶ बाम्बे गजेटियर, भा० ८, पृ० ४४१ "जैन लोग कभी कभी गिरनार को ही रैवताचल कहते हैं, परन्तु यह गलत है।"

शिलालेख का पद्य विवरण

पद्य सं०	१, १०, २६	आर्या
"	३, ११, १२, १६ से १८, २०, २२, २३	अनुष्टुप्
"	५, ६	इन्द्रवज्रा
"	४, १३, १४, १५, २५	उपजाति
"	२	स्रग्धरा
"	७ से ९, १९, २१, २४	शार्दूलविक्रीडित

राजविनोद महाकाव्य में वर्णित प्रसिद्ध व्यक्तियों एवं स्थानों आदि की सूची